चिंतन

देर से सही, लेकिन देना ही पड़ा इस्तीफा

नोटकांड में फंसे इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा को देर से ही सही, लेकिन आखिरकार इस्तीफा देना ही पड़ा। यह केवल एक व्यक्ति का पद छोड़ना नहीं, बल्कि भारतीय न्यायपालिका की साख पर लगे एक गहरे दाग की स्वीकारोक्ति जैसा ही है। एक जज के घर से बोरियों में भारी मात्रा में नोटों का मिलना, वह भी आग लगने जैसी घटना के बाद, किसी साधारण अनियमितता का मामला नहीं हो सकता। यह सीधे-सीधे उस नैतिकता और शुचिता पर सवाल है, जिसकी उम्मीद न्यायाधीशों से की जाती है। होली 2025 की रात दिल्ली स्थित सरकारी आवास में आग लगने के बाद जले हुए नोटों की गड्डियां मिलने की घटना ने देश को चौंका दिया था। इसके बाद शुरू हुई जांच, ट्रांसफर, और न्यायिक कार्य से दूरी, ये सभी घटनाक्रम बताते हैं कि मामला कितना गंभीर था। दिल्ली हाईकोर्ट से इलाहाबाद हाईकोर्ट में स्थानांतरण भी कई सवाल छोड़ गया। क्या यह एक अस्थायी समाधान था या वास्तविक कार्रवाई से बचने का रास्ता? भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका को सबसे भरोसेमंद स्तंभ माना जाता है, लेकिन जब सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में हुई जांच के बाद भी इस तरह के आरोप सामने आते हैं, तो जनता का विश्वास डगमगाना स्वाभाविक है। न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, बल्कि होता हुआ दिखना भी चाहिए। इस मामले ने इसी बुनियादी सिद्धांत को चुनौती दी है। सबसे बड़ा सवाल जवाबदेही का है। क्या किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के लिए इस्तीफा ही पर्याप्त दंड है? या फिर इसके आगे आपराधिक जांच और सख्त कार्रवाई भी होनी चाहिए? संसद में महाभियोग की प्रक्रिया जरूर मौजूद है, लेकिन इसकी जटिलता और लंबाई इसे अक्सर अप्रभावी बना देती है। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि जस्टिस वर्मा ने आरोपों को साजिश बताया, जबकि सुप्रीम कोर्ट की कमेटी द्वारा करवाई गई जांच में उन्हें दोषी ठहराया गया। ऐसे विरोधाभासी दावों के बीच पारदर्शिता और निष्पक्षता की मांग और तेज हो जाती है। क्या जांच की पूरी रिपोर्ट सार्वजनिक की जानी चाहिए? क्या जनता को यह जानने का अधिकार नहीं है कि आखिर सच क्या है? इस पूरे घटनाक्रम ने न्यायपालिका के भीतर की इन-हाउस प्रणाली पर भी कई बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या यह प्रणाली इतनी सक्षम है कि वह अपने ही भीतर की गड़बड़ियों को निष्पक्षता से उजागर कर सके? या फिर इसमें बाहरी निगरानी की जरूरत है? यह समय इन सवालों से बचने का नहीं, बल्कि उनका सामना करने का है। देश में न्यायपालिका की ताकत उसकी नैतिक विश्वसनीयता में निहित होती है। अगर यही आधार कमजोर पड़ने लगे, तो पूरे लोकतांत्रिक ढांचे पर असर पड़ता है। इसलिए यह जरूरी है कि इस मामले को केवल एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना मानकर भुला न दिया जाए, बल्कि इसे एक चेतावनी के रूप में भी लिया जाए। अब जरूरत है न्यायपालिका में ठोस सुधारों की। जजों के लिए आचार संहिता को और कड़ा किया जाए, नियुक्ति और निगरानी प्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाया जाए और आरोप साबित होने पर त्वरित व सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। न्यायपालिका की स्वतंत्रता उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी उसकी जवाबदेही। अंततः, देर से ही सही लेकिन न्याय की जीत हुई है। चूंकि देर-सबेर जस्टिस वर्मा को इस्तीफा देना ही था। लेकिन यशवंत वर्मा का इस्तीफा एक अंत नहीं, बल्कि शुरुआत होना चाहिए एक ऐसे सुधार की, जो न्यायपालिका को और अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और भरोसेमंद बना सके। लोकतंत्र में न्याय का मंदिर तभी मजबूत रहेगा, जब उसकी नींव पूरी तरह निष्कलंक हो।

जयंती विशेष

नरेंद्र मोदी

ज्योतिराव फुलेः भारत के दिव्य पथ-प्रदर्शक

आज 11 अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जन्म-जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके 200वें जयंती वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है। महान समाज सुधारक महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। महात्मा फुले को केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ, लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से ही महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वो कहते भी थे, "हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।" साफ है कि बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही। महात्मा फुले के जीवन में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, "बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं।" उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बनाया। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी बहुत प्रेरित करता है।

पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए रिसर्च और इनोवेशन को बहुत प्राथमिकता दी है। एक ऐसा इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और इनोवेशन के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत अपने युवाओं को देश की प्रगति का आधार स्तंभ बना रहा है। अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है।

उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के

लिए भी हरसंभव प्रयास किए। महात्मा फुले ने कहा था, "जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिळत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिळत नाही" यानी जब तक समाज के सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना।

यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज की मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है। उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लगातार लोगों के बीच रहकर काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा। लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी। एक गंभीर स्ट्रोक के बाद भी उन्होंने अपना काम और समाज के लिए संघर्ष जारी रखा। उनका शरीर कमजोर हुआ, लेकिन समाज के प्रति उनका समर्पण कभी नहीं डगमगाया। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं। महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है।

वह स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वह स्वयं भी इस बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया। भारतभूमि बार-बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। सदियों से हमारे देश में समाज सुधार की आवाज उन्हीं लोगों से उठी है, जिन्होंने पीड़ा को भाग्य नहीं माना, बल्कि उसे खत्म करने के प्रयासों में जुटे रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे। मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने शहर में महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके 200वें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक तथा पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की 200वीं जयंती है। हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

विचार

राजेश अग्रवाल

साय के नेतृत्व में बस्तर बनेगा ग्लोबल टूरिज्म हब

कभी नक्सलवाद की चुनौतियों से जूझने वाला बस्तर अब शांति, विकास और पर्यटन की नई पहचान गढ़ रहा है। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा नक्सलवाद के खात्मे की घोषणा के बाद बस्तर में विकास की रफ्तार तेज हो गई है और अब यह क्षेत्र राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की ओर अग्रसर है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में हमारी सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा देकर एक ऐतिहासिक पहल की है, जिसके अंतर्गत होटल, इको-टूरिज्म, वेलनेस सेंटर और एडवेंचर स्पोर्ट्स जैसे क्षेत्रों में 45 प्रतिशत तक सब्सिडी एवं प्रोत्साहन पैकेज प्रदान किए जा रहे हैं। इससे निजी निवेश को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर सृजित हो रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में बस्तर को एक विश्वस्तरीय पर्यटन हब के रूप में विकसित करने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। हमारी प्राथमिकता है कि बस्तर की प्राकृतिक सुंदरता, जनजातीय संस्कृति और पारंपरिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक सुविधाओं का विकास किया जाए। पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने और आकर्षक सब्सिडी नीति के माध्यम से हम देश-विदेश के निवेशकों को आमंत्रित कर रहे हैं। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे। राज्य सरकार का लक्ष्य बस्तर को ऐसा पर्यटन केंद्र बनाना है जहां पर्यटक सुरक्षित, सहज और समृद्ध अनुभव प्राप्त कर सकें। नक्सलवाद के समाप्त होने के बाद बस्तर में शांति और सुरक्षा का वातावरण बना है, जो पर्यटन विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार है। आने वाले समय में बस्तर देश ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित होगा।

चित्रकोट बनेगा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन केंद्रः बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थल चित्रकोट जलप्रपात को विश्वस्तरीय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए तीर्था गांव में लगभग 50 लग्जरी टेंट, साहसिक गतिविधियों और आधुनिक सुविधाओं से युक्त टेंट सिटी परियोजना प्रस्तावित है, जिसमें करीब 25 करोड़ रुपये के निवेश की संभावना है। इसके साथ ही "इंडिजिनस नेचर रिट्रीट" जैसी महत्वाकांक्षी परियोजना के माध्यम से लगभग 250 करोड़ रुपये के निवेश से चित्रकोट को अंतरराष्ट्रीय स्तर का डेस्टिनेशन बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान और धुड़मारास गांव को वैश्विक पहचान मिल रही है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा धुड़मारास को विश्व के श्रेष्ठ पर्यटन ग्रामों में शामिल किए जाने से बस्तर की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और मजबूत हुई है। राज्य सरकार की होमस्टे नीति के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ मिलने के साथ पर्यटकों को बस्तर की समृद्ध जनजातीय संस्कृति का अनुभव भी प्राप्त हो रहा है।

बेहतर कनेक्टिविटी से आसान होगा सफर : बस्तर क्षेत्र में कनेक्टिविटी सुधार के लिए रावघाट-जगदलपुर रेल परियोजना सहित कई सड़क एवं परिवहन परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है, जिससे पर्यटकों की पहुंच आसान होगी। "बस्तर इन्वेस्टर कनेक्ट" के माध्यम से पर्यटन क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित किया जा रहा है, वहीं मुख्यमंत्री पर्यटन विकास मिशन के तहत पर्यटन स्थलों के उन्नयन, स्वच्छता, पेयजल, अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी और पर्यटक सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

प्राकृतिक सौंदर्य और संस्कृति का अनमोल संगम : बस्तर पंडुम जैसे भव्य आयोजनों के माध्यम से जनजातीय संस्कृति, लोकगीत, नृत्य और हस्तशिल्प को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके साथ ही युवाओं को टूरिस्ट गाइड के रूप में प्रशिक्षित कर उन्हें स्थानीय स्तर पर रोजगार से जोड़ा जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा होमस्टे, रिसॉर्ट, वुडन कॉटेज और कैफेटेरिया जैसी सुविधाओं के विकास के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं, जिससे बस्तर टूरिज्म सर्किट को सशक्त बनाया जा सके।

नई पहचान की ओर बस्तरः नक्सलवाद के अंत के बाद बस्तर अब शांति, विकास और पर्यटन की नई पहचान के रूप में उभर रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में बस्तर को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। अब बस्तर केवल अपने अतीत की चुनौतियों के लिए नहीं, बल्कि समृद्ध जनजातीय संस्कृति, अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य और विकास की नई संभावनाओं के लिए पहचाना जाएगा।

-पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग कैबिनेट मिनिस्टर, छत्तीसगढ़ शासन

हर अपराधी में होता है सहायता के लिए पुकारता एक इंसान

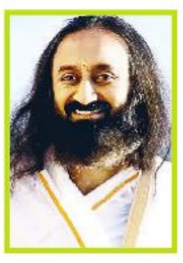

श्री श्री रविशंकर

दर्शन

विश्वास और संवाद का टूटना ही सभी संघर्षों को जन्म देता हैं। लेकिन जब किसी को यह महसूस होता है कि उसे समझा जा रहा है, तो वह सुनना शुरू करता है और सबसे कठोर हृदय भी धीरे-धीरे पिघलने लगता है। गहरी समझ यह है कि हर अपराधी के भीतर एक पीड़ित छिपा होता है, जो सहायता के लिए पुकार रहा होता है, एक ऐसी चोट जो देखभाल चाहती है। यदि आप उन्हें ठीक होने में सहायता करें और यह अनुभव दें कि उनकी बात को सुना जा रहा है तो अपराधी स्वतः ही विलीन हो जाता है।

करुणा, प्रज्ञा और वैराग्य का अंतर्संबंध

यदि आप मेरी दृष्टि से देखें, तो वे सभी सुंदर हैं। यह सब समझने, सुनने और करुणामय होने की बात है। करुणा कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम मांगें या जिसके लिए किसी के कहने का इंतजार करें। करुणा हमारा स्वभाव है, हमारी मूल प्रकृति। करुणा को सशक्त बनाए रखने के लिए उसके साथ दो और गुणों का होना आवश्यक है-प्रज्ञा और वैराग्य। यदि इनमें से कोई एक भी अनुपस्थित हो, तो करुणा अपनी शक्ति खो देती है। प्रश्न उठता है कि कोई व्यक्ति करुणामय होते हुए भी विरक्त कैसे रह सकता है।

अनुकरण अच्छा, अंधानुकरण नहीं

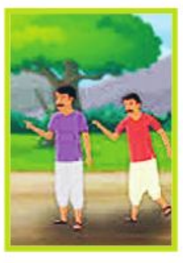

संकलित

प्रेरणा

एक गाँव में दो युवक रहते थे। दोनों में बड़ी मैत्री थी। जहाँ जाते साथ-साथ जाते। एक बार दोनों एक धनी व्यक्ति के साथ उसकी ससुराल गए। किसी धनी व्यक्ति के साथ रहने का यह पहला अवसर था, सो वे अपने धनी मित्र की प्रत्येक गतिविधि ध्यान से देखते रहे। गरमियों के दिन थे। रात में उक्त युवक के लिए शयन की व्यवस्था खुले स्थान पर की गई। पर्याप्त शीतलता बनी रहे इसके लिए वहाँ चारों तरफ जल छिड़का गया और रात को ओढ़ने के लिए बहुत ही हलकी मखमली चादर दी गई। अन्य दोनों युवकों ने इतना ही जाना कि इस तरह का रहन-सहन बड़प्पन की बात है। कुछ दिन बाद उन्हें भी अपनी-अपनी ससुराल जाने का अवसर मिला पर वे दिन गरमी के न होकर शीत के थे। नकल तो नकल ही है। दोनों ने अपना बड़प्पन जताने के लिए बिस्तर खुले आकाश के नीचे लगवाया, लोगों के लाख मना करने पर भी उन्होंने बिस्तर के आस-पास पानी भी छिड़कवाया और ओढ़ने के लिए कुल एक-एक चादर वह भी हलकी ली। रात को पाला पड़ गया सो दोनों को निमोनियाँ हो गया । चिकित्सा कराई गई तब कठिनाई से जान बची। इतनी कथा सुनाने के बाद गुरुजी ने शिष्य को समझाया– ' तात ! उचित और अनुचित का विचार किए बिना जो औरों का अनुकरण करता है वह मूर्ख ऐसे ही संकट में पड़ता है जैसे वह दोनों युवक।' !

अंतर्मन

आज की पाती

युद्धविराम से उभरती नई विश्व व्यवस्था की दिशा

मध्य पूर्व में पिछले चालीस दिनों से जारी तनाव और संघर्ष के बाद जब अमरीका और ईरान के बीच दो सप्ताह के युद्धविराम की घोषणा हुई, तो यह केवल दो देशों के बीच शांति का क्षण भर का प्रयास नहीं था, बल्कि वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में सामने आया। इस संघर्ष ने न केवल क्षेत्रीय स्थिरता को चुनौती दी, बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था, ऊर्जा आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी गहरा प्रभाव डाला। ऐसे में यह युद्धविराम आशा की एक किरण के रूप में देखा जा रहा है, किंतु इसके पीछे छिपी जटिलताएं और भविष्य की अनिश्चितताएं भी उतनी ही गंभीर हैं। होर्मुज स्ट्रेट, जो विश्व की ऊर्जा आपूर्ति का एक प्रमुख मार्ग है, संघर्ष का केंद्र बन गया था। -कांतिलाल मांडोत, सूरत

ट्रेंड

सफलता की कुंजी

आपकी परिस्थितियां, संघर्ष और सपने ही आपको अद्वितीय बनाते हैं। इसलिए, अपनी क्षमताओं और खूबियों को पहचानें और फिर पूर्ण समर्पण के साथ आगे बढ़ें। यही संतुलन सच्ची खुशी व सफलता की कुंजी है।

-राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

महत्वपूर्ण बदलाव

संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण अब देश में बेहद खुशी और उत्साह का क्षण है। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने इस अधिनियम को लाने के लिए इतना बड़ा प्रयास किया। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव साबित होगा।

- रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली

उन्नत तकनीकों का प्रयोग

हमारे किसान भाइयों को पारंपरिक खेती के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी अपनाना चाहिए। मिट्टी की सेहत का ध्यान रखते हुए, संतुलित उर्वरकों का उपयोग और जल संरक्षण के लिए उन्नत तकनीकों का प्रयोग समय की आवश्यकता है।

- भजनलाल, सीएम, राजस्थान

महिला आरक्षण

लंबे समय तक चुप्पी साधने के बाद मोदी सरकार अचानक महिला आरक्षण के मुद्दे पर सक्रिय हो गई है। इस बारे में, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण के मुद्दे पर 16 से 18 अप्रैल तक संसदीय बैठक तय है।

- मल्लिकार्जुन खरगे, अध्यक्ष, कांग्रेस

करंट अफेयर

उ. कोरिया एवं चीन सहयोग और गहरा करने पर सहमत

उत्तर कोरिया और चीन के विदेश मंत्रियों ने अपने देशों के बीच सहयोग को और गहरा करने पर सहमति जताई तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर ' 'गहन विचार-विमर्श'' किया। दोनों देशों के सरकारी मीडिया संस्थानों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। चीन के विदेश मंत्री वांग यी बृहस्पतिवार को प्योंगयांग पहुंचे। यह पिछले सात वर्ष में उत्तर कोरिया की उनकी पहली यात्रा है। चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने कहा कि वांग और उत्तर कोरिया की विदेश मंत्री चोए सोन हुई ने अपनी बैठक में मौजूदा अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की लेकिन उन्होंने इन मुद्दों के बारे में विस्तार से जानकारी नहीं दी। उत्तर कोरिया की सरकारी 'कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी' (केसीएनए) ने बताया कि दोनों पक्ष विदेश नीति से जुड़े मामलों को संभालने वाली अपनी एजेंसियों के बीच रणनीतिक संवाद मजबूत करने पर भी सहमत हुए। किसी भी समाचार संस्थान ने यह नहीं बताया कि चोए और वांग ने अमेरिका पर चर्चा की या नहीं, या फिर पश्चिम एशिया के युद्ध जैसे अन्य मुद्दों पर बात हुई या नहीं। वांग ने उत्तर कोरिया की यात्रा ऐसे समय की है, जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप मई में चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ पुनर्निर्धारित शिखर सम्मेलन के लिए बीजिंग जाने वाले हैं।

ऑफ बीट

मानव शरीर का 'डिजाइन परफेक्ट' नहीं : अध्ययन

मानव शरीर में रीढ़ अर्थात स्पाइन इस तर्क का सबसे अच्छा उदाहरण है। हमारी कशेरुक स्तंभ यानी वर्टिब्रल कॉलम का विकास चार पैरों वाले, पेड़ों पर रहने

वाले पूर्वजों से हुआ, जहां इसका मुख्य कार्य लचीलेपन के साथ शाखाओं के बीच चलना और स्पाइनल कॉर्ड की रक्षा करना था। जब मनुष्य सीधा चलने लगा, तो रीढ़ को शरीर का वजन संभालने और संतुलन बनाए रखने की अतिरिक्त जिम्मेदारी मिली तथा उस पर दबाव बढ़ा। रीढ़ का लचीलापन वजन को संतुलित करने में मदद करता है, लेकिन इससे कमर दर्द, डिस्क खिसकने और अन्य समस्याओं का खतरा भी बढ़ता है। ये समस्याएं इसलिए आम हैं क्योंकि रीढ़ वह काम कर रही है, जिसके लिए वह मूल रूप से विकसित नहीं हुई थी। गर्दन में मौजूद 'रिकरेंट लेरिंजियल नर्व' भी एक असामान्य संरचना का उदाहरण है। यह नस वेगस नर्व की शाखा है तथा हृदय की गति और आराम और पाचन के दौरान धड़कन तथा श्वांस को नियंत्रित करती है। यह बोलने व निगलने में भी मदद करती है। सीधे रास्ते से मस्तिष्क से गले तक जाने के बजाय यह नस पहले छाती में नीचे जाती है, एक प्रमुख धमनी के चारों ओर घूमती है और फिर वापस गले तक आती है। यह जटिल मार्ग किसी बुद्धिमान डिजाइन का परिणाम नहीं, बल्कि मछली जैसे पूर्वजों से विरासत में मिला है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं., ये उनके अपने विचार हैं।)
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

पंजाब में गोदामों में पड़े 155 लाख मी. टन चावल व गेहूं के स्टॉक की लिफ्टिंग होगी

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

सीएम मान ने कहा, इस फैसले से रबी मंडीकरण सीजन के दौरान किसानों के लिए अनाज भंडारण संबंधी समस्याएं हल हो जाएंगी

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री जोशी से मुलाकात की

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज नई दिल्ली में केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रह्लाद जोशी से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान उन्होंने राज्य के किसानों और मंडियों के लिए कई महत्वपूर्ण राहत उपाय सुनिश्चित किए। इस दौरान केंद्र ने पंजाब में पड़े 155 लाख मीट्रिक टन अनाज की लिफ्टिंग के लिए विशेष रेल गाड़ियां चलाने पर सहमति दे दी,जिससे रबी मंडीकरण सीजन से पहले राज्य में अनाज भंडारण संबंधी गंभीर संकट से निपटने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने पंजाब पर बोझ बने संरचनात्मक मुद्दों के समाधान पर जोर दिया, जिसमें उच्च नकद ऋण ब्याज दरें, ग्रामीण विकास फंड के तहत लंबित 9,000 करोड़ रुपए, ओलावृष्टि से प्रभावित फसलों के लिए मुआवजा और आढ़तियों की लंबे समय से लंबित मांगें शामिल हैं। केंद्रीय मंत्री ने इन मुद्दों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और लंबित मुद्दों के समाधान के लिए सचिव स्तरीय व्यवस्था बनाने सहित ठोस कदम उठाने का भरोसा दिया।

एक्स हैंडल पर बैठक की जानकारी साझा करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा-आज दिल्ली में मैंने केंद्रीय खाद्य मंत्री प्रह्लाद जोशी के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। इस दौरान हमने आढ़तियों की मांगों सहित पंजाब से संबंधित विभिन्न प्रमुख मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। मुख्यमंत्री ने आगे लिखाः बैठक के दौरान केंद्र के सामने महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए गए, जिसमें पंजाब में पड़े 155 लाख मीट्रिक टन गेहूं और चावल की तुरंत लिफ्टिंग तथा आरडीएफ के तहत बकाया 9,000 करोड़ रुपए की तुरंत अदायगी के मुद्दे शामिल थे। इसके साथ ही, नकद ऋण सीमा के तहत राज्यों पर लगाई गई उच्च ब्याज दरों को कम करने और आढ़तियों की केंद्र से संबंधित मांगों पर प्राथमिकता के आधार पर विचार करने की मांग की गई। इसके अलावा,मंडी मजदूरों के ईपीएफ से संबंधित मुद्दों को तुरंत हल करने की अपील की गई और असामयिक बारिश के कारण हुए नुकसान के लिए किसानों को उचित मुआवजा देने की मांग भी की गई। केंद्रीय मंत्री ने इन सभी मुद्दों पर बेहद सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। हम पंजाब के हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

फसलों के भंडारण संबंधी भारी कमी पर बात करते हुए मान ने कहा, राज्य के कवरड गोदामों में 180.88 लाख मीट्रिक टन अनाज (151.20 लाख मीट्रिक टन चावल और 29.67 लाख मीट्रिक टन गेहूं) पहले से ही स्टोर किया गया है, जबकि कुल उपलब्ध कवरड भंडारण क्षमता लगभग 183 लाख मीट्रिक टन (173 लाख मीट्रिक टन कवरड गोदाम प्लस 10 लाख मीट्रिक टन गेहूं साइलो) है। नतीजतन, चावलों के लिए केवल 0.50 लाख मीट्रिक टन कवरड स्पेस और गेहूं के लिए 1.75 लाख मीट्रिक टन साइलो स्पेस उपलब्ध है।

उन्होंने कहा कि राज्य में 1 अप्रैल, 2026 से रबी मंडीकरण सीजन (आरएमएस) 2026-27 शुरू हो गया है, जिसमें संभावित रूप से 130-132 लाख मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की जाएगी। मौजूदा स्टॉक के बोझ को उजागर करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले साल के 38 लाख मीट्रिक टन गेहूं के स्टॉक में से लगभग 8.71 लाख मीट्रिक टन स्टॉक पहले ही राज्य में सीएपी या खुली स्टोरेज में पड़ा है, जिससे वैज्ञानिक तरीके से भंडारण क्षमता की कमी हो गई है और लगभग 40 लाख मीट्रिक टन गेहूं को कम अनुकूल परिस्थितियों में स्टोर करना पड़ेगा। अनाज की धीमी उठाई का मुद्दा उठाते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि हमारी सरकार लगातार गेहूं और चावल की राज्य से उठाई की मांग करती रही है ताकि चावल की खरीद और स्टोरेज के लिए जरूरी भंडारण क्षमता बनाई जा सके।

केंद्रीय कृषिमंत्री ने कहा- केंद्र सरकार किसानों को नहीं होने देगी परेशान

खाद की कीमतें नहीं बढ़ेंगी, 'फॉर्मर आईडी' से कालाबाजारी पर लगाएंगे रोकः शिवराज

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को कहा कि केंद्र सरकार किसानों को वैश्विक कीमतों में बढ़ोतरी के असर से बचाने के लिए खाद के दाम स्थिर रखेगी। साथ ही खाद की पारदर्शी आपूर्ति सुनिश्चित करने और कालाबाजारी रोकने के लिए 'फॉर्मर आईडी' प्रणाली लागू की जा रही है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे माल की कीमतें बढ़ने के बावजूद सरकार किसानों के लिए खाद के दाम नहीं बढ़ाएगी।

उन्होंने कहा कि यूरिया का एक बैग 266 रुपए और डीएपी 1,350 रुपए में ही उपलब्ध रहेगा। शिवराज चौहान ने कहा कि किसानों पर बोझ न पड़े, इसके लिए सरकार अतिरिक्त खर्च खुद वहन कर रही है। उन्होंने बताया कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सब्सिडी जारी रखने के लिए 41,000 करोड़ रुपए के अतिरिक्त आवंटन को मंजूरी दी है। शिवराज चौहान ने दोहराया कि सरकार किसानों को उचित मूल्य, पर्याप्त संसाधन और वैश्विक संकटों से न्यूनतम प्रभावित रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

'फॉर्मर आईडी' से पारदर्शिता आएगी

मंत्री ने कहा कि सब्सिडी वाली खाद के दुरुपयोग को रोकने के लिए 'फॉर्मर आईडी' आधारित प्रणाली विकसित की जा रही है। यह आईडी किसान की जमीन, फसल और परिवार की जानकारी से जुड़ी होगी, जिससे उसकी वास्तविक जरूरत के अनुसार खाद उपलब्ध कराई जा सकेगी।

जरूरत से अधिक खरीद पर रोक लगाना जरूरी

उन्होंने कहा कि इस प्रणाली का उद्देश्य असली किसानों को पर्याप्त खाद उपलब्ध कराना और जमाखोरी, कालाबाजारी तथा जरूरत से अधिक खरीद को रोकना है। सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि किसी भी किसान को खाद की कमी न हो।

करोड़ों किसानों तक पहुंच बनाएंगे

केंद्रीय कृषिमंत्री शिवराज चौहान के अनुसार अब तक 92.9 मिलियन से अधिक 'फॉर्मर आईडी' बनाई जा चुकी हैं और लक्ष्य इसे देशभर के लगभग 13 करोड़ किसानों तक पहुंचाने का है। मंत्री ने बताया कि बंटाईदार और किराएदार किसानों के लिए भी व्यवस्था तैयार की जा रही है। मध्य प्रदेश और हरियाणा में सफल मॉडल के तहत, जमीन मालिक की लिखित अनुमति से ऐसे किसान भी खाद प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार वैश्विक घटनाक्रमों और भू-राजनीतिक तनावों का कृषि पर पड़ने वाले असर पर लगातार नजर रख रही है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उर्वरकों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उच्चस्तरीय बैठकें की जा रही हैं। इसकी समीक्षा की जा रही है।

खबर संक्षेप

पवन खेड़ा को हाईकोर्ट ने दी अग्रिम जमानत

हैदराबाद। तेलंगाना हाईकोर्ट ने कांग्रेस के प्रवक्ता पवन खेड़ा को असम में दर्ज एक मामले में एक हफ्ते की अग्रिम जमानत दे दी है।

यह राहत शुक्रवार को कोर्ट ने सुनवाई के दौरान दी। कोर्ट की जज न्यायमूर्ति सुजाना कलासिकम ने कहा कि पवन खेड़ा को एक हफ्ते का समय दिया जाता है ताकि वह संबंधित कोर्ट में जाकर नियमित जमानत के लिए आवेदन कर सकें।

होम्योपैथी..'दीर्घकालिक स्वास्थ्य' पर जोर

नई दिल्ली। आयुष मंत्रालय ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में

"दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए होम्योपैथी" विषय पर राष्ट्रीय समारोह के साथ विश्व होम्योपैथी दिवस 2026 मनाया। यह आयोजन डॉ. सैमुअल हैनिमैन की जयंती के अवसर पर किया गया, जिसमें देशभर से नीति निर्माता, शोधकर्ता, चिकित्सक और छात्र शामिल हुए।

पति की हत्या कर खुद दी जान, मासूम की भी मौत

अयोध्या। जिले के थाना रौनाही क्षेत्र के करेरू गांव में पति-पत्नी के

विवाद ने एक खौफनाक रूप ले लिया जिसके परिणामस्वरूप तीन जानें चली गईं। पत्नी ने पहले पति की हथौड़े से हत्या की, फिर खुद ट्रेन से कटकर आत्महत्या कर ली। कमरे में बंद 22 दिन के दुधमुंहे बच्चे की भी भूख-प्यास से मौत हो गई। शव और शिशु को बंद कर दिया था।

बिहार विधानसभा को बम से उड़ाने की धमकी

पटना। पटना से एक बेहद चौंकाने वाली खबर सामने आ रही है।

शुक्रवार को बिहार विधानसभा को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद हड़कंप मच गया। यह धमकी एक अज्ञात ईमेलके जरिए विधानसभा के आधिकारिक मेल आईडी पर भेजी गई थी। सूचना जल्द ही अधिकारियों और सुरक्षा एजेंसियों को दी गई।

बिहार में नए मुख्यमंत्री को लेकर गहमा- गहमी नहीं हो सकी खत्म

भाजपा कोर ग्रुप की बैठक टली, सरकार के गठन पर चर्चा की, नाम पर नहीं लगी मुहर

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली/ पटना

बिहार भाजपा कोर ग्रुप की प्रस्तावित बैठक, जो शुक्रवार शाम 6 बजे होनी थी, अब आयोजित नहीं हो सकी। बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ वापस पटना चले हैं, जबकि दूसरे डिप्टी सीएम विजय सिन्हा भी पटना लौट गए। वहीं, भाजपा के बिहार प्रभारी और राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने दोनों डिप्टी सीएम से अलग-अलग मुलाकात की। बताया जा रहा है कि इन बैठकों में बिहार में भाजपा की अगली सरकार के गठन को लेकर चर्चा की गई। इस बैठक में एनडीए के शीर्ष नेता बिहार के अगले मुख्यमंत्री के नाम और मंत्रिस्तरीय विभागों के वितरण को अंतिम रूप देने वाले थे। इन फैसलों को संभवतः प्रधानमंत्री मोदी, अमित शाह और नीतीश कुमार की उपस्थिति में लिया जाएगा, जो बैठक के महत्व को रेखांकित करता है जहां बिहार में नेतृत्व और सत्ता-साझाकरण व्यवस्थाओं पर चर्चा होगी।

प्रभारी और राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े से मिले, बिहार के नेतागण दिल्ली से पटना लौटे

नई दिल्ली में बैठक के पहले शाह, सम्राट और तावड़े

नीतीश जल्द देंगे इस्तीफा

बिहार में चल रहे राजनीतिक परिवर्तन के बीच ये उच्च स्तरीय विचार-विमर्श हो रहे हैं, जहां नीतीश कुमार ने राज्यसभा में प्रवेश करने के तुरंत बाद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने का संकेत दे दिया है। इन घटनाक्रमों से संकेत मिलता है कि एनडीए राज्य में सुचारू नेतृत्व और नई सरकार के गठन को सुनिश्चित करने के लिए तेजी से कदम उठा रहा है।

पर्यवेक्षक भेजने की भी चर्चा

भाजपा की इस बैठक में नए सीएम के नाम सहमति बनाने की कोशिश होनी थी, जिसके बाद संसदीय बोर्ड बैठक में मुख्यमंत्री के नाम पर मुहर लगाई जाती। भाजपा के सीएम के नाम की घोषणा दिल्ली में नहीं हुई तो फिर पटना में भाजपा विधायक दल के नेता के चुनाव के बाद पर्यवेक्षक ऐलान करेंगे।

पीएम मोदी ने नीतीश को दी बधाई

फिर संसद में देखना बहुत सुखद होगा साथ ही, हरिवंश की भी सराहना की

प्रधानमंत्री मोदी ने सीएम नीतीश कुमार को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण करने पर बधाई दी। पीएम मोदी ने कहा कि नीतीश ने

बिहार के विकास में अमिट योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि संसद में एक बार फिर नीतीश को देखना अत्यंत सुखद अनुभव होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि नीतीश के लंबे राजनीतिक अनुभव से संसद की गरिमा और बढ़ेगी। एक्स पर लिखा, नीतीश जी देश के सबसे अनुभवी नेताओं में से एक हैं। सुशासन को लेकर उनकी प्रतिबद्धता की हर तरफ सराहना हुई है। उन्हें ढेरों शुभकामनाएं। वहीं, हरिवंश नारायण सिंह को भी राज्यसभा का सदस्य बनने पर बधाई दी। पीएम ने एक्स पर लिखा, हरिवंशने पत्रकारिता,सार्वजनिक जीवन में अमूल्य योगदान दिया है। वे एक सम्मानित बुद्धिजीवी और विचारक हैं। सदन की कार्यवाही को समृद्ध किया है।

नीतीश ने ली राज्यसभा सांसद पद की शपथ

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्यसभा सांसद पद की शपथ ले ली है। राज्यसभा में नेता सदन जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के अलावा बिहार के दोनों उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा और सम्राट चौधरी भी इस दौरान संसद भवन में मौजूद रहे।

नीतीश बोले- पहले तो हम यहीं न थे

जब नीतीश निकले, तो चिर-परिचित अंदाज में मुस्कुराते हुए सिर्फ एक वाक्य कहा कि पहले तो हम यहीं न थे। कोई नही बात नही है।

पूर्व उपसभापति तीसरी बार जाएंगे राज्यसभा

हरिवंश को राष्ट्रपति ने किया नामित

राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश को फिर से राज्यसभा के लिए नामित किया गया है। हरिवंश अभी तक जेडीयू कोटे से राज्यसभा सांसद थे। जेडीयू ने लगातार उन्हें 2 बार राज्यसभा भेजा था। इसलिए इस बार उन्हें राष्ट्रपति ने मनोनीत किया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हरिवंश को राज्यसभा के लिए नामित किया है। वे इससे पहले दो बार राज्यसभा के सदस्य रह चुके हैं।

मतदाता सूची फ्रीज करने का मामला

9 को सूची जारी की, सीजेआई की पीठ 13 को करेगी सुनवाई

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची को फ्रीज करने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच चुका है। आयोग के इस फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट 13 अप्रैल को सुनवाई करेगा। कोर्ट ने इस मामले पर नई याचिका के साथ लंबित याचिकाओं पर भी विचार करने पर सहमति जताई। आयोग ने पहले चरण के सीटों के लिए 9 अप्रैल को मतदाता सूची को अंतिम रूप देते हुए फ्रीज कर दिया था। मतदाता सूची फ्रीज करने का मतलब है कि इस विधानसभा चुनावों के लिए सूची में किसी भी नए व्यक्ति को जोड़ा नहीं जा सकेगा, जिसका नाम हटा दिया गया है। यहां एक चरण में 29 अप्रैल को चुनाव होना है।

जाति जनगणना रोकने की मांग वाली अर्जी

ऐसी अभद्र भाषा कहां से लाते हैं? फटकार लगाई

सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई सूर्यकांत ने एक याचिककर्ता को कड़े शब्दों में फटकार लगा दी। कोर्ट में केंद्र सरकार को जाति जनगणना रोकने, संसाधनों के पुनर्वितिरण को जनसंख्या उत्तरदायित्व से जोड़ने और एक बच्चे वाले परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करने वाली नीतियां बनाने का निर्देश देने वाली याचिका लगाई गई थी। सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल पंचोली की पीठ ने इस याचिका को खारिज कर दिया। इस दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने याचिकाकर्ता से कहा कि आप इस याचिका में इस्तेमाल की गई भाषा कहां से सीखते हैं? ये बदतमीजी की भाषा कहां से लेकर आते हैं आप लोग? आप लोग याचिका कैसे लिखते हैं?

उत्तर रेलवे
शुद्धि पत्र
संदर्भः– निविदा सूचना संख्या 93/2025–2026 दिनांक : 11.03.2026 क्रमांक 04 निविदा संख्या 07265018 देय तिथि 13.04.2026 को है। ऊपर बताए गए टेंडर के संबंध में, टेंडर संख्या 07265018 को खोलने की निर्धारित तिथि 13.04.2026 से बढ़ाकर 21.04.2026 कर दी गई है। अन्य सभी नियम और शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी। शुद्धिपत्र वेबसाइट www.ireps.gov.in पर प्रकाशित किया गया है।
1199/2026
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे
निविदा आमंत्रण सूचना

कार्य का नाम और इसकी स्थिति	04-SRDEE-G-DLI-2026-27 इससे संबंधित विद्युत कार्य (i) बड़ौदा हाउस में एनेक्स–II में एनआरएसए सेक्शन और एनेक्स–I बिल्डिंग में चौथी मंजिल के कॉरिडोर का सुधार/उन्नयन। (ii) बड़ौदा हाउस स्थित एनेक्स–I में इंजीनियरिंग शाखा के कमरा संख्या 439 और 440 ए का सुधार। (iii) बड़ौदा हाउस स्थित कार्मिक शाखा के प्रशिक्षण केंद्र की मरम्मत/नवीनीकरण।
निविदा की अनुमानित लागत	रु० 9889037.60
कार्यालय का पता	वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/सामान्य, डीआरएम कार्यालय, दिल्ली मंडल, उत्तरी रेलवे, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली, 110055
बयाना राशि	रु० 197800.00
निविदा निवेदन की दिनांक व समय	04/05/2026, 16.00 बजे
निविदा खोलने की दिनांक व समय	04/05/2026, 16.00 बजे
वेबसाइट व नोटिस बोर्ड	www.ireps.gov.in वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियन्ता/जी, नई दिल्ली

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 1209/26

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 CrPC देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **आदेश उर्फ राहुल पुत्र** राम कुमार **निवासी** मुर्गी फार्म के पास श्याम विहार, भरत विहार, सेक्टर–15, द्वारका उत्तर, दिल्ली, **स्थायी पताः** ग्राम कछिया पुरवा, पोस्ट–शुक्लापुर भगत, थाना माधवगंज, हरदोई (उ०प्र०), ने **FIR No. 20/2022, U/S 380/411 /34 IPC, पुलिस स्टेशन द्वारका उत्तर, द्वारका जिला, दिल्ली,** के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किया गया गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **आदेश उर्फ राहुल** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **आदेश उर्फ राहुल** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)
इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 20/2022, U/S 380/411 /34 IPC, पुलिस स्टेशन द्वारका उत्तर, द्वारका जिला, दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **आदेश उर्फ राहुल** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **14.05.2026** को या इससे पहले हाज़िर हो।
आदेशानुसार
श्री राहुल कटारे
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी–06,
दक्षिण–पश्चिम जिला, कोर्ट नं0 514,
द्वारका कोर्ट, नई दिल्ली
DP/4676/DW/2026
(Court Matter)

उपराष्ट्रपति ने किया संविधान का सिंधी संस्करण लॉन्च

भाषाई विविधता पर दिया जोर, एकता का सूत्र बताया

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने उपराष्ट्रपति भवन में देवनागरी और फारसी दोनों लिपियों में सिंधी भाषा में संविधान का नवीनतम संस्करण जारी किया। यह सिंधी भाषा दिवस के अवसर पर किया गया। उपराष्ट्रपति ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सिंधी दुनिया की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसकी साहित्यिक परंपरा वेदांतिक दर्शन और सूफी विचारों के अनूठे संगम को दर्शाती है, जो प्रेम, एकता और भाईचारे के मूल्यों को बढ़ावा देती है। कार्यक्रम में केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, सांसद शंकर लालवानी और विधायी विभाग के सचिव डॉ. राजीवमणि भी थे।

सिंधी भाषा दिवस पर समुदाय को शुभकामनाएं दी

भाषाई समावेशिता की दिशा में बड़ा कदम

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद पहली बार विशेष रूप से देवनागरी लिपि में सिंधी भाषा में संविधान का प्रकाशन भाषाई समावेशिता को मजबूत करने की दिशा में अहम है। उन्होंने संविधान को राष्ट्र की जीवंत आत्मा बताया। उन्होंने विधि एवं न्याय मंत्रालय और क्षेत्रीय भाषा अधिकारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए विश्वास जताया।

केंद्र सरकार के प्रयासों को सराहा

उन्होंने केंद्र द्वारा संविधान को विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के प्रयासों की सराहना की। इससे नागरिकों और शासन के बीच की दूरी कम होती है। मातृभाषा में संविधान उपलब्ध होने से नागरिकों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

सिंधी भाषा का ऐतिहासिक महत्व

सिंधी समुदाय की ऐतिहासिक यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विभाजन के कठिन दौर में यह भाषा एकता और दृढ़ता का प्रतीक बनी रही। उन्होंने बताया कि 1967 में 21वें संवैधानिक संशोधन के जरिए सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था।उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत की ताकत उसकी विविधता में निहित है और भाषाएं संस्कृति, परंपरा और पहचान की महत्वपूर्ण वाहक हैं।

संपादकीय जागरण

शनिवार, 11 अप्रैल, 2026 : वैशाख कृष्ण - 9 वि. 2083

मेहनत और लक्ष्य का समन्वय ही उन्नत जीवन का आधार है

जासूसी का जाल

दिल्ली पुलिस की ओर से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ से जुड़े संदिग्ध आतंकियों के एक और गुट का भंडाफोड़ यही बताता है कि पाकिस्तान भारत के खिलाफ बड़े पैमाने पर साजिश रचने में लगा हुआ है और उसने भारत के संवेदनशील ठिकानों की जासूसी के लिए एक बड़ा नेटवर्क खड़ा कर लिया है। चिंता की बात केवल यह नहीं कि पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाले संदिग्ध आतंकी उसे महत्वपूर्ण स्थलों के लाइव फुटेज भेज रहे, बल्कि यह भी है कि वे ऐसे ठिकानों की भी जानकारी प्रेषित कर रहे, जहां आतंकी हमले किए जा सकें। इसका मतलब है कि आपरेशन सिंदूर में पस्त होने से बौखलाया पाकिस्तान भारत में आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए हर संभव तरीके से हाथ-पांव मार रहा है। एक ओर वह अमेरिका की चापलूसी करके अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि सुधारने की चेष्टा के साथ खुद को शांति दूत के रूप में पेश कर रहा है और दूसरी ओर आतंक को पालने-पोसने से बाज नहीं आ रहा है। वह जैसी खतरनाक भारत विरोधी हरकतों में लिप्त है, उनसे यही पता चलता है कि वह पहले की ही तरह जिहादियों को तैयार करने में लगा हुआ है।

भारत को पाकिस्तान को चेताने के साथ ही उसके शैतानी चेहरे को बेनकाब करने के लिए नए सिरे से सक्रियता दिखानी होगी, क्योंकि उसके यहां का आतंकी ढांचा जस का तस है। वहां किस प्रकार पहले की ही तरह जिहादी तैयार हो रहे हैं, इसका ताजा उदाहरण हाल में कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकी की गिरफ्तारी है। इसके अलावा गत दिनों एक पाकिस्तानी इस्लामिक स्टेट से प्रेरित होकर न्यूयार्क के एक यहूदी केंद्र पर आतंकी हमले की साजिश में पकड़ा गया। इस पर अमेरिका के साथ पश्चिम के अन्य देशों को भी गौर करना होगा, क्योंकि यह पहला ऐसा मामला नहीं, जब कोई पाकिस्तानी आतंकी विदेश में किसी आतंकी हमले की साजिश में लिप्त पाया गया हो। दुनिया को समझना होगा कि पाकिस्तान अब भी आतंक का निर्यात करने में लगा हुआ है। वह भारत के साथ अफगानिस्तान को भी अस्थिर करने की ताक में है। हमारे नीति-नियंताओं को इससे चिंतित होना चाहिए कि पाकिस्तान को अपने लिए जासूसी करने यानी भारत से गद्दारी करने वाले तत्व इतनी आसानी से कैसे मिल जा रहे हैं। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि वे या तो जिहादी बनने के उन्माद से ग्रस्त होकर पाकिस्तान के हाथों में खेल रहे हैं या फिर पैसों के लालच में देश के दुश्मन बन जा रहे हैं। यह गंभीर बात है कि पिछले एक अर्से से ऐसे तत्व बड़ी संख्या में देश के विभिन्न हिस्सों से पकड़े गए हैं, जो पाकिस्तानी हैंडलरों के संपर्क में थे और उनके लिए भारत में आतंक फैलाने के लिए काम कर रहे थे। साफ है कि पुलिस और खुफिया एजेंसियों को और अधिक चौकसी बरतनी होगी।

उचित निर्णय

दिल्ली की वातावात व्यवस्था के लिए मील का पत्थर मानी जाने वाली ईस्ट-वेस्ट कारिडोर परियोजना एक बार फिर चर्चा में है। करीब डेढ़ दशक से फाइलों में दबी इस योजना को अब एनएचएआइ को सौंपने की तैयारी की जा रही है। यह कदम न केवल इस परियोजना के प्रति प्रशासनिक गंभीरता को दर्शाता है, बल्कि दिल्ली के करोड़ों वाहन चालकों के लिए एक बड़ी राहत की उम्मीद भी लेकर आया है। इस परियोजना को एनएचएआइ को सौंपने का निर्णय रणनीतिक रूप से सटीक जान पड़ता है।

ईस्ट-वेस्ट कारिडोर के पहले चरण में आने वाली बाधाओं को दूर कर इस योजना पर जल्द काम शुरू किया जाए

पिछले 15 वर्षों का इतिहास देखें, तो यह परियोजना राजनीतिक इच्छाशक्ति और फंड की कमी के बीच झूलती रही है। आनंद विहार से हरियाणा बार्डर तक के इस 39 किमी लंबे कारिडोर का विचार जितना भव्य है, इसका क्रियान्वयन उतना ही चुनौतीपूर्ण रहा है। पूर्व की सरकारों के दौरान रेलवे से मंजूरी न मिलना और वित्तीय संसाधनों का अभाव इसके मार्ग में सबसे बड़े रोड़े रहे। आनंद विहार से नई दिल्ली स्टेशन तक के पहले चरण के लिए ही लगभग 6,000 करोड़ रुपये की भारी-भरकम राशि की आवश्यकता है, जिसे जुटाना राज्य सरकार के लिए एक कठिन चुनौती थी। लेकिन, इसमें आने वाली बाधाओं को दूर कर जल्द काम शुरू कराया जाना चाहिए।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या अमेरिका-ईरान संघर्षविराम असफल होता दिख रहा है?

आज का सवाल
क्या जस्टिस यशवंत वर्मा के त्यागपत्र के बाद भी उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का केस चलाया जाना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

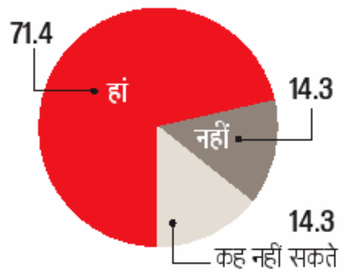

राजनीतिक दृढ़ता का अप्रतिम उदाहरण

ए. सूर्यप्रकाश

देश मोदी-शाह की जोड़ी का आभारी रहेगा, जिसने देश को खतरनाक माओवादी हिंसा के प्रकोप से मुक्ति दिलाई

एक समय जिस माओवाद को देश की आंतरिक सुरक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक के रूप में देखा जाता था, उससे देश को अब मुक्ति मिल गई है। इस मुक्ति में माओवाद के सफाए से जुड़े मोदी सरकार के संकल्प की अहम भूमिका रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और गृहमंत्री अमित शाह द्वारा माओवाद विरोधी नीतियों के सक्षम क्रियान्वयन के दम पर देश इस चुनौती से पार पाने में सफल हो सका है। याद रहे कि 2014 में जब मोदी प्रधानमंत्री बने तब 126 जिले माओवाद से प्रभावित थे। इनमें से 36 में तो माओवादियों की तूती बोलती थी। अब माओवाद की बची-खुची जड़ें केवल दो जिलों तक सिमटकर रह गई हैं और उनके वर्चस्व वाले जिलों की संख्या शून्य हो गई। माओवादी हिंसा देश की जड़ों को खोखला कर रही थी। केंद्रीय गृह मंत्रालय के नेतृत्व में अर्धसैनिक बलों और संबंधित राज्यों के पुलिस बल की एक व्यापक एवं सुव्यवस्थित रणनीति से ही माओवाद की समाप्ति में सफलता मिल सकी। निश्चित रूप से यह मोदी सरकार की बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

बीते दिनों गृहमंत्री अमित शाह ने संसद को इस सफलता के विषय में सूचित भी किया। उन्होंने सदन में बताया कि 2014 से अब तक 4,839 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया। जबकि 2,218 गिरफ्तार किए गए और 706 माओवादी विभिन्न अभियानों में मार गिराए गए। माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में राज्य की बढ़ती पैठ का एक प्रमाण यह है कि इस दौरान वहां 596 पुलिस थाने मजबूत किले में तब्दील हो गए तो केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल यानी सीआरपीएफ के 406 नए कैंप भी स्थापित किए गए। रात्रि में भी अभियान छेड़ने के लिए सुविधाओं का विस्तार किया गया, जिनमें ऐसी सुविधा वाले 68 हैलीपैड भी शामिल हैं, जहां रात को भी लैंडिंग संभव थी। माओवाद के विरुद्ध मिली उल्लेखनीय सफलता यह सोचने पर भी विवश करती है कि करीब 12 करोड़ की आबादी वाले हिस्से को अपनी चपेट में लेने वाली माओवादी हिंसा से निपटने में पूर्व की सरकारें क्यों विफल रहीं? इसका स्पष्ट उत्तर निकलेगा और वह है दृढ़ता की कमी और राजनीतिक मजबूरियां। दूसरे शब्दों में कहें तो नीयत साफ नहीं थी। देश में माओवाद की जड़ें इंदिरा गांधी के शासन में पनपनी शुरू हुईं। 1969 में कांग्रेस में विभाजन के बाद इंदिरा गांधी को अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए वामपंथी दलों के सहारे की जरूरत थी। इस सहारे के बदले में कांग्रेस सरकार ने वामपंथियों और उनके वैचारिक सहोदरों माओवादियों के प्रति नरम रुख अपनाया। कांग्रेस ने स्वयं को प्रगतिशील दिखाने के लिए भी माओवादियों पर सख्ती नहीं की। जबकि माओवाद मध्य भारत में अपना विस्तार करते हुए देश की जड़ों को दीमक की तरह खोखला कर रहा था। इसका ही परिणाम रहा कि छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, केरल, बंगाल, मध्य प्रदेश, आंध्र और तेलंगाना जैसे राज्यों में फैलते गए माओवाद से देश में लाल गलियारे की संकल्पनाएं तैरने लगीं।

अवधेश राजपूत

माओवाद से निपटने के मामले में स्थितियां केंद्र में मोदी सरकार के बनने के बाद बदलीं। गृहमंत्री अमित शाह ने एक व्यापक, बहुआयामी दृष्टिकोण तैयार किया। पूर्व की सरकारें इस आधार पर भी विफल रहीं कि वे स्थानीय जनता को यह भरोसा दिलाने में सक्षम नहीं हो पाईं कि सरकार माओवाद की समाप्ति को लेकर गंभीर है। इसी कारण जनता में माओवादियों का खौफ बना रहा। मोदी सरकार ने लोगों का यह नजरिया बदला। मोदी के शासनकाल में हालात बदलने लगे। मनमोहन सिंह के शासनकाल (2004-20014) के दौरान माओवाद प्रभावित जिलों में 16463 हिंसक घटनाएं हुईं, जबकि मोदी के शासनकाल (2014-2024) में यह संख्या घटकर 7744 रह गई।

मोदी सरकार ने बार-बार दोहराया कि 31 मार्च, 2026 तक माओवादियों का समूल नाश कर दिया जाएगा। यह घोषणा सरकार के प्रमुख चेहरे अमित शाह करते रहे। इससे पहले किसी भी भारतीय नेता ने इतने बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैली आंतरिक सुरक्षा संबंधी समस्या को समाप्त करने का ऐसा महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय नहीं किया था। यदि वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में विफल रहे तो उसमें भी बड़ा राजनीतिक जोखिम था, लेकिन आत्मविश्वास से ओतप्रोत मोदी-शाह की जोड़ी अपनी दृढ़ता से इस लक्ष्य की पूर्ति को लेकर आश्वस्त थी। एक ओर सरकार माओवादियों से निपटने में कोई नरमी नहीं बरत रही थी, तो दूसरी ओर माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विकास गतिविधियों को भी प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ा रही थी, ताकि जनता को समझ आए कि जब लोकतांत्रिक शासन अपने सही स्वरूप में सक्रिय हो तो उसके कितने सार्थक परिणाम सामने आते हैं। आक्रामक अभियान के चलते माओवादियों के शीर्ष कमांडर या तो मारे गए या फिर उन्होंने आत्मसमर्पण करने की राह चुनी। इससे कैडरों का हौसला भी प्रभावित हुआ।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली मनमोहन सरकार ने माओवादी हिंसा को कश्मीर घाटी और पूर्वोत्तर में अलगाववाद से भी बड़ी चुनौती बताया तो था, लेकिन उनकी सरकार ने इससे निपटने के लिए कारगर प्रयास नहीं किए। अब जब मोदी और शाह की जोड़ी ने माओवाद पर अंकुश लगाने में सफलता हासिल की है तो भी कांग्रेस और कम्युनिस्टों ने इतनी गरिमा भी नहीं दिखाई कि वे सरकार के इन प्रयासों की सराहना कर सकें। उलटे राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में माओवादियों की सहभागिता की चर्चा हुई। शाह ने संसद में कहा कि राहुल गांधी को 2010 में ओडिशा और 2018 में हैदराबाद में माओवादियों और उनके समर्थकों के साथ मंच साझा करते देखा गया। माओवादियों के प्रति राहुल के समर्थन का सबसे शर्मनाक वाकया तब सामने आया, जब उन्होंने माओवादी सरगना हिडमा के एनकाउंटर का विरोध कर रहे माओवादी समर्थकों का इंडिया गेट पर हुए प्रदर्शन में साथ दिया। याद रहे कि हिडमा के खून 170 से अधिक सुरक्षाकर्मियों के रक्त से सने हुए थे। नकारात्मकता में डूबे ये दल भले ही इस सफलता की सराहना करने में संकोच करें, पर देश मोदी-शाह की जोड़ी का आभारी रहेगा, जिसने देश को इस समस्या से मुक्ति दिलाई।

(लेखक लोकतांत्रिक विषयों के विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)
response@jagran.com

आसान नहीं होता युद्ध खत्म करना

जगतबीर सिंह

किसी युद्ध को अपेक्षित समय में संतोषजनक परिणाम के साथ समाप्त करना मुश्किल ही होता है

लेबनान तक फैला ईरान युद्ध ● रायटर्स

वियतनाम युद्ध में हुई किरकिरी से सबक लेते हुए जब अमेरिकी सेनाएं 1991 के खाड़ी युद्ध में उतरीं तो उन्होंने थल, नभ एवं जल सेना के ऐसे अभूतपूर्व समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत किया कि चंद दिनों में ही युद्ध का निर्णायक फैसला हो गया। आपरेशन डेजर्ट स्टार्म नाम से चला वह अभियान अमेरिका की बड़ी सैन्य सफलताओं में से एक माना जाता है। हालांकि उसके कुछ साल बाद ही अफगानिस्तान में अमेरिका का आतंक विरोधी अभियान इतना लंबा खिंचा कि उसे कभी न समाप्त होने वाले 'अंतहीन युद्ध' की संज्ञा मिलने लगी। अमेरिकी सेना के सबसे लंबे अभियान के रूप में दर्ज हुए इस अभियान के विषय में यह भी कहा जा सकता है कि अमेरिका को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी, क्योंकि तालिबान फिर से अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज हो गए। इसी तरह रूस ने भी यूक्रेन पर इसी धारणा के साथ हमला किया कि कुछ ही दिनों में वह हथियार डाल देगा, लेकिन वह लड़ाई अभी तक जारी है। अक्टूबर 2023 में जब हमास के हमले के बाद इजरायल ने गाजा को निशाना बनाया तो यही माना गया था कि थोड़े समय में ही यह लड़ाई थम जाएगी, मगर उस लड़ाई का दायरा बढ़कर लेबनान, सीरिया और यमन तक विस्तारित होता गया। हालांकि जनवरी में वहां एक युद्धविराम की स्थिति तो बनी, लेकिन वहां भीषण मानवीय आपदा की स्थिति को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

ईरान युद्ध का उदाहरण लें तो उसकी शुरुआत भी संभवतः इसी विचार के साथ हुई हो कि जल्द ही इसका परिणाम सामने आ जाएगा। शुरुआती दौर में ही शीर्ष नेता अयातुल्ला खामेनेई की हत्या इसी धारणा के अनुरूप थी कि इससे शासन परिवर्तन में आसानी होगी। हालांकि खामेनेई की मौत ने शासन परिवर्तन के बजाय ईरानियों को और एकजुट करने का ही काम किया। शासन पर पहले जो दबाव महसूस हो रहा था, वह भी छिन्न-भिन्न हो गया। फिर लड़ाई लंबे दौर में दाखिल हो गई और पूरी दुनिया उसकी तपिश महसूस करने लगी। इतिहास पर दृष्टि डालें तो यूरोपीय सैन्य नेतृत्व ने 1914 की गर्मियों में यह सोचकर युद्ध छेड़ा कि क्रिसमस तक लड़ाई थम जाएगी, मगर हुआ इसका उलटा और यह जंग नवंबर 1918 तक जारी रही। जर्मनी ने बख्तरबंद सेना और वायुसेना के घातक उपयोग वाली ब्लिट्जक्रेग यानी बिजली की चपलता वाली रणनीति के जरिये 1940 में पश्चिमी यूरोप के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया, लेकिन यह शुरुआती सफलता भी अंततः उसे जीत नहीं दिला पाई। सोवियत संघ के साथ जर्मनी 1941 में ऐसे विध्वंसक एवं अंतहीन युद्ध में उलझा, जिसमें दोनों खेमों को ही भारी क्षति पहुंची, लेकिन इसका परिणाम जर्मनी के विभाजन के रूप में निकला।

देखा जाए तो दोनों विश्व युद्धों में जीत की कुंजी वास्तविक सैन्य शक्ति से अधिक धैर्य और लंबे समय तक संघर्ष में टिके रहने की क्षमता में निहित थी। इसी क्रम में कोरियाई युद्ध तीन वर्षों से अधिक समय तक चला और अमेरिकी सैनिक वियतनाम में एक दशक से भी अधिक समय तक तैनात रहे। हालांकि इस सबका यह अर्थ नहीं कि आधुनिक सशस्त्र संघर्षों का निर्णय तत्काल नहीं हो पाता। जून 1967 में इजरायल ने एक सप्ताह के भीतर ही अरब देशों के गठबंधन को धूल चटा दी थी। बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए हुए 1971 के युद्ध में भी भारत ने मात्र 13 दिनों की लड़ाई में ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया था। गत वर्ष आपरेशन सिंदूर में भारत की करीब 88 घंटों की जोरदार कार्रवाई के बाद ही पाकिस्तान संघर्षविराम की गुहार लगाने लगा था। सैन्य रणनीतियों में संक्षिप्त स्वरूप में तीव्र प्रहार और एकाएक किए हमलों के जरिये जीत की अपनी महत्ता रही है, लेकिन इतिहास साक्षी है कि जो सेनाएं इस भरोसे के साथ रणभूमि में उतरीं, उन्हें यह अनुभूति भी हुई कि किसी भी युद्ध को अपेक्षित समय में संतोषजनक परिणामों के साथ समाप्त करना कितनी टेढ़ी खीर साबित हुआ।

संक्षिप्त युद्ध की रणनीति मुख्य रूप से प्रतिद्वंद्वी को एकाएक हमले से चौंकाने पर टिकी होती है। इसमें पूरी ताकत से ऐसे हमलों पर जोर होता है कि दुश्मन को संभलने का कोई मौका ही न मिले और उस पर निर्णायक बढ़त बनाई जाए। यह भी स्मरण रखना होगा कि छोटे युद्ध उन संसाधनों के दम पर लड़े जाते हैं जो उस समय उपलब्ध होते हैं, लेकिन लंबे खिंचने वाले युद्धों के लिए उन क्षमताओं को विकसित करना पड़ता है, जो निरंतर बदलती युद्ध स्थितियों के अनुरूप उपयोगी साबित हो सकें। संक्षिप्त युद्ध अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अस्थायी व्यवधान पैदा करते हैं और इनमें व्यापक आपूर्ति शृंखला की भी खास दरकार नहीं होती। जबकि लंबे खिंचने वाले युद्धों में ऐसी रणनीतियां आवश्यक हो जाती हैं, जो जनता का मनोबल और समर्थन बनाए रख सके।

ईरान युद्ध में अमेरिका और इजरायल का सामना एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी से हुआ, जो न केवल उसके हमलों को झेल रहा था, बल्कि उनका तत्परता से जवाब भी दे रहा था। इस दौरान ईरान ने होर्मुज जलमार्ग से ऊर्जा आपूर्ति को बाधित करके उसे एक आर्थिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। तमाम युद्धों की तरह ईरान युद्ध भी इसी पहलू को रेखांकित करने वाला साबित हुआ है कि अधिकांश युद्धों की शुरुआत इस धारणा से होती है कि वे संक्षिप्त होंगे, पर इससे कहीं अधिक कठिन निर्णय यह होता है कि लड़ाई को कब और कैसे समाप्त किया जाए।

(लेखक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

हम सब एक

गणित में एक जोड़ एक दो होता है, लेकिन अध्यात्म में एक जोड़ एक बराबर एक होता है। यानी हमारा आत्मा जब परमात्मा से मिलता है तो वह दो नहीं एक हो जाता है। प्रभु के साथ इस एकता का अनुभव करना तभी संभव है जब हम यह महसूस करते हैं कि हम सब एक ही हैं। इस दिव्य अनुभव को हम केवल ध्यान अभ्यास द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। नहीं तो सारी उम्र हम यह सोचते हैं कि हम और परमात्मा अलग हैं। हमारा यही द्वैत हमें परमात्मा से मिलने से रोकता है।

हमारा अहंकार हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम परमात्मा से ही नहीं, बल्कि दूसरों से भी अलग हैं। जब हम अपना अहंकार खो देते हैं तभी हम आध्यात्मिक रूप से तरक्की करते हैं और उतना ही अधिक हम खुद को परमात्मा के करीब पाते हैं। जैसे-जैसे हमारा अहंकार कम होता जाता है, वैसे-वैसे हमें यह अनुभव होना शुरू हो जाता है कि हम सब एक हैं। जब हम ध्यान अभ्यास के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर जाते हैं तो हमें यह अनुभव होता है कि हमारे अंदर परमात्मा का वही प्रकाश है, जो अन्य जीवों में है। चाहे वह मानव हो या पशु। हमें यह भी अनुभव हो जाता है कि हममें से कोई भी किसी अन्य जीव से श्रेष्ठ नहीं है। हम ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जहां हम यह मानते हैं कि सभी महत्वपूर्ण हैं। जैसे ही हम अपने अंतर में परमात्मा की ज्योति का अनुभव करते हैं, हम सभी को परमात्मा के एक ही परिवार के रूप में देखते हैं। हमें यह अनुभव हो जाता है कि न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा। हमारे चिह्न-चक्र अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन हम सब एक जैसे ही हैं।

प्रतिदिन ध्यान अभ्यास से हमारा आध्यात्मिक विकास होगा, विश्व में शांति का प्रसार होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर इस अनुभूति को प्राप्त कर ले कि हम सब एक हैं तो यह दुनिया एक दिन शांति और प्रेम का स्थल बन जाएगी।

संत राजिंदर सिंह जी महाराज

पाठकनामा
pathaknama@nda.jagran.com

गठबंधन का आधार विचारधारा

'विपक्षी एकता की परीक्षा' शीर्षक से प्रकाशित राहुल वर्मा का आलेख पढ़ा। इसमें हालिया विधानसभा चुनावों के संदर्भ में राष्ट्रीय राजनीति और विपक्षी गठबंधन की स्थिति का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। चुनाव परिणामों को सिर्फ विपक्ष की एकता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, क्योंकि भारतीय लोकतंत्र में चुनावी नतीजे अनेक स्थानीय, सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होते हैं। विपक्षी गठबंधन की मजबूती भी केवल सीटों की संख्या से नहीं, बल्कि वैचारिक सामंजस्य, नेतृत्व क्षमता और साझा रणनीति पर निर्भर करती है। देखा जाए तो केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी तथा असम, केरल, बंगाल एवं तमिलनाडु जैसे राज्यों की राजनीतिक प्रकृति भिन्न है, जहां क्षेत्रीय दलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का उभार संघीय ढांचे को मजबूत करता है और सत्ता के विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देता है। ऐसे में केवल चुनावी परिणामों के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता का आकलन करना सीमित दृष्टिकोण प्रतीत होता है।

विवेक श्रीवास्तव, पटना

बाल तस्करी पर सख्ती जरूरी

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में बच्चों की सुरक्षा केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं बल्कि नैतिक और संवैधानिक कर्तव्य भी है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने बाल तस्करी के बढ़ते मामलों पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए राज्यों को सख्त और त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। अदालत ने स्पष्ट कहा कि वह निगरानी कर सकती है, लेकिन वास्तविक कार्रवाई का दायित्व राज्य सरकारों और प्रशासनिक तंत्र पर ही है। यह टिप्पणी केवल एक कानूनी बयान नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए चेतावनी है कि यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती है। बाल तस्करी एक जटिल और बहुआयामी अपराध है जो केवल बच्चों के अपहरण तक सीमित नहीं रहता बल्कि इसमें जबरन मजदूरी यौन शोषण भीख मंगवाना और अवैध गतिविधियों में धकेलना जैसे गंभीर अपराध शामिल होते हैं। यह समस्या केवल शहरों से ग्रामीण इलाकों में भी तेजी से फैल रही है जहां जागरूकता की कमी और गरीबी के कारण बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं। अदालत ने इस बात पर भी जोर दिया कि देशभर में संगठित गिरोह सक्रिय हैं, जो बच्चों को निशाना बनाते हैं। उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर शोषण करते हैं। इसके मूल कारणों पर भी ध्यान की जरूरत है। गरीबी बेरोजगारी अशिक्षा और सामाजिक असमानता जैसे कारक बाल तस्करी को बढ़ावा देते हैं। कई बार माता पिता आर्थिक मजबूरी के चलते बच्चों को काम पर भेजने के लिए मजबूर हो जाते हैं और यही स्थिति तस्करों के लिए अवसर बन जाती है। इसके अलावा शहरीकरण व पलायन भी एक बड़ा कारण है, जहां परिवारों का सामाजिक ढांचा कमजोर पड़ जाता है और बच्चों की सुरक्षा खतरे में आ जाती है। अदालत ने कहा कि कई मामलों में राज्य सरकारों की प्रतिक्रिया धीमी और असंगठित होती है जिससे अपराधियों के हौसले बढ़ते हैं।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

हथकंडे से बचने में भलाई

साउथ दिल्ली वेस्ट डिस्ट्रिक्ट पुलिस की साइबर टीम को बधाई, जिसने हाल ही में 'सी हाक 04' कोडनेम वाला आपरेशन सफलतापूर्वक पूरा किया है। कुछ समय पहले दिल्ली पुलिस ने 300 करोड़ का एक ट्रेडिंग स्कैम भी पकड़ा था। इस आपराधिक गिरोह का नेटवर्क कई राज्यों में फैला हुआ था और इसने हजारों लोगों को अपना निशाना बनाया था। गहन जांच से पता चला है कि आरोपितों ने लोगों को अलग-अलग नकली एप और वेबसाइटों से जोड़कर आनलाइन इन्वेस्टमेंट स्कीमों में फंसाया जाता था। वे पीड़ितों को ज्यादा मुनाफा दिखाकर या वादे करके लुभाते थे। आरोपित शुरुआत में पहले छोटे-मोटे मुनाफे दिखाकर लोगों का विश्वास जीतते थे और फिर पीड़ितों को बड़ी रकम इन्वेस्ट करने के लिए लुभाते थे। आरोपति लगातार सक्रिय रहते थे और धोखे से हासिल की गई रकम को अलग-अलग बैंक खातों और डिजिटल वालेट में ट्रांसफर करते रहते थे, जिससे उस रकम का पता लगाना मुश्किल हो जाता था। अपनी विश्वसनीयता जल्दी से बनाने के लिए वे अक्सर यह दावा करते थे कि उनका संबंध किसी बड़ी-बड़ी अंतरराष्ट्रीय कंपनी और फाइनेंशियल फर्म से है, जबकि असल में यह दावा पूरी तरह झूठा होता था। इसलिए सावधानी से ट्रेडिंग इन्वेस्टमेंट के जरिये ज्यादा मुनाफा कमाने वाले फंडे के हथकंडे से बचने के भरपूर प्रयास करने में ही भलाई है नहीं तो गाढ़ी कमाई खिसकते देर नहीं लगेगी।

युगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

पोस्ट

न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा दोषी प्रतीत हो रहे हैं, लेकिन न्यायपालिका ने उन्हें गरिमापूर्ण तरीके से बाहर निकलने का अवसर दिया। एक न्यायाधीश पर भी वही कानून क्यों लागू नहीं होना चाहिए, जो आम नागरिकों पर होता है? सुनंदा वशिष्ठ@sunandavashisht

टीएमसी द्वारा हुमायूं कबीर पर की गई 'सर्जिकल स्ट्राइक' के बाद असदुद्दीन ओवैसी ने गठबंधन से बाहर होने का फैसला किया है। यह बंगाल चुनाव में अहम मोड़ साबित हो सकता है, खासकर मालदा और मुर्शिदाबाद जैसे क्षेत्रों में। अमन शर्मा@AmanKayamHai_

विधानसभा चुनावों के परिणामों में महिला शक्ति निर्णायक भूमिका निभा सकती है। असम में महिलाओं का मतदान पुरुषों से एक प्रतिशत, केरलम में लगभग छह प्रतिशत और पुडुचेरी में तीन प्रतिशत अधिक है। अमिताभ तिवारी@politicalbaaba

ट्रंप की राष्ट्रपति पद की अवधि एक डूबते जहाज जैसी लग रही है। भारत को अमेरिका के साथ कोई भी व्यापार समझौता करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए-कम से कम मध्यावधि चुनावों तक। नवरूप सिंह@TheNavroopSingh

जनपथ

करदाता पिसता रहे नेता बांटें मुफ्त,
मुफ्तखोर घर बैठकर रहें उठाते लुत्फ।
रहें उठाते लुत्फ चलेगा कब तक ऐसा,
किस सीमा तक आप भला बांटोगे पैसा?
बने निकम्मा देश भरे घर बैठे खाता,
ठगा-ठगा सा देख रहा सब कुछ करदाता!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन. नॉन एजीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 266

दिव्य पथ-प्रदर्शक महात्मा ज्योतिराव फुले

नरेन्द्र मोदी

महात्मा फुले का जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं

हम सभी के लिए 11 अप्रैल का दिन बहुत विशेष है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जन्म-जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके 200वें जयंती वर्ष का शुभारंभ हो रहा है। महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म चिंतन और समाज हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। उन्हें केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

ज्योतिराव फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ, पर शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से ही वे बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वे कहते थे, 'हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।'' यह जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही। उनके जीवन में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए।

जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब महात्मा फुले ने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, 'बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए, अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं।'' उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बनाया।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी बहुत प्रेरित करता है। पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए रिसर्च और इनोवेशन को बहुत प्राथमिकता दी है। एक ऐसा इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और इनोवेशन के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत अपने युवाओं को देश की प्रगति का आधारस्तंभ बना रहा है।

महात्मा ज्योतिराव फुले को पुष्प अर्पित करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। पीआइबी

अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए, उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए।

महात्मा फुले ने कहा था, जब तक समाज के सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना। यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज की मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है। उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लोगों के बीच रहकर लगातार काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ा, लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी। एक गंभीर स्ट्रोक के बाद भी उन्होंने अपना काम और समाज के लिए संघर्ष जारी रखा। उनका शरीर कमजोर हुआ, पर समाज के प्रति उनका समर्पण कभी नहीं डगमगाया। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं।

महात्मा फुले का स्मरण सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वह स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वे स्वयं भी इस बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया।

भारतभूमि बार-बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। सदियों से हमारे देश में समाज सुधार की आवाज उन्हीं लोगों से उठी है, जिन्होंने पीड़ा को भाग्य नहीं माना, बल्कि उसे खत्म करने के प्रयासों में जुटे रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे।

मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने शहर में महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके 200वें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

बंगाल की मतदाता सूची फ्रीज करने के खिलाफ विचार करेगा शीर्ष कोर्ट

- बंगाल में चुनाव से पहले अर्जी पर 13 अप्रैल को होगी सुनवाई
- राज्य में एसआइआर का पेंच, 23 और 29 अप्रैल को में मतदान

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल में आसन्न विधानसभा चुनाव से ऐन पहले चुनाव आयोग की फ्रीज की हुई मतदाता सूची के मुद्दे पर विचार करने का मन बना लिया है। सर्वोच्च अदालत ने बंगाल में दो चरणों में 23 और 29 अप्रैल को होने वाले मतदान से पहले चुनाव आयोग द्वारा फ्रीज की हुई चुनावी सूची के खिलाफ एक नई याचिका को सुनने के लिए 13 अप्रैल की तारीख तय की है।

बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के बाद चुनाव आयोग ने विगत 9 अप्रैल को पहले चरण में मतदान होने वाले विधानसभा सीटों के लिए चुनावी सूची को फ्रीज और अंतिम रूप दिया है। चुनावी सूची के फ्रीज होने का अर्थ है कि सूची से हटाया जा चुका कोई नया व्यक्ति इस विधानसभा चुनाव के लिए मतदाता सूची में नहीं जोड़ा जा सकता। मतगणना 4 मई को होनी है।

सीजेआइ सूर्यकांत और न्यायाधीश जायमाल्या बागची और विपुल एम. पंचोली की पीठ ने शुक्रवार को एक वकील से फ्रीज के खिलाफ याचिका को तात्कालिकता के आधार पर उठाने का अनुरोध किया। वकील ने कहा कि चुनावी सूची से हटाए गए लोगों के खिलाफ कई अपीलें अभी भी लंबित हैं और चुनाव आयोग ने 9 अप्रैल को सूची को फ्रीज कर दिया है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, "हम 13 अप्रैल को याचिका पर विचार करेंगे।"

बंगाल की 44 सीटों पर हटाए गए मतदाता 2021 की जीत के अंतर से ज्यादा

राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता : बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के अंतिम प्रकाशन के बाद चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक राज्य की 293 विस सीटों में से 15% यानी 44 सीटों पर हटाए गए मतदाता 2021 के चुनाव में जीत के अंतर से अधिक है। राज्य में कुल 294 सीटें हैं, लेकिन दिनहाटा सीट को इस विश्लेषण से बाहर रखा गया है क्योंकि वहां परिणाम डाक मतपत्रों से तय हुआ था, यह प्रक्रिया ईवीएम मतदाताओं पर लागू थी।

विश्लेषकों का मानना है कि जिन सीटों पर हटाए गए मतदाताओं की संख्या जीत के अंतर से ज्यादा है, वहां इस बार चुनावी परिणामों पर बड़ा असर पड़ सकता है।

बंगाल में अब अकेले चुनाव लड़ेगी ओवैसी की एआइएमआइएम

राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता : बंगाल में विस चुनाव के बीच असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी आल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआइएमआइएम) ने हुमायूं कबीर की आम जनता उन्नयन पार्टी (एजेयूपी) से गठबंधन तोड़ने का एलान कर दिया। यह फैसला एक कथित वीडियो सामने आने के बाद लिया गया, जिसमें कबीर को भाजपा के साथ गुप्त समझौता करते दिखाया गया। बता दें कि तृणमूल कांग्रेस ने गत गुरुवार को एक कथित वीडियो जारी कर हुमायूं कबीर पर भाजपा के साथ गुप्त समझौते का आरोप लगाया। वहीं हुमायूं कबीर ने वीडियो को फर्जी और एआइ से तैयार बताया है। जागरण ने ऐसे वीडियो की सत्यता की पुष्टि नहीं की है।

बंगाल के लिए भाजपा का संकल्प पत्र जारी करते हुए गृह मंत्री अमित शाह बोले-

बंगाल में सरकार बनने के छह माह में लाएंगे यूसीसी

नीलू रंजन • जागरण

कोलकाता: सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने व घुसपैठियों को चुन-चुनकर बाहर निकालने के वादे के साथ अमित शाह ने भाजपा की सरकार बनने पर छह माह के भीतर बंगाल में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का भरोसा दिया है। बंगाल चुनाव के लिए संकल्प पत्र जारी करते हुए भय की जगह भरोसे की स्थापना का वादा किया। 'भरसार शपथ' (भरोसे की शपथ) नाम से जारी संकल्प पत्र में सत्ता में आने पर घुसपैठ के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने, हर महिला व बेरोजगार युवा को 3,000 रुपये मासिक सहायता देने व 45 दिन में राज्य के कर्मियों के लिए सातवां वेतन आयोग लागू करने का वादा किया।

घुसपैठ व जनसांख्यिकी परिवर्तन से बंगाली अस्मिता के अस्तित्व पर संकट की आशंका जताते हुए शाह ने इससे मुक्ति दिलाने के साथ ही छह माह में यूसीसी लागू करने का भरोसा भी दिया।

संकल्प पत्र को सोनार बांग्ला के निर्माण का रोडमैप बताया। वहीं, ममता की ताकत मानी जा रही महिला मतदाताओं को लुभाने को बड़ा दांव खेला है। इन्हें प्रति माह 3,000 रुपये व नौकरियों में 33% आरक्षण दिया जाएगा। केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा, महिला पुलिस बटालियन का गठन व सरकारी बसों में महिलाओं को मुफ्त यात्रा भी शामिल है।

कोलकाता में भाजपा का संकल्प पत्र जारी करते केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य और बंगाल विस में नेता विपक्ष सुवेंदु अधिकारी• प्रेट्र

बाबरी बनाने वालों से समझौते से बेहतर 20 साल विपक्ष में बैठेंगे

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : गृह मंत्री शाह ने आम जनता उन्नयन पार्टी के प्रमुख हुमायूं कबीर से जुड़े स्टिंग विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए दो टूक कहा कि भाजपा सत्ता के लिए किसी भी कीमत पर बाबरी मस्जिद बनाने वालों से समझौता (गठबंधन) नहीं करेगी। कहा-हम बंगाल में बाबरी मस्जिद बनाने वाले से कोई समझौता करने के स्थान पर अगले 20 साल तक विपक्ष में बैठना पसंद करेंगे।

भाजपा के अन्य प्रमुख संकल्प

- सरकारी कर्मचारियों के लिए 45 दिन के भीतर 7वां वेतन आयोग लागू होगा।
- सुरक्षा के लिए घुसपैठ पर कार्रवाई।
- छह माह में समान नागरिक संहिता व गो-तस्करी रोकने को कड़े कानून।
- किसानों को 9,000 रुपये सालाना और एमएसपी बढ़ाने का भी वादा।
- सिंडिकेट गतिविधियों का अंत कर कट मनी संस्कृति पर रोक लगाएंगे।
- कुर्माली व राजबंशी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाएगा।
- मछुआरों का पीएम मत्स्य संपदा योजना के तहत पंजीकरण होगा।
- केंद्र की सभी योजनाएं लागू होंगी। एम्स, आइआइटी व आइआइएम बनेंगे।
- धार्मिक आस्था व पूजा पद्धति की स्वतंत्रता हेतु कानून बनाया जाएगा।

'हसीना को शरण व अदाणी को फायदा, भाजपा का संकल्प पत्र एक जुमला'

राज्य ब्यूरो, जागरण : तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव व सांसद अभिषेक बनर्जी ने गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए शुक्रवार को जारी भाजपा के संकल्प पत्र को 'धोखाधड़ी का दस्तावेज करार' देते हुए हमला बोला।

एक संवाददाता सम्मेलन में अभिषेक ने केंद्र से पूछा कि आखिर किस उद्योगपति के हितों की रक्षा के लिए बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को डेढ़ साल से दिल्ली में शरण दी गई है? सीधा आरोप लगाया कि भाजपा की नीतियां आम जनता के लिए नहीं, बल्कि विशेष पूंजीपतियों व अदाणी समूह को लाभ पहुंचाने के लिए बनी हैं।

अभिषेक ने एक पुरानी तस्वीर साझा करते हुए दावा किया कि बंगाल के कोयला माफिया जयदेव खां हवाई अड्डे पर खुद अमित शाह का स्वागत कर रहे थे। महिलाओं व बेरोजगारों को 3000 रुपये मासिक भत्ता देने के वादे को अभिषेक ने नया जुमला बताया।

संसद सत्र से पहले होगी विपक्षी नेताओं की बैठक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कांग्रेस ने अपने आरोपों को दोहराया है कि सरकार पांच राज्यों के चुनाव के बीच संसद का विशेष सत्र 16 से 18 तक बुलाकर महिला आरक्षण के नाम पर श्रेय लेना चाहती है, जबकि महिला आरक्षण कोई मुद्दा ही नहीं है। सांसद एवं पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने इसे पश्चिम एशिया संकट से ध्यान भटकाने का प्रयास बताने के साथ ही आशंका जताई कि सरकार बिना जनगणना के जो परिसीमन करना चाहती है, उससे छोटे राज्यों को नुकसान होगा।

कांग्रेस मुख्यालय में शुक्रवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई। बैठक में रणनीति बनाने के लिए विपक्षी नेताओं की संयुक्त बैठक बुलाने का निर्णय लिया।

उत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

निविदा सं.-46265132 के लिए भारत के राष्ट्रपति की ओर से उनके लिए कार्यरत सहायक सामग्री प्रबंधक के द्वारा ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। विवरण निम्न प्रकार है:-

1	कार्य का नाम : Fielded magnet frame (Stator) complete for EMU/MEMU traction motor Type 4601 BX
2	कार्य की अनुमानित लागत : रु. 2,97,36,000/-
3	मात्रा : 18 नग
4	निविदा की बोली प्रस्तुत (जमा) करने की तिथि एवं समय : 15.05.2026 (11:00 Hrs.)
5	निविदा दस्तावेजों को खोलने की तिथि एवं समय : 15.05.2026 (11:00 Hrs.)
6	वेबसाइट की विवरण, जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है : www.ireps.gov.in

टिप्पणी: (i) ई-निविदा प्रणाली में शामिल होने के लिए निविदादाता को भारतीय रेल ई-प्रापण प्रणाली (IREPS) साइट अर्थात् www.ireps.gov.in पर पंजीकृत होना चाहिए।
(ii) सभी नियमों एवं शर्तों के लिए कृपया निविदा दस्तावेज देखें।
(iii) कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं है।

एसएसटी सं.: 46265132 दिनांक: 10.04.2026 1218/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

छात्रों में बहेगी भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञान की 'गंगा'

नई दिल्ली, एएनआइ: एनसीईआरटी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए नौवीं के लिए हिंदी की नई पुस्तक जारी की है। 'गंगा' नामक इस पुस्तक में परशुराम-लक्ष्मण संवाद, रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य गाथा और रैदास के पद सरीखे पाठ हैं। यह पुस्तक छात्रों में भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से तैयार की गई है।

'गंगा' नामक यह पुस्तक भारतीय सभ्यता में नदी की प्रतिकात्मक भूमिका को दर्शाने के उद्देश्य से तैयार की है, जो अविरल प्रवाह और हिंदी भाषा के प्रसार को प्रतिबिंबित करती है। हिंदी की इस नई पुस्तक में रैदास के पद, राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद जैसे पाठ शामिल हैं।

एसआइआर के बाद उत्तर प्रदेश में घट गए 2.04 करोड़ मतदाता

राज्य ब्यूरो, जागरण, लखनऊ : मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) अभियान के बाद उत्तर प्रदेश में 2.04 करोड़ मतदाता घट गए हैं। इनमें 1.11 करोड़ महिलाएं व 93 लाख पुरुष मतदाता शामिल हैं। अभियान से पहले प्रदेश में 15.44 करोड़ मतदाता थे, जबकि अब 13.40 करोड़ मतदाता रह गए हैं। यानी कुल मतदाताओं की संख्या में 13.24 प्रतिशत कमी आई है। लखनऊ में सर्वाधिक 22.89 प्रतिशत मतदाता कम हुए हैं। पुरुषों के मुकाबले महिला मतदाताओं की संख्या अधिक कम हुई है। प्रति एक हजार पुरुषों के सापेक्ष अब 834 महिलाएं हो गई हैं, एसआइआर से पहले यह आंकड़ा 877 था।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा। जागरण

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने शुक्रवार को अंतिम मतदाता सूची जारी करते हुए बताया कि 166 दिन चली एसआइआर की प्रक्रिया के बाद कुल 2,04,45,300 मतदाता कम हुए हैं। कुल 3.26 करोड़ मतदाताओं को नोटिस जारी किए गए थे। सुनवाई के बाद 3.50 लाख मतदाता संतोषजनक प्रमाणपत्र नहीं दे सके, इसलिए उनके नाम काटे गए हैं। शेष अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृतक व डुप्लीकेट मतदाताओं के नाम कटे हैं।

प्रतिशत के आधार पर देखा जाए तो गुजरात के बाद उत्तर प्रदेश दूसरा ऐसा राज्य है, जहां सबसे अधिक मतदाता कम हुए हैं।

आयोग ने बंगाल में एक ही दिन में हटाए 149 पुलिस अधिकारी

राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता : चुनाव आयोग ने बंगाल पुलिस में फिर व्यापक फेरबदल करते हुए एक ही दिन में 149 अधिकारियों का तबादला कर दिया है। इनमें 81 पुलिस इंस्पेक्टर व 68 सब-इंस्पेक्टर शामिल हैं। ये चुनाव ड्यूटी भी नहीं कर पाएंगे।

आयोग ने कहा है कि संबंधित पुलिस अधीक्षकों को मुचलका जमा करके यह बताना होगा कि स्थानांतरित किए गए पुलिस अधिकारी चुनाव संबंधी किसी भी गतिविधि से प्रत्यक्ष व परोक्ष तौर पर जुड़े नहीं हैं। मालूम हो कि आयोग इससे पहले कोलकाता के पुलिस आयुक्त, बंगाल पुलिस के महानिदेशक समेत कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का तबादला कर चुका है।

बंगाल में न्यायाधिकरण ने प्रत्याशी का नाम वापस मतदाता सूची में चढ़ाया

राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता : विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन की अंतिम तिथि से ठीक एक दिन पहले आम जनता उन्नयन पार्टी के प्रत्याशी केछबुद्दीन शेख को राहत भरी खबर मिली। नदिया जिले की कालीगंज सीट से चुनाव लड़ रहे केछबुद्दीन का नाम अपीलीय न्यायाधिकरण ने वापस मतदाता सूची में चढ़ा दिया। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) की प्रक्रिया में उनका नाम मतदाता सूची से हट गया था, जिसके बाद उन्होंने संबंधित न्यायाधिकरण में अपील की थी। केछबुद्दीन बंगाल में ऐसे तीसरे प्रत्याशी बन गए हैं, जिनका नाम मतदाता सूची से हटा दिया गया था, लेकिन न्यायाधिकरण के हस्तक्षेप के बाद सफलतापूर्वक बहाल हुआ है।

केछबुद्दीन का नाम मतदाता सूची में विसंगतियों और माता-पिता के साथ आयु अंतर के तकनीकी कारणों से हटाया गया था।

चुनावों में पीठासीन अधिकारी की भूमिका निभाने वाले का नाम कटा: बंगाल में 12 चुनावों में पीठासीन अधिकारी की भूमिका निभा चुके 72 वर्षीय सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षक एस अशरफुल हक का नाम भी मतदाता सूची से कट गया है।

दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग उत्तर प्रदेश
10वॉ तल इन्दिरा भवन अशोक मार्ग लखनऊ

प्रेस विज्ञप्ति

"दिव्यांगजन के सर्वांगीण पुनर्वासन हेतु स्वैच्छिक संस्थाओं को सहायता" योजनान्तर्गतअनुदान हेतु आवेदन-पत्रों काआमंत्रण

उत्तर प्रदेश में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में परिभाषित 21 प्रकार की दिव्यांगताओं (मानसिक मंदित एवं मानसिक रुप से रुग्ण दिव्यांगजन को छोड़कर) हेतु "दिव्यांगजन के सर्वांगीण पुनर्वासन हेतु स्वैच्छिक संस्थाओं को सहायता" योजनान्तर्गत निम्नलिखित 07 परियोजनाओं/कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु स्वैच्छिक संगठनों को सहायता अनुदान प्रदान किए जाने की व्यवस्था प्रदेश सरकार द्वारा की गयी है।

1. अर्ली इण्टरवेंशन सेन्टर।
2. डे केयर सेन्टर/प्री-प्राइमरी स्कूल।
3. प्राइमरी स्कूल स्तर के विशेष विद्यालयों का संचालन।
4. जूनियर हाईस्कूल स्तर तक के विद्यालयों का संचालन।
5. हाईस्कूल स्तर तक के विशेष विद्यालयों का संचालन।
6. कौशल विकास (अधिकतम 04 ट्रेड तथा न्यूनतम 02 ट्रेड)
7. पाठ्य सामग्री विकास एवं पुस्तकालयों का संचालन।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 के अन्तर्गत पंजीकृत प्रदेश के स्वैच्छिक संगठन जो सम्बन्धित क्षेत्र में अनुभव तथा उक्त योजना हेतु पात्रता रखते हों, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, उ0प्र0 की वेबसाइट http://uphwd.gov.in से प्रश्नगत योजना से सम्बन्धित कार्यकारी आदेश /दिशा-निर्देश व आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त कर सकते है।

इच्छुक स्वैच्छिक संस्थाएं "दिव्यांगजन के सर्वांगीण पुनर्वासन हेतु स्वैच्छिक संस्थाओं को सहायता" योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए अनुदान प्रस्ताव विलम्बतम दिनांक-15.05.2026 तक सम्बन्धित जनपद के जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी के कार्यालय में जमा कर सकते हैं। तत्पश्चात् जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी द्वारा जिलाधिकारी की संस्तुति से दिनांक-31.05.2026 तक निदेशालय को प्रेषित किये जायेंगे।

(डॉ0 अमित कुमार राय)
उपनिदेशक
दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग,
उत्तर प्रदेश।

UP-249671 दिनांक 10.04.2026 विज्ञापन वेबसाइट www.upgov.nic.in पर उपलब्ध है

वंदेमातरम् से ही सभी स्कूलों में होगी हर दिन की शुरुआत

अरविंद पांडेय • जागरण

- पूर्ण वंदेमातरम् गान को लेकर गृह मंत्रालय के आदेश के बाद शिक्षा मंत्रालय व यूजीसी ने जारी किए अमल के निर्देश
- सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को सांस्कृतिक आयोजनों पर पूर्ण वंदेमातरम गान के दिए सुझाव

नई दिल्ली: एक तरफ जहां बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए भरोसा पत्र जारी करे हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने वंदेमातरम् संग्रहालय बनाने का एलान किया, वहीं शिक्षा मंत्रालय ने सभी स्कूलों को निर्देश दिया है कि हर दिन वंदेमातरम् गान के साथ ही काम की शुरूआत हो। वह भी उस वंदेमातरम् गान के साथ जिसमें मूल गान के सभी छह छंद हैं और हाल ही में गृह मंत्रालय ने सभी विभागों को दिशा निर्देश जारी कर सभी छंदों के गाने की बात कही थी।

कुछ महीने पहले वंदेमातरम् रचना के डेढ़ सौ साल पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा नेताओं की ओर से इस बात की आलोचना की गई थी कि मूल गीत से उन छंदों को हटा लिया गया था, जिसमें मां दुर्गा का गान किया गया था। उसके बाद ही सरकार ने मूल गीत को प्रचारित करने का निर्णय लिया था। शुक्रवार को शिक्षा मंत्रालय ने उसी आदेश की प्रति के साथ शिक्षा मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने भी देश के सभी स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लिए इसके पालन का निर्देश दिया है।

बंकिम चन्द्र द्वारा रचित राष्ट्र गीत वंदेमातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यशामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बाले मां तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।

तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणा: शरीरे, बाहुते तुमि मां शक्ति,
हृदये तुमि मां भक्ति, तोमारई प्रतिमा गडि
मन्दिरे-मन्दिरे मातरम्। वन्दे मातरम्।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

जहां राष्ट्रगीत व राष्ट्रगान दोनों गाए जाने हो, वहां पहले हो राष्ट्रगीत : गृह मंत्रालय ने वंदेमातरम् को लेकर जारी प्रोटोकाल में यह साफ किया है कि जब राष्ट्र गीत व राष्ट्र गान दोनों गाए जाने हो, तो वहां पहले राष्ट्र गीत गाया या बजाया जाएगा। इसके साथ ही यह भी साफ किया है कि जब कभी राष्ट्र गीत का गायन या वादन हो, तब श्रोतागण सावधान मुद्रा में खड़े रहे।

कार्यालय: संयुक्त आयुक्त (वि. अनु.शा.) राज्य कर, संभाग- ए/बी नोएडा

नीलामी सूचना

सार्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राज्य कर, विभाग नोएडा की विभिन्न सचल दल इकाइयों द्वारा अभिग्रहीत निम्न माल/सामग्री की नीलामी की जानी है।

क सं	विवरण	नीलामी स्थल	अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क अधिकारी	धरोहर राशि का विवरण
1	परचून 179 नग	कार्यालय भवन सूरजपुर ग्रेटर नोएडा	सुश्री सुगन्धा सिंह सहायक आयुक्त मो. 7235002949	रु. 50000.00 का डिमांड ड्राफ्ट ASSISTANT COMMISSIONER MOBILE SQUAD 04 STATE TAX NOIDA
2	1740 जीन्स पेंट	उक्त	श्री सुरेन्द्र कुमार सहायक आयुक्त मो. 7235003620	रु. 5000.00 का डिमांड ड्राफ्ट ASSISTANT COMMISSIONER MOBILE SQUAD 05 STATE TAX NOIDA
3	अर्द्ध निर्मित तम्बाकू 5695 कि. ग्रा.	उक्त	श्री सुरेन्द्र कुमार सहायक आयुक्त मो. 7235003620	रु. 50000.00 का डिमांड ड्राफ्ट ASSISTANT COMMISSIONER MOBILE SQUAD 05 STATE TAX NOIDA
4	EDC MACHINE-52 नग DL1LT9578 VAN	उक्त	श्री सुरेश कुमार पाल सहायक आयुक्त 7235001941	रु. 10000.00 का डिमांड ड्राफ्ट ASSISTANT COMMISSIONER MOBILE SQUAD 06 STATE TAX NOIDA

उपरोक्त समस्त माल/सामग्री की नीलामी दिनांक 15.04.2026 दिन बुद्धवार को प्रात: 11.00 बजे से" जहां है जैसा है" के आधार पर की जायेगी। नीलामी में भाग लेने वाले केवल रजिस्टर्ड व्यापारीगण/व्यक्ति नियत तिथि व नियत स्थल (कालम संख्या 03 में वर्णित) पर नीलामी हेतु वर्णित वस्तु के समक्ष अंकित आवश्यक डिमांड ड्राफ्ट अपने साथ लेकर समय से प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें। नीलामी से सम्बंधित नियम व शर्तों की जानकारी सम्बंधित कार्यालय / दूरभाष पर किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 10.00 बजे से सांय 5.00 बजे प्राप्त की जा सकती है। नीलामी की वस्तु पर GST/टैक्स लगायी गयी बोली के अतिरिक्त देय होगा।

सहायक आयुक्त, राज्य कर,
सचल दल इकाई 4, 5, 6 नोएडा

हिन्दुस्तान
1936 सत्य • सार्थक • सदैव

देर से इस्तीफा

देश के एक दागदार न्यायमूर्ति का इस्तीफा भले देर से आया हो, पर यह स्वागतयोग्य है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे यशवंत वर्मा ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को अपना इस्तीफा सौंपते हुए गहरी पीड़ा का इजहार किया है। वैसे, यह कहने में हर्ज नहीं कि जिस वजह से यह इस्तीफा हुआ है, उससे सबसे ज्यादा पीड़ा देशवासियों को हुई है। पिछले वर्ष 14-15 मार्च को दिल्ली स्थित उनके आधिकारिक आवास पर बरामद बेहिसाब नकदी के आरोपों की संसदीय जांच चल रही थी और महाभियोग की तैयारी थी। इस इस्तीफे से अव्वल तो यह होगा कि संसदीय जांच या महाभियोग का विशेष महत्व नहीं रह जाएगा। यह बात गौर करने की है कि राष्ट्रपति को भेजे गए इस्तीफे में न्यायमूर्ति वर्मा ने किसी भी कारण का जिक्र नहीं किया है, पर कारण को समझना कठिन नहीं है। वैसे, यह इस्तीफा संसदीय जांच से पहले आ जाता, तो बेहतर होता। किसी न्यायमूर्ति की संसदीय जांच पूरी न्यायपालिका के लिए चिंता की बात है। प्रबल आशंका यही थी कि इस जांच के बाद संसद में महाभियोग लाकर न्यायमूर्ति को हटाया जाता। एक तरह से अच्छा ही है, अब महाभियोग की नौबत नहीं आएगी।

न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के इस्तीफे के साथ एक अप्रिय प्रकरण का पटाक्षेप जितना हमारी न्यायपालिका के लिए सुकूनदेह है, उतना ही लोकतांत्रिक मूल्यों के लिहाज से भी सुखद है।

दरअसल, संविधान ने न्यायपालिका में सेवारत लोगों को कुछ विशेष सुविधाएं दे रखी हैं, ताकि न्याय की प्रक्रिया निष्पक्ष एवं निर्भय ढंग से पूरी हो। यदि इन सुविधाओं या विशेषाधिकारों के दुरुपयोग की छोटी शिकायत भी होती है, तो यह न्यायपालिका के लिए बहुत गंभीर बात है। संविधान ने तो पूरे विश्वास के साथ एक न्यायाधीश को इतनी सुरक्षा दी है कि उसे हटाना स्वयं न्यायाधीशों या सांसदों के लिए भी आसान नहीं है। यहीं बाबा साहब भीमराव आंबेडकर की याद आती है, जिन्होंने संविधान निर्माण के समय ही 25 नवंबर, 1949 को सबको चेताया था कि संविधान कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि उसे लागू करने वाले लोग बुरे या अयोग्य होंगे, तो वह अंततः बुरा साबित होगा। बाबा साहब की यह बात सदा सही साबित होगी। संविधान से चलने वाले देश में अच्छे लोगों की जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। सावधान, बुरे तत्वों को यदि किनारे नहीं किया जाएगा, तो हमारा संविधान भी हाशिये पर चला जाएगा। अभी भी न्यायपालिका पर लोगों को सर्वाधिक भरोसा है और उसमें सेवारत विभूतियों की जिम्मेदारी है कि वे न्याय पर विश्वास बनाए रखें।

काश! ऐसा हो पाता कि लोकसभा अध्यक्ष को जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति बनाने की जरूरत नहीं पड़ती। बहरहाल, दागी जजों को हटाने की प्रक्रिया आसान होनी चाहिए। गौर करने की बात है, इस मामले की सर्वोच्च न्यायालय ने आंतरिक जांच कराई थी, जिसमें न्यायमूर्ति वर्मा के स्पष्टीकरण को असंतोषजनक माना गया था। क्या सर्वोच्च न्यायालय के पास यह अधिकार नहीं होना चाहिए कि वह शक की स्थिति में किसी न्यायाधीश को सेवा से अलग कर सके? यह विडंबना है, सर्वोच्च न्यायालय ने कार्रवाई के लिए कार्यपालिका को सूचित किया और तब मामला विधायिका तक पहुंचा। यहां यह कहने में हर्ज नहीं कि विधायिका की कार्यप्रणाली सुस्त रही और देश में सवाल उठते रहे। बेशक, ऐसे मामलों में त्वरित निर्णयों की जरूरत है और इसके लिए जरूरी विधायी संशोधन जल्दी होने चाहिए। दाग या दोष की किसी आशंका का त्वरित और कड़ी कार्रवाई से ही पटाक्षेप किया जा सकता है। इस देश की असली ताकत अर्थात आम आदमी को न्यायपालिका के दामन पर एक छोटा दाग भी मंजूर नहीं है।

भारत के पथ-प्रदर्शक ज्योतिराव फुले

नरेंद्र मोदी | प्रधानमंत्री, भारत

वह कहते थे, 'बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं।'

आज 11 अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। भारत के महान समाज सुधारकों में से एक और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की आज जन्म-जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके 200वें जयंती-वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है।

महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म-चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। उन्हें केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्म-विश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ था, मगर शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। बचपन से ही महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वह कहते भी थे, 'हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।' साफ है, बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही।

उनके जीवन में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण मिशन बनी। महात्मा फुले का मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वह कहते थे, 'बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं।' उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बनाया।

अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वह मानते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए, उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

महात्मा फुले ने कहा था, *जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिळत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिळत नाही,* यानी जब तक समाज के सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इस विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्य-शोधक समाज आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना।

उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लगातार लोगों के बीच रहकर काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा, लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी। गंभीर स्ट्रोक के बाद भी उन्होंने अपना काम और समाज के लिए संघर्ष जारी रखा। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं। महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वह स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। सन् 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वह स्वयं भी इस बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया।

भारतभूमि बार-बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। महात्मा फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे। मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने शहर में महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके 200वें जयंती-वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से खुद को बेहतर बना सकता है।

महात्मा फुले का जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

समान नागरिक संहिता अर्थात यूसीसी की चर्चा फिर तेज हो गई है। यह एक ऐसा अधूरा काम है, जिसे संविधान निर्माताओं ने भविष्य के लिए छोड़ दिया था। समान संहिता कैसी बननी चाहिए? सुधार के पक्ष में तो सभी हैं, लेकिन सुधार को थोपे जाने के विरोध पर भी गौर करना चाहिए।

एक कानून के चक्कर में कहीं पहचान खो न जाए

इमरान प्रतापगढ़ी | सांसद, राज्यसभा

समान नागरिक संहिता के प्रति भारतीय जनता पार्टी का दृष्टिकोण संवाद का नहीं, बल्कि एक छिपे हुए आदेश का है। जिस तत्परता से इसे आगे बढ़ाया जा रहा है, उसे देखते हुए एक सीधा सवाल उठता है- अभी क्यों? बिना सहमति बनाने की धैर्यपूर्ण प्रक्रिया के, राज्य-दर-राज्य यह आग्रह क्यों? इसका उत्तर सुधार में नहीं, राजनीति में निहित है।

'एक देश, एक कानून' का नारा सुनने में आकर्षक लग सकता है, पर इसके भीतर एक गहरी चिंता छिपी है। भारत जैसे विविधरंगी देश में एकरूपता कभी निष्पक्ष नहीं होती। वह हमेशा किसी-न-किसी चयन का परिणाम होती है। आज कई नागरिक एक सरल प्रश्न पूछ रहे हैं- यह कानून किसका होगा? किन परंपराओं को इसमें स्थान मिलेगा? उत्तराखंड और गुजरात जैसे राज्यों में हाल के मॉडल ने इन चिंताओं को और गहरा किया है। ऐसे प्रावधान, जो निजी संबंधों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, यहां तक कि सहजीवन संबंधों के पंजीकरण को अनिवार्य बनाते हैं, राज्य के निजी जीवन में हस्तक्षेप को लेकर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। यह सुधार नहीं, दखल है।

इस बहस में एक और वर्ग है, जिसकी आवाज अक्सर अनसुनी रह जाती है- भारत का आदिवासी समुदाय। ये लोग लंबे समय से अपनी पारंपरिक व्यवस्थाओं के आधार पर जीवन जीते आए हैं, जो उनकी पहचान से अविभाज्य है। संविधान की छठी अनुसूची के प्रावधान इन परंपराओं की रक्षा करते हैं। फिर भी, एकरूपता की यह कोशिश एक मौन संदेश देती है कि विविधता कोई समस्या है, जिसे 'सुधारा' जाना चाहिए। मेरा सवाल यह भी है कि क्या संविधान बनने से लेकर अब तक समान नागरिक संहिता न होने से देश का कोई आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक नुकसान हुआ है? क्या किसी के पास इस तरह का कोई आंकड़ा है, जिसमें वह बता सके कि अगर समान नागरिक संहिता रही होती, तो हम यहां से वहां पहुंच गए होते? क्या कोई यह सिद्ध कर सकता है कि समान नागरिक संहिता का सीधा संबंध डॉलर की बढ़ती कीमत और रुपये के अवमूल्यन से है? क्या कोई मुझे समझा सकता है कि समान नागरिक संहिता न होने की वजह से ही भारत विश्वगुरु नहीं बन पा रहा? क्या कभी किसी देश ने सामरिक या व्यापारिक समझौते को इसलिए रोक दिया कि आपके देश में समान नागरिक संहिता नहीं है?

जहां भी विषमता है, उसे चुनौती दी जानी चाहिए। न्याय चयनात्मक नहीं हो सकता और न ही बिना वैधता के थोपा जा सकता है। यदि सुधार कुछ समुदायों को लक्ष्य बनाता हुआ प्रतीत हो और दूसरों को अनदेखा करता हो, तो वह अपनी विश्वसनीयता खो देता है। यदि उसे बिना परामर्श के लागू किया जाए, तो वह अपनी स्वीकार्यता खो देता है। वास्तविक परिवर्तन तब आता है, जब लोग सुधार के सहभागी बनते हैं, उसके विषय नहीं।

यहां हमारे दल (कांग्रेस) का दृष्टिकोण स्पष्ट है। हम सुधार के विरोधी नहीं हैं, मगर हम थोपे जाने के विरोधी हैं। हमारा मानना है कि जीवन के सबसे निजी पहलुओं को प्रभावित करने वाले कानून संवाद, सहभागिता और विश्वास से उत्पन्न होने चाहिए। जो कानून विश्वास के बिना लोगों के निजी जीवन में प्रवेश करता है, वह एकता नहीं बनाता। वह भय पैदा करता है। जो नीति लोगों से उनकी पहचान को त्यागने की अपेक्षा करती है, वह राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकती। वह उसे कमजोर करती है। यही वजह है कि हमारे पुरखों, संविधान-निर्माताओं ने भारतवर्ष की विविधता को ध्यान में रखते हुए सेना में भी अलग-अलग जाति, कुल, परंपरा व भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर अलग रेजिमेंट बनाए।

आमने-सामने

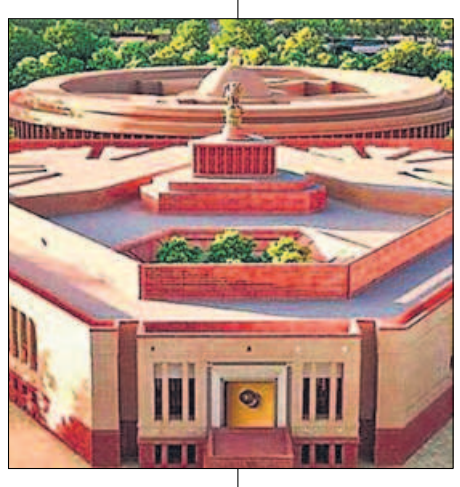

यूसीसी, यानी समान नागरिक संहिता के वर्तमान स्वरूप का मैं इसलिए विरोध नहीं करता कि मुझे परिवर्तन से डर है, बल्कि इसलिए कि मैं अपने देश को समझता हूं। यह देश इसलिए टिका रहा है, क्योंकि इसने अपने लोगों को स्वयं के साथ बने रहने की अनुमति दी है, जबकि वे एक बड़े समूह का हिस्सा भी हैं। यह संतुलन नाजुक है। इसे थोपकर कायम नहीं रखा जा सकता। मुझे लगता है कि 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' का नारा देने वाले इस संस्कृति की जड़ में मट्ठा डालने का काम कर रहे हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

समान नागरिक संहिता आज की बड़ी जरूरत

शेषाद्रि चारी | पूर्व संपादक, ऑर्गेनाइजर

समान नागरिक संहिता (यूसीसी) फिर खबरों में है। 6 अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी के 46वें स्थापना दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' के साथ-साथ इस अधूरे वायदे की भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस पर गंभीर और सकारात्मक बातचीत चल रही है। साल 2023 में भी प्रधानमंत्री ने संकेत दिया था कि सरकार यूसीसी पर गंभीरता से काम कर रही है। 22वें विधि आयोग ने भी इस बाबत सार्वजनिक और धार्मिक संस्थानों सहित तमाम साझेदारों से सुझाव मांगे थे। इसे तैयार किया जाना चाहिए। इसकी चर्चा संविधान के अनुच्छेद 44 में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के रूप में तो है ही, सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसका समर्थन किया है। उसने कहा था- समान नागरिक संहिता परस्पर विरोधी विचारधाराओं वाली विभिन्न निष्ठाओं को दूर करके राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देगी। निस्संदेह, समान नागरिक संहिता भारतीय संविधान के मूल सिद्धांत धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने का एक अनिवार्य प्रयास है, फिर भी इसे हमेशा धार्मिक चश्मे से देखा जाता है। इस पर बहस आजादी से पहले से चली आ रही है।

मैं यहां अक्तूबर 1840 की लेक्स लोकी रिपोर्ट का ज्यादा जिक्र नहीं करना चाहता, जिसने अपराधों, साक्ष्यों और अनुबंधों के लिए एकरूपता के महत्व पर जोर दिया। मगर 1941 में गठित बीएन राव समिति ने भी, जिसे उस समय हिंदू विधि समिति के नाम से जाना जाता था, सिफारिश की थी कि भारत सरकार अपने सभी नागरिकों के लिए एक 'समान नागरिक संहिता' अपनाए। उसका तर्क था कि इससे सभी नागरिकों के बीच, चाहे उनका धर्म कोई भी हो, राष्ट्रीय एकता और समानता को बढ़ावा मिलने में मदद मिलेगी। समिति ने यह भी सुझाव दिया था कि भारत के विभिन्न धार्मिक समुदायों के 'व्यक्तिगत कानून' प्रायः महिलाओं और अन्य कमजोर वर्गों के प्रति भेदभावपूर्ण रवैया रखते हैं।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी प्रत्येक धर्म के लिए अलग-अलग कानून की अवधारणा को खारिज करते हुए समान नागरिक कानून की वकालत किया करते थे, मगर विभाजन के बाद तीव्र धार्मिक ध्रुवीकरण को देखते हुए उन्होंने केवल हिंदू समाज के लिए समान कानून लाना उचित समझा। उन्होंने बीएन राव समिति की रिपोर्ट को हिंदू संहिता विधेयक के नाम पर लागू किया, जो केवल हिंदू समुदाय पर लागू होता था। इस कवायद का कई हिंदू नेताओं ने विरोध किया, जिनमें तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद, कांग्रेस अध्यक्ष व गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक गुरुजी गोलवलकर शामिल थे। उनके तर्क थे कि व्यक्तिगत कानूनों में सुधार धार्मिक समूहों द्वारा ही बढ़ाया जाना चाहिए, वह भी बाहरी कानूनों के बजाय आंतरिक सामाजिक सुधारों के माध्यम से।

यह समझना चाहिए कि यूसीसी का उद्देश्य उन विभिन्न कानूनों की जगह लेना है, जो एक-दूसरे के साथ बेमेल हैं और वर्तमान में विभिन्न धार्मिक समूहों पर लागू हैं। यह सभी के लिए एकसमान कानूनी ढांचा होगा। इन कानूनों में हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, भारतीय ईसाई विवाह अधिनियम, भारतीय तलाक अधिनियम, पारसी विवाह और तलाक अधिनियम शामिल हैं। सच यही है कि शरिया (इस्लामी कानून) जैसे कुछ कानून अब तक संहिताबद्ध नहीं किए जा सके हैं, और वे पूरी तरह से मजहबी किताबों की मौलवियों द्वारा की गई व्यक्तिगत व्याख्या पर ही आधारित हैं।

यूसीसी में जो प्रस्ताव है, उनमें एक-विवाह, बेटे और बेटी को पैतृक संपत्ति में समान उत्तराधिकार, लैंगिक न्याय और वसीयत, दान, धार्मिक मामलों, अभिभावकत्व और बच्चों की कस्टडी साझा करने से जुड़े कानून होंगे, जो लैंगिक भेदभाव से परे और धर्म-निरपेक्ष होंगे। 'ईसाई' पश्चिमी देश, 'कट्टर' इस्लामी मुल्क और 'उदार' यूरोपीय राष्ट्रों के विपरीत, भारत धर्मों को परस्पर विरोधी नहीं मानता, बल्कि सभी का समान भाव से सम्मान करता है। हिंदू समाज ने बदलावों को स्वीकार किया है, अन्य धार्मिक समूहों को भी समय के साथ बदलना चाहिए। ऐसे बदलावों को 'इस्लामोफोबिया' के रूप में देखना गलत होगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 11 अप्रैल, 1951

कांग्रेस का अनुशासन

कांग्रेस देश का सब से बड़ा और प्रभावशाली संगठन है। उसी पर केन्द्रीय और विभिन्न राज्यों के शासन तंत्रों को संचालित करने का दायित्व है। आज देश में कोई ऐसा दूसरा राजनीतिक संगठन नहीं है, जो उसका स्थान ले सके। देश के शासन को स्थिरता प्रदान करने के लिए यह जरूरी है कि कांग्रेस के प्रभाव और महत्व को कम न होने दिया जाये। कांग्रेस जब देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रही थी, तब उसके सामने एक ही उद्देश्य था। उसे हासिल करने के लिए त्याग और बलिदान की आवश्यकता थी। कांग्रेस जनता की निगाह में आदर और सम्मान दिला सकती थी, किन्तु इसके अलावा उसके पास देने को और कुछ न था। कांग्रेस के हाथों में जब से शासन सत्ता आई है, और वह लोगों की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने, धन और सत्ता सुलभ करने का माध्यम बन गई है, कांग्रेस का पुराना स्वरूप बदलता जा रहा है। कांग्रेसजनों और कांग्रेस संस्थाओं में अनुशासन की भावना शिथिल होती जा रही है, आपसी प्रतिस्पर्द्धा वृद्धि पर है और दलबंदियों का बोलबाला है। यह सब कांग्रेस की प्रतिष्ठा को घटाने और उसकी कार्यक्षमता को कम करने में सहायक हो रहा है। कांग्रेस हाई कमाण्ड के लिए यह चिन्ता का विषय है कि कांग्रेस संगठन की उसकी आन्तरिक दुर्बलताओं से किस प्रकार रक्षा की जाये और उसे पहले की भांति राष्ट्र-सेवा का शक्तिशाली माध्यम बनाये रखा जाये।

कांग्रेस कार्यसमिति ने अपनी हाल की बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा कांग्रेसजनों, कांग्रेस कमेटियों और कांग्रेस पार्लमेंटरी पार्टियों के सदस्यों पर अनुशासन का महत्व अंकित किया है। समिति का कहना है कि इस समय, जबकि देश कठिन समय से गुजर रहा है, कांग्रेसजनों में अनुशासन कायम रहना विशेष रूप से आवश्यक है। अनुशासनहीनता फूट की शक्तियों को प्रोत्साहन देती है। इससे कांग्रेस जिन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए प्रयत्नशील है, उनके मार्ग में बाधा होती है। कांग्रेस कार्य समिति का यह निर्णय है कि कांग्रेस के अन्तर्गत अलग दल कायम नहीं किये जा सकते। उसने कांग्रेसजनों से मांग की है कि वे कांग्रेस अथवा कांग्रेसी सरकारों की नीतियों की आलोचना या निन्दा न करें। समिति ने पार्टी अथवा कमेटी की बैठकों में कांग्रेसजनों का आलोचना करने का अधिकार अवश्य स्वीकार किया है।

राजनीतिक भाषणों का गिरता स्तर चिंताजनक

इंसान जब निराश होता है या अपनी इच्छानुसार हालात को नियंत्रित नहीं कर पाता, तो यह हताशा उसके शब्दों और व्यवहार में झलकने लगती है। राजनीतिक परिदृश्य भी इस मानवीय कमजोरी से कभी अछूता नहीं रहा। फिर भी सार्वजनिक बयानों, संवाद में एक स्तर का ख्याल हमेशा रखा जाता था, मगर हाल के दिनों में कई बड़े नेताओं के बयानों में कटुता और अमर्यादित भाषा का प्रयोग देखने को मिला। राष्ट्रीय हो या अंतरराष्ट्रीय मंच, जहां संयम, गरिमा व संतुलन की सर्वाधिक अपेक्षा की जाती है, वहीं नेताओं की जुबान फिसलने लगी है। फिसलना कहना भी सही नहीं, शायद वे जान-बूझकर ऐसा करने लगे हैं। हालांकि, यह आचरण न केवल उनकी व्यक्तिगत छवि, बल्कि उस पद की गरिमा को भी ठेस पहुंचाता है, जिस पर वे आरूढ़ होते हैं। वैश्विक स्तर पर जहां ट्रंप जैसे नेताओं के बयानों में अशालीनता व सतहीपन देखने को मिल रहा है, वहीं भारत की राजनीति भी इस प्रवृत्ति से अब बच नहीं रही।

भारतीय राजनीति कभी अपने उच्च आदर्शों और मर्यादित संवाद के लिए जानी जाती थी, आज यह कटु भाषा के कारण चर्चा में रहती है। संसद से लेकर चुनावी मंचों तक, नेता अपने प्रतिपक्षियों के लिए गालियों का प्रयोग करने लगे हैं। चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष- दोनों ओर से शर्मनाक बयान सामने आते हैं, जो लोकतांत्रिक संवाद की गरिमा को कमजोर करते हैं। उनके इस आचरण से आम नागरिकों के बीच भी संवाद की संस्कृति कमजोर पड़ रही है। इसलिए यह आवश्यक है कि राजनीतिक दल और नेता आत्ममंथन करें और अपने आचरण में सुधार करें। यदि भारतीय राजनीति को संयम, मर्यादा और संवाद जैसे मूल्यों की ओर वापस लौटना है, तो राजनेताओं को अपने शब्दों की शक्ति और जिम्मेदारी, दोनों को समझना होगा। यही एक स्वस्थ, सशक्त और परिपक्व लोकतंत्र की पहचान होगी।

मुनीष भाटिया, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

भाषा की मर्यादा

नेताओं पर उंगली उठाने से पहले खुद सुधरिए

राजनेताओं का यह लोकतांत्रिक अधिकार है कि वे अपने विरोधियों की आलोचना करें, पर हिंसक शब्दों, अभद्र भाषा का प्रयोग और बेतुकी बयानबाजी का हक शायद किसी को नहीं है और न ही होना चाहिए। देश अभद्र भाषा का प्रयोग करने वाले नेताओं से पूछना चाहता है कि क्या आपको सभ्य भाषा का ज्ञान नहीं है? अभद्र टिप्पणी, छींटाकशी तो यही साबित करती है। यह सरासर अभिव्यक्ति की आजादी का दुरुपयोग है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए यह जरा भी उचित नहीं है। चुनाव आयोग को ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

राजनेताओं की अभद्र बयानबाजी या भाषा का प्रयोग कोई नई बात नहीं है। पिछले कई दशकों से ऐसा ही होता आ रहा है। आज की पीढ़ी तो शायद जानती भी नहीं होगी कि आपातकाल के समय इंदिरा गांधी को विरोधियों ने क्या-क्या बोला था? फिर स्यापा करने का क्या मतलब?

नेताओं द्वारा अभद्र भाषा का प्रयोग दुनिया भर में एक आम प्रवृत्ति है। इसका उपयोग अक्सर अपने राजनीतिक विरोधियों को नीचा दिखाने, ध्रुवीकरण करने या कट्टरपंथी समूहों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। गौर कीजिए, आज देश में वही नेता सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है, जो अपने विरोधियों की खिल्ली उड़ाता, उनके खिलाफ आक्रामक भाषण देता है या अपशब्दों का प्रयोग करता है। यह मैं कोई गलत नहीं कह रहा। राज्य-दर-राज्य आप लोकप्रिय नेताओं या मंत्रियों की सूची बनाइए, पाएंगे कि मीडिया भी उन्हें ही भाव देता है। लोग चटखारे लेकर उनको पढ़ते-सुनते हैं। फिर इसके लिए नेताओं को क्यों दोषी ठहराया जाए?

दुनिया को राष्ट्रपति ट्रंप का शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने अपने साथ-साथ अमेरिका के मूल चरित्र को बेपरदा कर दिया है। अमेरिका की हरेक सरकार, प्रत्येक राष्ट्रपति अपने सांविधानिक व्यवहार में ठीक ट्रंप सरीखा रहा है, वे सिर्फ अच्छे और लोकतांत्रिक होने का पाखंड रचते रहे। जूलियन असांजे के विकीलिक्स के जरिये सारे संसार को पता चल चुका है कि दुनिया की मोअज्जिज हस्तियों के प्रति अमेरिकी राष्ट्रपति और विदेश मंत्री कितनी छिछोरी और कामुक बातें करते थे। जाहिर है, उस खुलासे से भद्र समाज की भावनाओं को चोट पहुंची, पर सच्चाई यही है। आप कह सकते हैं कि अगर राजनेता और नौकरशाह यूं सार्वजनिक रूप से गाली-गलौज करने लगे, तब तो अराजकता फैल जाएगी। मेरा मानना है कि हालात को दुरुस्त करने की असली चाबी सिर्फ मतदाताओं के पास है। वे क्यों ऐसे लोगों को सुनने के लिए उमड़ पड़ते हैं, जो अशिष्ट हैं? नफरतियों, आपराधिक पृष्ठभूमि के लोगों को सरकार तो चुनाव नहीं जिताती? आप दागी सांसद, दबंग विधायक भी चुनेंगे और आपको निर्मल लोकतंत्र भी चाहिए? इस विरोधाभास से अगर समाज पहले खुद उबर जाए, तो देश की राजनीति अपने आप साफ-सुथरी हो जाएगी।

यही भारतीय समाज था, जिसमें किसी की ईमानदारी की कसमें खाई जाती थीं, आज उसको 'मूर्ख' समझा जाता है। सोचिए, कहां से चलकर कहां आ पहुंचे हैं हम, फिर उसमें दूसरों के लिए परवाह और अच्छा व्यवहार कहां दिखेगा?

महादेव सहनी, टिप्पणीकार

हल्के ई-वाहनों की बढ़ रही मांग

भारत में एक-तिहाई के लगभग उपभोक्ता ई-वाहनों की ताकत या क्षमता को लेकर चिंतित रहते हैं। भारी ई-वाहन कम दूरी तय करते हैं, तो हल्के ई-वाहनों की मांग का बढ़ना स्वाभाविक है। यही कारण है कि इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव कंपनियां ई-वाहनों को हल्का करने पर ध्यान लगा रही हैं। कैसे हो रहे हैं बदलाव? आइए जानें

ऑटोमोबाइल कंपनियां इलेक्ट्रिक वाहनों की दक्षता और ड्राइविंग रेंज में सुधार के प्रयासों को तेज कर रही हैं और इसके लिए वे 'लाइटवेटिंग' यानी हल्के कल-पुर्जों की रणनीति अपना रही हैं। दरअसल, इलेक्ट्रिक वाहन जितना भारी होगा, उसे स्थिर अवस्था से गति में लाने और उस गति को बनाए रखने के लिए मोटर को उतनी ही अधिक बिजली की खपत करनी पड़ती है।

इसी कारण ईवी निर्माता भारी स्टील की जगह एल्यूमीनियम और हाई-टेंसाइल स्टील जैसे हल्के मैटीरियल का इस्तेमाल कर रहे हैं, ताकि वजन कम कर ज्यादा रेंज हासिल की जा सके। लिथियम-आयन बैटरी के वजन के चलते आमतौर पर ईवी दूसरे आईसीई वाहनों से लगभग 20-30 फीसदी ज्यादा भारी हो जाते हैं। ऑटो विशेषज्ञों का मानना है कि यह रुझान और तेज होगा।

मुख्य तकनीकी बदलाव

हल्के पुर्जे और कार बॉडी : मिंट के एक लेख में नोमुरा रिसर्च इंस्टीट्यूट कंसल्टिंग एंड सॉल्यूशंस इंडिया में ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के ग्रुप हेड, हर्षवर्धन शर्मा बताते हैं कि ईवी में भारी बैटरी पैक के कारण वाहनों का वजन भी बढ़ता है और ओईएम यानी मूल उपकरण निर्माता कंपनियां अब चाहती हैं कि वाहन के पुर्जे आदि बनाने वाली कंपनियां चेसिस, बॉडी और पावरट्रेन सिस्टम में हल्के मैटीरियल का उपयोग करके इस वजन को कम करें।

वाहन की अनुमान से कहा जाए, तो वजन में 10 फीसदी की कमी से वास्तविक स्थितियों में 4-6 फीसदी का लाभ मिल सकता है। इसी लेख में बेलराइज इंडस्ट्रीज के जनरल मैनेजर स्वस्तिद कहते हैं कि अगर बैटरी इंजन से भारी है, तो चेसिस और अन्य बड़े हिस्से, (जिसे बीआईडब्लू -बॉडी इन वाइट) कहते हैं, वजन कम करने में मदद कर सकते हैं। इसीलिए उनकी कंपनी चेसिस और बीआईडब्लू में वजन घटाने के लिए हाई टेंसाइल टेक्नोलॉजी पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

वजन का असर

किसी भी वाहन का वजन जितना अधिक होता है, उसे स्थिर अवस्था से रफ्तार देने के लिए मोटर को उतनी ही ज्यादा ताकत लगानी पड़ती है। माना जाता है कि हर 100 किलोग्राम वजन बढ़ने पर ऊर्जा खपत लगभग 2-5 फीसदी तक बढ़ सकती है, जिससे रेंज कम हो जाती है। शहर के ट्रैफिक और पहाड़ी रास्तों में यह ज्यादा होता है।

क्या है बॉडी इन वाइट: बीआईडब्लू वाहन की संरचना में उपयोग हुए ऑटो पार्ट्स होते हैं, जैसे बॉडी साइड, फर्श और छत के पैनल। इस तकनीक में स्टील की मोटाई कम करके न केवल वजन कम होता है, बल्कि सुरक्षा में भी सुधार होता है, क्योंकि यह टक्कर के प्रभाव को सहन करने में बेहतर होता है।

पावरट्रेन-अग्नोस्टिक का भी एक तरीका है, हालांकि ईवी में इसकी मांग अधिक है, लेकिन ये समाधान आईसीई वाहनों के लिए भी दिए जा रहे हैं, क्योंकि इन वाहनों में इलेक्ट्रॉनिक्स फीचर्स का उपयोग बहुत बढ़ा है और भरमार दी जा रही है।

कुछ आंकड़े

- 38 फीसदी के लगभग भारतीय खरीदार रेंज एंग्जायटी यानी एक चार्ज पर कम दूरी के सफर के डर को ईवी न खरीदने का मुख्य कारण बताते हैं, डेलॉयट के 2026 ग्लोबल ऑटोमोटिव कंज्यूमर स्टडी के अनुसार।
- वर्तमान में, यात्री वाहन बाजार में ईवी फोर व्हीलर की हिस्सेदारी 5 फीसदी के लगभग और दोपहिया में 6 फीसदी है।

फीचर डेस्क

कहां-कैसे बदलाव

- फोर व्हीलर सेगमेंट की बात करें, तो सुजुकी का लक्ष्य है 2034 तक अपने वाहनों के वजन में 100 किलोग्राम तक कमी लाना। इसकी पहली झलक 2025-26 में आने वाली नई कारों में ही दिखना शुरू हो गई है। मारुति सुजुकी की इलेक्ट्रिक एसयूवी ई-विटारा, जिसे ईवीएक्स के नाम से कॉन्सेप्ट के तौर पर पेश किया गया था, को खास इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है, ताकि रेंज 500 तक या उससे ऊपर मिल सके।
- कुछ कंपनियां ईवी प्लेटफॉर्म के लिए एल्युमिनियम बैटरी एनक्लोजर का उपयोग कर रही है, जैसे महिंद्रा एंड महिंद्रा। महिंद्रा के इनग्लो प्लेटफॉर्म में यही फिलॉसफी देखने को मिलती है। जैसे महिंद्रा की एक्सईवी 9ई और बीई6। इस तरह स्टील की तुलना में वाहन के 40 फीसदी वजन को कम किया जा सकता है और 10 फीसदी तक की रेंज में बढ़ोतरी हो सकती है। टाटा के एक्टि .ईवी प्लेटफॉर्म के जरिए इस पर पहले से काम हो रहा है। टाटा की बहुत सी कारों में लाइटवेटिंग को ध्यान में रखा गया है।
- टूव्हीलर में टीवीएस ने अपने प्रीमियम इलेक्ट्रिक स्कूटर टीवीएस एक्स में एक्सलेटन फ्रेम का उपयोग किया है, जो एक कास्ट एल्यूमिनियम अलॉय फ्रेम है। इसे 2023 में लॉन्च किया गया, लेकिन डिलिवरी 2024 के अंत तक शुरू हुई। यह भारतीय ई-स्कूटर सेगमेंट में बड़ी तकनीकी उपलब्धि मानी जाती है।
- बजाज चेतक इलेक्ट्रिक स्कूटर अपने लाइटवेट कंस्ट्रक्शन के लिए चर्चा में रहा। इसमें एल्यूमिनियम डाइकास्ट पार्ट्स और हाई-ग्रेड इंजीनियर्ड प्लास्टिक्स का उपयोग वजन संतुलित करने के लिए किया जा रहा है।
- विडा वीएक्स2 प्लस में भी इसका इस्तेमाल हुआ है।

गैजेट्स

फोल्डेबल आईफोन को लेकर तेज तैयारी

एपल फोन पसंद करने वाले कम नहीं। अब कंपनी अपना पहला फोल्ड होने वाला फोन पेश करेगी। चर्चा है कि एपल इसे प्रीमियम लाइनअप के साथ लाने की तैयारी में है। यह डिवाइस कंपनी की नई तकनीक और डिजाइन के नए अंदाज को सामने ला सकता है।

कब आएगा बाजार में?

एपल के इस फोन को कंपनी की ओर से सितंबर की लॉन्च इवेंट में पेश किया जा सकता है। इस आयोजन में नया आईफोन 18 प्रो और आईफोन 18 प्रो मैक्स भी सामने आएंगे। फिलहाल इस पर काम चल रहा है और उत्पादन धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। शायद इसीलिए इसकी बिक्री की तिथि पूरी तरह निश्चित नहीं मानी जा रही। यह डिवाइस फ्लैगशिप सीरीज में बड़े बदलाव की योजना का हिस्सा है, जिसमें डिजाइन और यूजर अनुभव दोनों को नए स्तर पर ले जाने की तैयारी है।

क्या विशेषता होगी?

खास फीचर्स की बात करें, तो यह डिवाइस अन्य फोल्डेबल स्मार्टफोन्स जैसा जरूर होगा, लेकिन कुछ अहम सुधारों के साथ आ सकता है।

- इसमें ड्यूरेबिलिटी और स्क्रीन क्वालिटी से जुड़ी पुरानी समस्याओं को काफी हद तक बेहतर किया गया है, जिससे फोन खोलने पर क्रीज कम दिखाई दे सकती है।
- साथ ही, खुलने पर इसमें चौड़ा डिस्प्ले मिल सकता है, जो वीडियो देखने और गेमिंग के लिए ज्यादा बेहतर अनुभव देगा।
- इसके अलावा, एपल इस डिवाइस के लिए अपने आईओएस को भी खास तौर पर बेहतर बना सकता है, ताकि फोल्डेबल स्क्रीन पर एप्स और फीचर्स ज्यादा सहज तरीके से काम कर सकें।

रॉयल एनफील्ड की पहली ई-बाइक

रॉयल एनफील्ड ने फ्लाइंग फ्ली सी6 के साथ इलेक्ट्रिक बाइक सेगमेंट में कदम रखा है। ई-मोबिलिटी में यह कंपनी की पहली अहम पेशकश मानी जा रही है।

नई बाइक

इलेक्ट्रिक बाइक की दौड़ में अब रॉयल एनफील्ड ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज करा दी है। ईआईसीएमए 2024 में अपनी इलेक्ट्रिक बाइक फ्लाइंग फ्ली सी6 का कॉन्सेप्ट दिखाकर पहले ही सबका ध्यान खींच लिया था। इसमें विंटेज डिजाइन के साथ आधुनिक तकनीक और शहरी उपयोगिता का संतुलन देखने को मिलता है।

परफॉर्मेंस और चार्जिंग

फ्लाइंग फ्ली सी6 में लगभग 60 एनएम टॉर्क मिलता है, जो तेज रफ्तार पकड़ने और आसान राइडिंग में मदद करता है। 3.91 केडब्लूएच लिथियम-आयन बैटरी मिलती है। कंपनी के अनुसार इसे पूरा चार्ज करने में करीब सवा दो घंटे लगते हैं, जिससे यह जल्द ही दोबारा राइडिंग के लिए तैयार हो जाती है। बाइक की अधिकतम स्पीड 115 किमी प्रति घंटा और वजन मात्र 124 किलो है।

सुरक्षित राइडिंग के लिए

आगे की तरफ यूनिक गर्डर फोर्क दिया गया है, जो एक खास फ्रंट सस्पेंशन सिस्टम है। यह पहले रेट्रो बाइक्स में इस्तेमाल होता था और अब डिजाइन व स्टेबिलिटी के लिए आधुनिक बाइक्स में भी दिया जाता है। इसके साथ 90-सेक्शन ट्यूबलेस टायर मिलते हैं, जो अच्छी ग्रिप देते हैं और शहर की राइड को ज्यादा सुरक्षित व आरामदायक बनाते हैं।

मई से बाइक मिलना शुरू हो जाएगी। ऑनलाइन बुकिंग शुरू हो गई है।

डिस्क ब्रेक से लैस

बाइक में आगे 260 मिमी. डिस्क ब्रेक के साथ एबीएस और लीन-सेंसिटिव फीचर दिया गया है, जो मोड़ आने पर बाइक के झुकाव की स्थिति में ब्रेकिंग को नियंत्रित कर बेहतर स्थिरता देता है। पीछे 220 मिमी. डिस्क ब्रेक है। यह सिस्टम शहर और हाईवे, दोनों में स्थिर राइडिंग में मदद करता है।

क्या कीमत

बाइक की एक्स-शोरूम कीमत 2.79 लाख रुपये रखी गई है, जबकि बैटरी एज ए सर्विस मॉडल के तहत इसे 1.99 लाख रुपये में खरीदा जा सकेगा।

कौन-कौन से रंग: यह बाइक दो रंगों में मिलेगी - स्टॉर्म ब्लैक और फ्ली ग्रीन।

- प्रशांत

कम ईंधन में ज्यादा सफर की तरकीबें

पेट्रोल-डीजल के बढ़ते खर्च के बीच हर कोई चाहता है कि उसकी गाड़ी ज्यादा से ज्यादा माइलेज दे। हमारी रोजमर्रा की कुछ छोटी-छोटी गलतियां ही माइलेज को धीरे-धीरे कम कर देती हैं। इन्हें समय रहते सुधारा जाए, तो किफायती ढंग से माइलेज बढ़ा सकते हैं

टिप्स

अक्सर गाड़ी चलाते समय हम कुछ ऐसी आदतें अपना लेते हैं, जो सामान्य लगती हैं, लेकिन धीरे-धीरे इंजन की परफॉर्मेंस और ईंधन दक्षता को प्रभावित करने लगती हैं। यही कारण है कि समय के साथ माइलेज कम होने लगता है। इन आदतों से बचने के लिए कुछ बदलाव जरूरी हैं, जैसे -

क्लच का सही इस्तेमाल करें : गाड़ी चलाते समय क्लच को पूरी तरह दबाकर और सही समय पर धीरे-धीरे छोड़कर चलाने से इंजन पर दबाव कम पड़ता है और ईंधन की बचत होती है। अचानक क्लच छोड़ने से इंजन पर झटका लगता है और ईंधन ज्यादा लगता है।

कम दूरी का सफर हो तो : अगर आप 1-2 किलोमीटर के छोटे-छोटे काम के लिए बार-बार गाड़ी निकालते हैं, तो हर बार इंजन को दोबारा स्टार्ट करना पड़ता है और वह पूरी तरह गर्म नहीं हो पाता। ऐसे में ज्यादा ईंधन खर्च होता है और माइलेज कम हो जाता है।

टायर प्रेशर सही रखें : टायर में सही मात्रा में हवा रखने से गाड़ी सड़क पर बेहतर पकड़ बनाती है और अनावश्यक घर्षण कम होता है। इससे इंजन को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती और ईंधन की खपत घटती है, माइलेज बेहतर मिलता है।

सहज गति से गाड़ी चलाएं : तेज एक्सीलरेशन करने और अचानक ब्रेक लगाने से गाड़ी पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है और ज्यादा ईंधन खर्च होता है। अगर आप एक समान और स्मूद स्पीड में गाड़ी चलाते हैं, तो इंजन स्थिर तरीके से काम करता है और माइलेज बढ़ जाता है।

समय पर सर्विसिंग कराएं : गाड़ी की नियमित सर्विसिंग से इंजन, एअर फिल्टर और स्पार्क प्लग सही स्थिति में रहते हैं। इससे इंजन की कार्यक्षमता बनी रहती है और वह कम ईंधन में बेहतर परफॉर्म करता है, जिससे माइलेज अच्छा मिलता है।

गाड़ी में जरूरत से ज्यादा वजन रखने पर इंजन पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है और माइलेज तेजी से गिरता है।

विंडो और एसी का सही प्रयोग : हाई स्पीड पर खिड़कियां खोलने से ड्रैग बढ़ता है, जबकि जरूरत से ज्यादा एसी चलाने से इंजन पर अतिरिक्त लोड पड़ता है। दोनों का संतुलित इस्तेमाल जरूरी है।

श्वेता

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय और कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। विदेश यात्रा भी हो सकती है।

वृष : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। धैर्य रखें। परिवार के सहयोग से कारोबार का विस्तार हो सकता है। परिवार के किसी बुजुर्ग से धन की प्राप्ति हो सकती है।

मिथुन : आत्मसंयत रहें। धैर्य-शीलता बनाए रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिवार एवं शासन-सत्ता का सहयोग मिल सकता है। कारोबार के लिए यात्रा लाभप्रद रहेगी।

कर्क : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। वस्त्र उपहार में मिल सकते हैं। कारोबार में भी वृद्धि होगी।

सिंह : मन परेशान हो सकता है। आत्मविश्वास में भी कमी रहेगी। धैर्यशीलता बनाए रखें। सेहत के प्रति सचेत रहें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

कन्या : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। मीठे खानपान में रुचि बढ़ सकती है। सेहत का ध्यान रखें।

तुला : मन प्रसन्न रहेगा। कला और संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में बदलाव हो सकता है। खर्चों में बढ़ोतरी होगी।

वृश्चिक : आत्मविश्वास से भरपूर रहेंगे, परंतु धैर्यशीलता में कमी रहेगी। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के योग बन रहे हैं। स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

धनु : वाणी में मधुरता रहेगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। किसी मित्र के सहयोग से आय में भी वृद्धि हो सकती है।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि हो सकती है। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। भाग-दौड़ अधिक रहेगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

कुंभ : मन परेशान रहेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। सेहत के प्रति सचेत रहें। खर्चों की अधिकता हो सकती है। रहन-सहन कष्टमय रहेगा।

मीन : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। व्यर्थ के क्रोध एवं विवाद से बचें। संयत रहें। परिवार का साथ प्राप्त होगा। नौकरी में स्थान परिवर्तन हो सकता है। खर्चों की भी अधिकता रहेगी।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

11 अप्रैल, शनिवार, **शक संवत्:** 21, चैत्र (सौर) 1948 **पंजाब पंचांग:** 29, चैत्र मास प्रविष्टे 2083 **इस्लाम:** 22, शव्वाल, 1447, **विक्रमी संवत्:** वैशाख कृष्ण नवमी तिथि रात्रि 12.38 मिनट तक पश्चात दशमी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दोपहर 01.40 मिनट तक पश्चात श्रवण नक्षत्र, सिद्ध योग सायं 06.39 मिनट तक पश्चात साध्य योग। चंद्रमा मकर राशि में (दिन रात)।
सूर्य उत्तरायण। सूर्य उत्तर गोल। वसन्त ऋतु। प्रात: 09 बजे से प्रात: 10.30 मिनट तक राहुकालम्।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

हमारी दुकान पर दिन-प्रतिदिन कर्जा बढ़ता ही जा रहा है, जबकि आमदनी ठीक है।
- सुमित टोंक, अजमेर

- आपकी दुकान पूर्व मुखी है, उसका द्वार भी ठीक है। आप बैठते भी पूर्व मुखी हैं, जो द्वार की स्थिति के अनुसार ठीक है। आपने तिजोरी पीछे पश्चिम दिशा में रखी है, किंतु उसके ऊपर वाले फ्लोर पर वहां शौचालय बनाया है। यह वास्तु अनुसार गलत है। इसे वहां से हटा देना ही उचित होगा।
- शौचालय का सेप्टिक टैंक भी दुकान के अंदर दक्षिण दिशा में है। यह बहुत बड़ी गलती है और कर्ज बढ़ने का बड़ा कारण भी। इसे तुरंत बंद करवा दें, ताकि आपको लाभ हो।

वर्ग पहेली : 8295

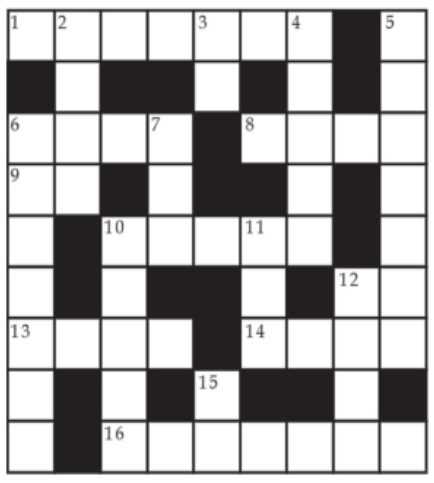

बाएं से दाएं
1. अनुरक्त करना; खींचना; प्रभावित करना (4,3)
6. खबर; विवरण; वृतांत; संवाद; सूचना; हाल (4)
8. अनुरूप; एक जैसा; मिलता जुलता; वैसा; सदृश्य; सरीखा (4)
9. माता; पराजय; हार (2)
10. जैसे-तैसे काम निकालना; काम को चलता रखना; निभाना (2,3)
12. एक माता से उत्पन्न; बहुत ही निकट का संबंधी; सहोदर (2)
13. शक्ति; सामर्थ्य; साहस (4)
14. भेंट; उपहार (4)
16. अयोग्यता दिखाना; निकम्मापन दर्शाना; मूर्खता झलकाना (4,3)

ऊपर से नीचे
2. करिश्मा; चमत्कार (4)
3. अनगढ़; अनुभवहीन; अधपका (2)
4. चूक जाना; लक्ष्यच्युत होना; विफल होना (3,2)
5. ज्ञात करना; खोज खबर लेना; ढूंढ़ना (2,2,3)
6. हल करना; रास्ता निकालना; राह ढूंढ़ना (4,3)
7. धन; राशि; संपत्ति (3)
10. स्वार्थ सिद्ध होना; काम पूरा होना (2,3)
11. लाड़ करना; प्यार करना (3)
12. पूरी तरह से; प्रत्यक्ष; बिल्कुल; साक्षात (4)
15. मत; विचार; सलाह (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8294

सुडोकू : 8277

*मध्यम

		5		2				
1					4			2
2			8		7	9		
4	5					8		6
3								9
7		2					5	4
		7	4		6			5
6			3					1
				8		3		

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8276

9	1	6	8	2	7	3	5	4
2	7	5	3	6	4	1	8	9
8	3	4	5	9	1	2	7	6
1	6	2	4	8	5	7	9	3
3	4	8	2	7	9	6	1	5
7	5	9	6	1	3	8	4	2
5	9	1	7	3	2	4	6	8
4	8	3	1	5	6	9	2	7
6	2	7	9	4	8	5	3	1

सबसे मूल्यवान काम दूसरों की जिंदगी में खुशी लाने की कोशिश करना है। -रॉबर्ट बैडेन पॉवेल

सख्त संदेश

उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित शास्त्री नगर के सेंट्रल मार्केट में अवैध निर्माणों पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को महज प्रशासनिक कार्रवाई के रूप में नहीं, बल्कि 'कानून के शासन' की पुनः स्थापना की दिशा में एक निर्णायक हस्तक्षेप के रूप में भी देखा जाना चाहिए। इसे स्थानीय स्तर पर फैली अव्यवस्था और अनियंत्रित शहरीकरण पर अंकुश लगाने की कोशिश के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसमें पूरे देश के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि नियमों की अनदेखी कर खड़े किए गए ढांचे बर्दाश्त नहीं किए जा सकते। उल्लेखनीय है कि देश के अधिकांश शहरों में अनधिकृत निर्माण एक गंभीर और पुरानी समस्या रही है। बढ़ती आबादी का दबाव, भूमि की बढ़ती कीमतें और नियोजन की कमजोरियों के बीच अक्सर लोग और व्यावसायिक प्रतिष्ठान नियमों को दरकिनार कर निर्माण कर लेते हैं। कई बार यह सब प्रशासन की मिलीभगत या उसकी निष्क्रियता के कारण संभव हो पाता है। ऐसे में, न्यायपालिका का हस्तक्षेप पूरे तंत्र को आईना दिखाने जैसा है। ताजा मामला रिहायशी प्लॉटों को बिना अनुमति के व्यावसायिक जगहों में बदलने और अधिकारियों द्वारा उनके खिलाफ कार्रवाई न करने से जुड़ा है। अदालत ने न सिर्फ मेरठ विकास प्राधिकरण और आवास विकास परिषद की लापरवाही पर नाराजगी जताते हुए फटकार लगाई, बल्कि कुल 859 अवैध सेटबैक (जरूरी खुली जगह) निर्माणों को ध्वस्त करने का आदेश दिया। अदालत ने उचित ही कहा कि प्रशासन की लापरवाही के कारण ही अवैध निर्माण इतने बड़े स्तर पर बढ़े हैं, जिसे रोकने के लिए सख्त कार्रवाई जरूरी है। कोर्ट का यह कहना भी बिल्कुल दुरुस्त है कि किसी की जिंदगी की कीमत पर व्यवसाय नहीं चल सकता। बेशक सील संपत्तियों में अवैध तरीके से चल रहे छह स्कूल, छह अस्पताल, आदि के कामकाज प्रभावित होंगे, पर अगर इन्हें जुर्माना वसूल कर वैध ठहराया जाएगा, तो पूरे देश में अराजकता फैल सकती है। चूंकि, पूरे देश में अवैध निर्माण हो रहे हैं, इसलिए इन्हें हतोत्साहित करना स्वागतयोग्य कदम है। अवैध निर्माण से न केवल

सुनियोजित विकास के नियम का उल्लंघन होता है, बल्कि कानून के राज के समानांतर एक भ्रष्ट तंत्र को पनपने का भी अवसर मिलता है। अदालत के इस फैसले से न केवल अवैध एवं अनधिकृत निर्माण करने वाले व्यवसायियों को सबक मिलेगा, बल्कि आवासीय परिसर एवं नगरों के सुनियोजित विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। लेकिन यह प्रशासनिक इच्छाशक्ति और नागरिक सहयोग के बगैर शायद ही संभव हो।

कभी खुश भी रहा करो

अगर खुश रहना एक सामाजिक प्रक्रिया है और ज्ञान की अवस्था है, तो फिर बम के धमाकों के बीच भी खुश रहा जा सकता है। मेरे-तुम्हारे के बीच भी, परीक्षाओं के परिणामों के बीच भी, अपने-परायों के इर्द-गिर्द भी।

लेख की शुरुआत शैलेंद्र के उस गीत से, *किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके, तो ले उधार...* युद्ध और तमाम तरह की अस्थिरता के बीच फंसी अपने दुखों में सिमटी इस दुनिया को कोई कैसे सिखाए कि सिर्फ पैसा ही नहीं, बल्कि दुख भी उधार में लिया जा सकता है। उधारी का दुख किसी की मुस्कुराहट का हिस्सा बनने की संभावना तय कर सकता है। तो फिर बटोरिए दुख और पूछिए अपने आप से कि ऐसे समय में भला खुश कैसे रहा जाए? क्योंकि तमाम परेशानियों के बीच और भविष्य की असुरक्षा में फंसे लोग एक सुरक्षित व सुकून भरा जीवन ही तो ढूंढ़ रहे हैं। आखिर अरस्तू भी मानते थे कि खुशी वह अंतिम लक्ष्य और सर्वोच्च उद्देश्य है, जिसे मनुष्य ढूंढ़ रहा है।

नन्दितेश निलय
स्पीकर, लेखक एवं एथिक्स प्रशिक्षक

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खुशी किसी रील से निकली, या स्क्रॉल करती हुई अंगुलियों में फंसी कोई अनुभूति नहीं होती और न ही उस स्क्रीन से चिपकी आंखों की धुंधलाती चमक। खुशी तो हर वह चिंता भी होती है, जो अपने-अपनों को, इनको-उनको स्वस्थ और सुरक्षित देखने की आशा रखती है। जब यह दुनिया कोविड जैसी महामारी में फंसी थी, तो हर पल हम सभी जीवन-मृत्यु के बीच खुश रहने की सारी संभावना को समाप्त होते देख रहे थे, क्योंकि जब जीवन ही नहीं बचेगा, तो फिर क्या खुशी, क्या दुख! पर मनुष्य तो मनुष्य ठहरा! उसे पता था कि इस दुनिया को वह बचा सकता है, और उसने अपने आप को मास्क में ढककर दूसरे के लिए भी सोचा। कोई हॉस्पिटल में रुका, तो कोई दूध पहुंचाने पहुंचा। कोई ऑक्सीजन सिलिंडर को पटरियों पर लेकर दौड़ा, तो कोई वैक्सीन। कुछ ऐसा ही हर उस व्यक्ति के साथ हुआ, जिसने किसी न किसी की जान कोविड में बचाई और दुनिया सबसे अंधेरे दौर से निकलकर खुशी की रोशनी ढूंढ़ पाई।

अब्राहम मैस्लो, जो एक अग्रणी अमेरिकी मनोवैज्ञानिक रहे, ने 'आवश्यकताओं के अपने पदानुक्रम या पिरामिड मॉडल' से यह बताना

चाहा कि हमारी खुशी या मोटिवेशन मुख्य रूप से उन पांच आवश्यकताओं की पूर्ति पर निर्भर है, जिनमें बुनियादी जरूरतें, सुरक्षा, जुड़ाव, सम्मान और आत्म-साक्षात्कार प्रमुख होते हैं। यह सुरक्षा और जुड़ाव का भाव इतना महत्वपूर्ण है कि कई बार हमें यह यकीन नहीं होता कि तमाम आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक सीमाएं होने के बावजूद कोई कंचनबाई मेघवाल, जो एक आंगनबाड़ी सहायिका थीं, अपनी जान की परवाह किए बिना उन बच्चों की ओर दौड़ पड़ेंगी, जिनको डंक मारने के लिए मधुमक्खियां सैकड़ों की संख्या में पहुंच चुकी थीं। कंचनबाई सीमाएं तोड़, अपनी साड़ी से सभी बच्चों को ढक देती हैं, और अपनी जान खोकर भी सभी बच्चों की जान बचा लेती हैं। जान बचाना या जिंदगी देना उस खुशी या प्रेरणा का ही हिस्सा होता है, जो सामाजिक संबंधों, गिलिगन के 'केयर' और डार्विन के 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' के सिद्धांत को बुनता है।

अब्राहम मैस्लो यह भी बताते हैं कि खुश रहने के लिए एक-दूसरे को सुरक्षित रखने और जुड़ाव के भाव के साथ सम्मान व आत्म-साक्षात्कार का भाव भी होना चाहिए। आखिर खुशी ही वह मानवीय मूल्य है, जो हमें बार-बार यह याद दिलाता है कि आखिर हमारे जीवन का प्रयोजन क्या है। यह सवाल भी उठाता है कि हमारा आकलन सिर्फ उपयोगिता के आधार पर होना चाहिए या उस सादगी, विनम्रता और सद्भाव के आधार पर भी, जहां कोई अपने घमंड, स्वार्थ या अपनी लालच को जीवन जीने का दर्शन नहीं बनाता। तभी तो, अगर इतिहासकार हरारी को यह लगता है कि एआई सुपर इंटेलिजेंट बनकर अपने आप फैसले लेगा, तो हाजी अख्तर भी मानो हरारी को बताना चाहते थे कि खुद्दारी के साथ जीना और दूसरों को उनका हक देकर खुश होने का भाव किसी चैटबॉट के पास नहीं हो सकता।

हमेशा की तरह, उस दिन भी हाजी अपना कबाड़ बीन रहे थे, तभी उन्हें एक बोरी मिलती है, जिसमें कबाड़ और स्क्रैप होता है और जो उनको पिछली दिवाली पर एक व्यापारी से मिला था। उधर उस व्यापारी को पता नहीं था कि उनके गहने सफाई के दौरान बोरी में ही चले गए थे। जब उन्हें वह गहने नहीं मिले, तो निश्चित ही उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठे होंगे। पर हाजी अख्तर तो ऐसे थे, जैसे गहने कभी खोए ही नहीं थे। गहनों ने तो अपने आप को उनके पास महफूज रखा था। जिस दुनिया में किसी और के रुपये उठाने में कोई झिझक नहीं होती, वहां अगर सोने और चांदी मिल जाएं, जिनकी कीमतें आसमान छू रही हों, तब तो मैस्लो साहब भी यह मानेंगे कि बड़े-बड़े सूरमा भी सही फैसले लेने से चूक जाते हैं। लेकिन अपनी खुद्दारी और आत्म-सम्मान में हाजी नहीं चूके।

इस लेख को पढ़ते-पढ़ते शायद आपको भी महसूस होगा कि अच्छा होना और अच्छाई के भाव से सोचना, महसूस करना और जीना ही खुश रहने का वह गुण है, जिसमें सभी की खुशी की संभावना बनती है। अगर खुशी का संबंध अच्छाई से है, तो खुशी सिर्फ और सिर्फ अच्छे इन्सान के मोहल्ले में ही रहती है और भाईचारे के साथ सभी के जीवन में एक आशा संजोए रहती है। यह न भूलें कि खुश रहना भी एक मौलिक अधिकार है। पर जब एक गलत आचरण लिए व्यक्ति खुश रहता है, तो किसी भी समाज के लिए खुशी का स्वरूप ही बदल जाता है। वह मानवीय कम और कुछ वस्तु के माफिक बनने लगती है। फिर मनुष्य वस्तु बन उस खुशी पर ग्रहण लगा देता है। आखिर कवि नरेश सक्सेना जी ने ठीक ही कहा है कि चीजों के गिरने के नियम होते हैं, पर मनुष्यों के गिरने के कोई नियम नहीं होते। इसलिए खुशी का अभिनंदन तो तब है, जब अच्छाई के साथ इसको अपने जीवन में उतारा जाए। और आज के दौर में अपने वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए यही हमारी जिम्मेदारी भी है। समय यह प्रश्न बार-बार पूछेगा कि हमने अपने आप को कितना बेहतर इन्सान बनाया, अपने आसपास के सदस्यों के दुख-दर्द में कितनी हिस्सेदारी की, कितना उनको सुनना और समझना चाहा! अगर खुश रहना एक सामाजिक प्रक्रिया है और ज्ञान की अवस्था है, तो फिर बम के धमाकों के बीच भी खुश रहा जा सकता है। मेरे-तुम्हारे के बीच भी, परीक्षाओं के परिणामों के बीच भी, अपने-परायों के इर्द-गिर्द भी। ऐसे में, शैलेंद्र को भी गुनगुनाया जा सकता है, क्योंकि जो दूसरों का दुख महसूस कर सकता है, वही वास्तविक ज्ञानी है। और तभी खुश रहने की संभावना बढ़ती है, क्योंकि खुशी एक सामूहिक मूल्य है। गुलजार साहब की उस सलाह से, *मुस्कुराते बहुत हो तुम, कभी खुश भी रहा करो।*

edit@amarujala.com

पड़ोस

म्यांमार के संकटों का कोई अंत है?

म्यांमार की मौजूदा स्थितियों से साफ होता है कि स्थिरता लाने का सेना का प्रयास उल्टा भी पड़ सकता है और म्यांमार लंबे समय तक एक अंतहीन संघर्ष के चक्र में फंसा रह सकता है।

पश्चिम एशिया में बढ़ती उथल-पुथल के बीच म्यांमार की ओर दुनिया का ध्यान नहीं ही गया। यह मुद्दा वैश्विक बहस में दबकर रह गया। यह सेना (जुंटा) के लिए फायदे का सौदा बन गई और जुंटा प्रमुख मिन आंग ह्लाइंग म्यांमार के नए राष्ट्रपति बन गए। दरअसल, सेना द्वारा बनाए गए सख्त कानूनों के चलते लगभग सभी भरोसेमंद विपक्षी दलों को या तो चुनाव से बाहर कर दिया गया या उन्हें खुद ही हटने पर मजबूर होना पड़ा। इससे सेना के 'लोकतांत्रिक' दावे खोखले साबित होते हैं और जनता के अलगाव को और ही गहरा करते हैं।

दल-बदल, गिरते मनोबल और स्थानीय विद्रोहियों और अनियमित बलों पर बढ़ती निर्भरता की खबरें सेना के भीतर तनाव का इशारा करती हैं, भले ही नव निर्वाचित राष्ट्रपति केंद्रीकृत नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास करें। बीजिंग पर अत्यधिक निर्भरता भी म्यांमार की रणनीतिक स्वायत्तता को कम करने के साथ घरेलू असंतोष को जन्म दे सकती है। म्यांमार में लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं और गरीबी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में, नए राष्ट्रपति के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह जनता की जरूरतों को पूरा करने और उनका भरोसा जीतने का काम कैसे करेंगे। हालांकि, नियंत्रित राजनीतिक प्रक्रियाओं के जरिये स्थिरता लाने का सेना का प्रयास उल्टा भी पड़ सकता है। इससे हालात और बिगड़ने का खतरा है तथा म्यांमार लंबे समय तक एक अंतहीन संघर्ष के चक्र में फंसा रह सकता है।

केएस तोमर

भारत के लिए म्यांमार संकट तात्कालिक, बहुआयामी और गंभीर परिणामों वाला है। म्यांमार की सीमा भारत के संवेदनशील पूर्वोत्तर राज्यों से होकर गुजरती है। 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद से अब तक करीब 31,000 शरणार्थी मिजोरम में आ चुके हैं। साथ ही, सीमा पार हथियारों की तस्करी और नशीले पदार्थों का कारोबार भी बढ़ा है। म्यांमार भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति का अहम हिस्सा है और पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाली योजनाओं का मुख्य केंद्र भी। वहां जारी आंतरिक संघर्ष 'कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट' जैसी बड़ी परियोजनाओं के लिए खतरा बन रहा है। सशस्त्र प्रतिरोध समूह, जिनमें पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज और विभिन्न जातीय सशस्त्र संगठन शामिल हैं, जुंटा को कड़ी चुनौती दे रहे हैं। 2023 में 'थ्री ब्रदरहुड अलायंस' द्वारा शुरू किया गया 'ऑपरेशन 1027' इसका बड़ा निर्णायक मोड़ साबित हुआ। म्यांमार का चीन के प्रति बढ़ता झुकाव भी भारत के लिए रणनीतिक संतुलन बनाए रखने और क्षेत्रीय भूमिका को सीमित करने का खतरा पैदा करता है।

नई दिल्ली को एक संतुलित व व्यावहारिक रणनीति अपनानी होगी। एक ओर उसे नए राष्ट्रपति के साथ कामकाजी संबंध बनाए रखने होंगे, तो दूसरी ओर जातीय समूहों और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों से भी सतत संवाद जारी रखना होगा। उसे म्यांमार की स्थिति को दूरस्थ समस्या के रूप में देखने के बजाय अपनी आंतरिक सुरक्षा के विस्तार के रूप में समझना होगा। भारत के सामने असली सवाल यह नहीं है कि म्यांमार एक नए दौर में प्रवेश कर रहा है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या यह अगला चरण उसकी पूर्वी सीमाओं पर दीर्घकालिक अस्थिरता को बढ़ावा देगा।

तकनीक की तरक्की इसमें है कि वह हमारे जीवन में कुछ इस तरह घुल जाए कि हमें पता ही न चले। -बिल गेट्स

हर जवाब एक नया सवाल लेकर आता है

जब हम किसी रहस्य को सुलझाते हैं, तो हमारे सामने और भी गहरे रहस्य खुल जाते हैं। यही विज्ञान की सुंदरता है। यह एक ऐसी यात्रा है, जो कभी समाप्त नहीं होती। यह यात्रा हमें लगातार आगे बढ़ने, सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती है।

हम सबको अच्छी कहानी पसंद होती है। हम सब किसी रहस्य के पर्दे को हटते हुए देखना चाहते हैं। हम सब उस संघर्ष से जुड़ना चाहते हैं, जहां कोई साधारण-सा दिखने वाला नायक कठिनाइयों के बीच आगे बढ़ता रहता है। और सच तो यह है कि आधुनिक भौतिकी भी कुछ अलग नहीं है। यह भी एक महाकाव्य है, ब्रह्मांड के जन्म से लेकर उसके विस्तार तक की गाथा। यह एक ऐसा रहस्य है, जो हमारी समझ की सीमाओं को चुनौती देता है, और हमें बार-बार यह सोचने पर मजबूर करता है कि आखिर यह सब कैसे शुरू हुआ?

ब्रायन ग्रीन

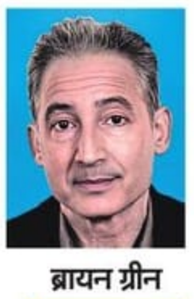

मानव, जो अभी ही इस अनंत ब्रह्मांड में आया है, फिर भी वह इस विशाल सृष्टि के रहस्यों को समझने की हिम्मत कर रहा है। यह प्रयास अपने आप में अद्भुत है। हम छोटे-से ग्रह पर रहने वाले जीव, दूरस्थ आकाशगंगाओं की गति को समझने की कोशिश कर रहे हैं, सूक्ष्म कणों के व्यवहार को जानने का प्रयास कर रहे हैं, और उन नियमों की तलाश में हैं, जो इस समूचे अस्तित्व को एक सूत्र में बांधे हुए है।

जीवन धारा

भौतिकी हमें सिखाती है कि हर उत्तर के पीछे एक नया प्रश्न छिपा होता है। जब हम किसी रहस्य को सुलझाते हैं, तो हमारे सामने और भी गहरे रहस्य खुल जाते हैं। यही तो विज्ञान की सुंदरता है। यह यात्रा कभी समाप्त नहीं होती। यह एक ऐसी यात्रा है, जो कभी समाप्त नहीं होती। यह हमें लगातार आगे बढ़ने, सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती है। यह खोज सिर्फ वैज्ञानिकों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर उस इन्सान की है, जो आसमान की ओर देखकर सवाल करता है कि वहां क्या है, हम यहां क्यों हैं, और यह दुनिया कैसे चलती है। यही जिज्ञासा हमें यह एहसास दिलाती है कि हम भले ही छोटे हों, लेकिन हमारी सोच असीमित है।

हम इस ब्रह्मांड का ही हिस्सा हैं, और उसे समझने की क्षमता भी हमारे भीतर है। यही सबसे खूबसूरत बात है कि हम सिर्फ इस कहानी का हिस्सा ही नहीं, बल्कि उसे समझने और कहने वाले भी हैं।

जब एआई की मदद से खड़ी कर दी कंपनी

एआई पर बहस का नतीजा कुछ भी हो, पर मैथ्यू ने सिर्फ एआई की मदद से कंपनी बनाकर इसकी असली ताकत साबित कर दी।

एरिन ग्रिफिथ
द न्यूयॉर्क टाइम्स

मैथ्यू गैलाघर ने सिर्फ दो महीने में, लगभग 20,000 डॉलर और एक दर्जन से अधिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल्स के सहारे एक नई डिजिटल कंपनी खड़ी कर दी। 41 वर्षीय गैलाघर ने एआई की ताकत का पूरा इस्तेमाल किया और जिन कामों को वह खुद नहीं कर सकते थे, उन्हें समझदारी से आउटसोर्स कर दिया। गैलाघर की टेलीहेल्थ कंपनी, 'मेड्वी' वजन कम करने वाली दवाओं (जीएलपी-1) से जुड़ी है। कंपनी ने अपने पहले व्यावसायिक वर्ष 2025 में 40.1 करोड़ डॉलर की शानदार बिक्री की। दिलचस्प बात यह है कि अपने इस तेजी से बढ़ते कारोबार में गैलाघर ने केवल एक ही कर्मचारी को अपने साथ जोड़ा और वह हैं उनके छोटे भाई इलियट।

हाल ही में, एक मुलाकात के दौरान, गैलाघर, जिनके बिखरे हुए घुंघराले बाल, ढीली-ढाली टी-शर्ट और हाथों पर बने टैटू उनकी अलग पहचान बना रहे थे, ने बताया कि वह मेड्वी का पूरा काम घर से ही संभालते हैं। उनका दिन पूरी तरह काम में बीतता है, सिवाय उन पलों के, जब वह सो रहे होते हैं, नहा रहे होते हैं या अपने बच्चों के साथ समय बिता रहे होते हैं। उन्होंने अपनी आवाज का एआई क्लोन भी तैयार किया है, जो उनकी जगह फोन कॉल करता है और अपॉइंटमेंट्स तय करता है, ताकि वह काम पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें।

इससे पहले 2016 में उन्होंने 'वॉच गैंग' नाम का एक स्टार्टअप शुरू किया था, जो हाथ की बनी घड़ियां बेचने से जुड़ा था। गैलाघर ने इसे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए और 60 लोगों की टीम भी बनाई। पर यह मुनाफा नहीं कमा पाया। फिर, साल 2022 में उन्हें एआई के साथ प्रयोग करने की प्रेरणा मिली। दो साल बाद उनकी मुलाकात मेडिकल स्टार्टअप 'केयरवैलिडेट' के सह-संस्थापक जितेन छाबरा से हुई। इस मुलाकात के बाद मैथ्यू ने एक पुराने और साधारण बिजनेस आइडिया (जीएलपी-1 दवाओं के लिए बिचौलिए की भूमिका) से नई शुरुआत की।

गैलाघर ने मेड्वी की वेबसाइट बनाने के लिए उन्नत एआई टूल्स का उपयोग किया। साथ ही, उन्होंने एआई एजेंट्स और ऑटोमेटेड बॉट्स जैसे कस्टम टूल्स विकसित किए, जिससे सिस्टम आपस में आसानी से जुड़ सकें। ग्राहकों से संवाद के लिए विभिन्न एआई वॉइस टूल्स आजमाए। वह कहते हैं कि मेड्वी कोई एआई कंपनी नहीं है, पर इसे बनाने की पूरी ताकत एआई से ही आई है। सितंबर 2024 में मेड्वी ने आधिकारिक तौर पर अपना कारोबार शुरू किया।

हालांकि, चुनौतियां भी कम नहीं थीं। मेड्वी का कस्टमर सर्विस चैटबॉट कभी-कभी दवाओं की कीमतें खुद ही बना देता था और मैथ्यू उन कीमतों को मान भी लेते थे। कई बार चैटबॉट भ्रमित होकर यह तक कह देता था कि मेड्वी बालों के झड़ने की दवाएं बेचती है, जबकि ऐसा नहीं था। इसके अलावा, अगर कोई ग्राहक किसी असली इन्सान से बात करना चाहता, तो चैटबॉट उसे सीधे गैलाघर के निजी मोबाइल नंबर पर ट्रांसफर कर देता। नतीजतन, 1,000 से ज्यादा कॉल्स सीधे उनके पास आने लगीं। हालांकि, इस असहज स्थिति को भी गैलाघर ने बखूबी संभाला। उन्होंने कॉल्स को मैनेज करने का तरीका ईजाद किया और एक पेशेवर लॉ फर्म तथा एआई आधारित अकाउंटिंग टूल्स की जगह एक अकाउंटिंग फर्म की सेवाएं लीं। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए मीडिया एजेंसियों की मदद ली।

फ्लिकी एआई

फ्लिकी एक एआई-संचालित वीडियो निर्माण टूल है, जो साधारण टेक्स्ट-जैसे ब्लॉग पोस्ट, स्क्रिप्ट या छोटे कैप्शन, आदि को एक आकर्षक और पेशेवर वीडियो में बदल देता है। इसमें आपको किसी जटिल वीडियो एडिटिंग सॉफ्टवेयर या टाइमलाइन की आवश्यकता नहीं होती। बस आपको अपना टेक्स्ट पेस्ट करना होता है और यह अपने आप विजुअल्स से लेकर वॉइसओवर तक सब कुछ तैयार कर देता है। इसे इस्तेमाल करने के लिए किसी भी तरह की एडिटिंग स्किल की जरूरत नहीं होती। यह टूल खासतौर पर कंटेंट क्रिएटर्स, मार्केटर्स, एजुकेटर्स के लिए बेहद उपयोगी है।

एक बार गैलाघर ने मेड्वी की वेबसाइट में एक छोटा-सा बदलाव किया और फिर एक लंबी यात्रा पर निकल गए। रास्ते में उन्हें फोन आया कि पिछले एक घंटे से कोई ऑर्डर ही नहीं आया है। वह तुरंत समझ गए कि वेबसाइट के अपडेट में कोई गड़बड़ी हुई है। उसे ठीक करने के लिए कंपनी में कोई और था नहीं , सो वह फौरन घर पहुंचे। यह एक बड़ी तकनीकी चूक थी। इसके बाद, उन्होंने अपने भाई इलियट को नौकरी पर रखा। इलियट का मुख्य काम ग्राहकों की बातचीत को सुनना, उसे व्यवस्थित करना और जरूरी जानकारी छांटना है।

2025 के अंत तक कंपनी के 2.5 लाख ग्राहक बन चुके थे। इतनी बड़ी सफलता के बाद भी गैलाघर की अपनी टीम को बढ़ाने की कोई खास योजना नहीं है। हालांकि, वह यह समझते हैं कि इन्सानी जुड़ाव का महत्व पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता। इसी सोच के तहत, अपने कुछ खास ग्राहकों से बेहतर रिश्ते बनाने के लिए उन्होंने सात 'ह्यूमन अकाउंट मैनेजर' नियुक्त किए हैं। दिलचस्प बात यह है कि ग्राहकों को प्रभावी ढंग से मैनेज करने के लिए 'ह्यूमन अकाउंट मैनेजर' भी एआई का ही सहारा ले रहे हैं।

संपादकीय

भारतीय नवनिर्माणाचे जनक

हजारो वर्षे धार्मिक गुलामगिरीच्या साखळदंडात जखडलेला समाज आणि पुरोहितशाही, चातुर्वर्ण्याचे दास्यत्व पिढ्यान्‌पिढ्या अंगवळणी पडलेले शूद्रातिशूद्र बहुजन व महिलांना जागे करणारे महात्मा जोतिराव फुले यांच्या द्वितीय जन्मशताब्दीच्या निमित्ताने गेल्या दोनशे वर्षांमधील भारतीयांच्या वाटचालीचे, उत्थानाचे सिंहावलोकन व्हायला हवे. ज्या पुण्यात पेशवाईच्या पराभवाने देशावर ब्रिटिश अंमल सुरू झाला, जगाच्या दारे-खिडक्या उघडल्या गेल्या, आधुनिक जगाचे दर्शन घडू लागले, तिथेच त्यानंतरच्या पाऊण शतकात महात्मा फुले यांनी भारतीय नवनिर्माणाचा, इंडियन रेनेसाँचा पाया घातला. रेनेसाँच्या पाश्चात्त्य व्याख्येपेक्षा हे कार्य वेगळे होते. ती केवळ सांस्कृतिक चळवळ नव्हती. त्याहीपलीकडे महात्मा फुले हे सामाजिक क्रांतीचे कृतिशील अग्रणी होते. सामाजिक, धार्मिक आणि शैक्षणिक कुरीती, कुप्रथा, अनिष्ट परंपरांचे जोखड समाजाच्या मानगुटीवरून उतरविण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. गुलामगिरीतून मुक्ततेची हाक दिली. समाजापुढे उज्ज्वल भविष्याचे स्वप्न ठेवले. समता, न्याय व तर्कावर आधारित नव्या समाजरचनेचा पाया घातला. हजारो वर्षांच्या मूलभूत समाजरचनेला धक्का दिला. आमूलाग्र बदलाची रूपरेषा आखून दिली. या परिवर्तनाच्या वाटेवर जे जे दुबळे, शोषित, गुलामगिरीचे बळी अशा समाजघटकांना आधार देण्याचा, त्यांच्या पायातील बेड्या तोडण्याचा प्रयत्न केला. पूर्वेकडे बंगालमध्ये राजा राममोहन रॉय किंवा पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर सतीप्रथेवर बंदी किंवा विधवाविवाहाला अनुकूल जनमत उभे करीत असताना महात्मा फुले केवळ क्रांतीचे कोरडे हुंकार किंवा शब्दबंबाळ विचारांवर विसंबून राहिले नाहीत. त्यांनी विचारांना कृतीची जोड दिली. त्या प्रत्येक कृतीचा मूलाधार स्त्री-पुरुष समानता होता. स्त्रियांच्या शिक्षणाची सुरुवात त्यांनी पत्नी सावित्रीबाईंपासून केली. मुलींसाठी पहिली शाळा उघडली. भारतात स्त्रीशिक्षणाचा पाया घातला. धर्माने शिकण्याचा हक्क नाकारलेल्या कनिष्ठ जातींच्या मुलांसाठी शिक्षणाचे दरवाजे उघडले. विधवांच्या हालअपेष्टा, विशेषतः केशवपनासारख्या अवहेलनेतून सुटकेसाठी नाभिकांचा प्रातिनिधिक संप घडवून आणला. ब्राह्मण पुरोहिताशिवाय विधवा विवाह लावले. विधवांच्या पोटी जन्मलेल्या मुलांचे जीव वाचविले. त्यांच्यासाठी तसेच निराधार, अभागी विधवांसाठी आश्रम उघडले. एका विधवेचा मुलगा स्वत: दत्तक घेऊन सामाजिक क्रांतीचा प्रारंभ स्वत:च्या घरापासून केला. सोबतच यशस्वी व्यावसायिक म्हणूनदेखील त्यांनी समाजासमोर आदर्श ठेवला. अनेक बाबतीत महात्मा फुले भारतात पहिले होते. भारतीय समाजाचे मूळ अशा जातिव्यवस्थेवर प्रहार करणारे, तसेच ब्राह्मणवाद, पुरोहितशाही, धर्मग्रंथांचा पगडा, माणसाला माणसापासून तोडणाऱ्या चुकीच्या ईश्वरी संकल्पनेला आव्हान देणारे ते पहिले. निर्मिक म्हणून त्यांनी नवा ईश्वर उभा केला. खऱ्या सत्याचा शोध घेतला. पहिले सत्यशोधक ठरले. महात्मा जोतिबा फुले यांची ही कृती पुढे दोनशे वर्षांमधील विविधांगी विद्रोहाची प्रेरणा ठरली. शिक्षण हाच बहुजनांच्या प्रगतीचा मार्ग आहे हे ओळखणारे ते पहिले. हा मार्ग प्रशस्त व्हावा म्हणून त्यांनी ब्रिटिश सत्तेला सतत साकडे घातले. स्त्रियांना शिक्षण, स्वातंत्र्य दिले तरच समाजाचे उत्थान शक्य आहे, हे उमजणारेही ते पहिले. शेतकऱ्यांची दुरवस्था व शोषणाची मीमांसा करणारेही ते पहिले. 'गुलामगिरी', 'शेतकऱ्यांचा आसूड' अशा ग्रंथांमधून ही मीमांसा त्यांनी शब्दबद्ध केली. महत्त्वाचे म्हणजे सुधारणांच्या चार पावले पुढे जाऊन महात्मा फुले यांनी समाजाला नवी दृष्टी दिली. ही दृष्टी वैश्विक होती. 'गुलामगिरी' ग्रंथ त्यांनी अमेरिकेतील कृष्णवर्णीयांच्या लढ्याला समर्पित केला. महाराष्ट्राच्या प्रबोधन परंपरेचा विचार करता महात्मा फुले हा महत्त्वाचा थांबा आहे. अंधश्रद्धा, कर्मकांड झिडकारणाऱ्या छत्रपती शिवरायांपासून हा प्रवास सुरू होतो. शिवरायांच्या समाधीचा शोध लावून महात्मा फुले यांनी झाकोळलेली परंपरा उजेडात आणली. त्या वारशाला आकार दिला. ते प्रबोधन राज्यकर्ते म्हणून राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांनी कृतीत आणले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी या परंपरेला सामाजिक क्रांतीचा साज चढविला. समता, न्याय ही तत्त्वे भारतीय राज्यघटनेत प्रतिष्ठित झाली. गेली पाऊणशे वर्षे भारतातील सामान्य माणूस पावलापावलावर राज्यघटनेतील मूल्यांचा आग्रह धरताना दिसतो, त्या प्रेरणेचे मूळ महात्मा फुले यांच्या क्रांतिकारी, कृतिशील विचारांमध्ये आहे. तरीदेखील फुलेंना अभिप्रेत असलेले नवनिर्माण झालेले नाही. कारण, विचार कृतीत आणण्याचे त्यांच्याइतके धाडस आम्हा सामान्य भारतीयांमध्ये नाही. त्या महात्म्याचे मोठेपण आणि आपले हे वैगुण्य यातील विसंगती हाच त्यांच्या द्वितीय जन्मशताब्दीचा ठळक विशेष आहे.

महात्मा फुले : एक दीपस्तंभ, जो अजूनही मार्ग दाखवतोय!

भारताच्या भविष्याचे उद्गाते, महान समाजसुधारक महात्मा फुले यांच्या द्विशताब्दी जयंती वर्ष महोत्सवाला आजपासून प्रारंभ होत आहे. त्यानिमित्त..

नरेंद्र मोदी
पंतप्रधान

आज महात्मा फुले यांचे नाव इतक्या वर्षांनीही आदराने घेतले जाते, अनेक पिढ्या त्यांचे हे ऋण विसरू शकल्या नाहीत याचे कारण समाजासाठी त्यांनी अविरत केलेले अद्वितीय काम. त्यांचे जीवन म्हणजे नैतिक धैर्य, निरंतर जिज्ञासा आणि सामाजिक हितासाठी अविचल वचनबद्धतेचे प्रतीक होते. महात्मा फुले यांनी उभारलेल्या संस्था आणि त्यांनी नेतृत्व केलेल्या चळवळींनी समाजाला एक वाट दाखवून दिली. आपल्या सांस्कृतिक प्रवासातील त्यांचे योगदान आजही देशभरातील कोट्यवधी लोकांना मिळणाऱ्या शक्तीमध्ये सामावलेले आहे. समाजामध्ये त्यांनी जी आशा जागवली आणि त्यांच्यात जो आत्मविश्वास निर्माण केला, तो त्यांच्या विचारांचा परिपाक आहे.

१८२७ मध्ये महाराष्ट्रात जन्मलेल्या या महात्म्याने कधीच, कोणत्याच अडचणींचा बाऊ केला नाही आणि त्यातून मार्ग काढला. अत्यंत सामान्य परिस्थितीतून त्यांनी वाटचाल सुरू केली आणि नंतर पहाडाइतके उत्तुंग कर्तृत्व गाजवले. चौकसपणा आणि ज्ञानमिमांसा हा त्यांचा स्थायिभाव होता. आपण जितके जास्त प्रश्न निर्माण करू, तितके ज्ञान त्यातून बाहेर येईल, असे त्यांचे म्हणणे होते.

आपल्या संपूर्ण जीवनकाळात शिकणे आणि शिक्षण देणे हेच त्यांचे ध्येय बनले होते. शिक्षण आणि ज्ञान, ही कोणा एकाची मक्तेदारी असू शकत नाही, ती एक शक्ती आहे, जी सगळ्यांपर्यंत पोहोचलीच पाहिजे, याची त्यांना आत्यंतिक तळमळ होती. ज्या काळात शिक्षणाचा हक्क आणि आनंद अनेकांना नाकारला जात होता, अशा काळात त्यांनी मुलींसाठी आणि ज्यांना औपचारिक शिक्षणापासून वंचित ठेवले गेले होते, अशा सर्वांसाठी पहिल्यांदा शाळा सुरू केल्या. ते म्हणत असत- 'मुलांमध्ये आईमार्फत होणारी कोणतीही सुधारणा, अत्यंत महत्त्वाची असते आणि म्हणूनच, जर शाळा सुरू करायच्या असतील, तर त्या मुलींसाठी काढल्या पाहिजेत.' त्यांनी अशा एका समाजाच्या निर्मितीसाठी काम केले, जिथे शाळा या न्याय आणि समता प्रस्थापित करण्याचे माध्यम बनल्या.

शिक्षणाविषयीचे त्यांचे विचार, त्यांची दूरदृष्टी, आपल्या सर्वांसाठी प्रेरणादायक आहे. महात्मा फुले यांचे ज्ञान आणि शहाणीव यातून त्यांची कृषी, आरोग्य आणि ग्रामविकासाविषयीची समज विकसित झाली होती. आपले शेतकरी आणि कामगार यांच्यावर होणारा अन्याय आपल्या समाजाला दुर्बळ करतो आहे, असे ते नेहमी म्हणत असत. गावात असो किंवा शेतात, या घटकांना सामाजिक विषमतेचे चटके कसे सहन करावे लागत आहेत, ते त्यांनी पाहिले होते. म्हणूनच त्यांनी, गरीब, वंचित आणि दुर्बळ घटकांना त्यांचा आत्मसन्मान, त्यांची प्रतिष्ठा मिळवून देण्याच्या कार्यात स्वतःला वाहून घेतले. त्याचवेळी, सामाजिक सौहार्दसुद्धा कायम राहील, यासाठी त्यांनी सर्वतोपरी प्रयत्न केले.

जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिळत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिळत नाही, हा त्यांचा आग्रही विचार होता. म्हणूनच त्यांनी हा विचार प्रत्यक्ष कृतीत उतरविणाऱ्या संस्था उभ्या केल्या आणि या संस्थांनी एका न्याय्य समाजाच्या निर्मितीत मोठे योगदान दिले. महात्मा फुले यांनी स्थापित केलेली सत्यशोधक समाज ही चळवळ आधुनिक भारतातील सर्वात महत्त्वाच्या सामाजिक सुधारणा चळवळींपैकी एक होती. सामाजिक सुधारणा, समाजसेवा आणि प्रत्येक माणसाच्या सन्मानाला प्रतिष्ठा मिळवून देण्यात ही चळवळ आघाडीवर होती. ही चळवळ समाजातील महिला, युवा आणि ग्रामीण भागात राहणाऱ्या लोकांची एक ठोस प्रभावशाली अभिव्यक्ती बनली. जर समाजाने आपल्या गाभ्याशी न्याय, प्रत्येक व्यक्तीबद्दलचा आदर आणि सामूहिक प्रगतीची भावना ही मूल्ये जपली तर तो समाज अधिक सक्षम होऊ शकतो असा महात्मा फुले यांचा ठाम विश्वास होता.

महात्मा फुले यांच्या वैयक्तिक जीवनातूनही आपल्याला धैर्याची शिकवण मिळते. सतत कामात व्यग्र असणे, सातत्याने लोकांमध्ये असणे याचा त्यांच्या प्रकृतीवर विपरीत परिणाम झाला. मात्र, प्रकृतीबाबत अत्यंत गंभीर आव्हाने समोर असतानाही त्यांचा निर्धार तसूभरही ढळला नाही. अर्धांगवायूच्या गंभीर झटक्याने त्यांना असंख्य मर्यादा आल्या, पण तरीही त्यांनी आपले काम आणि आपले संकल्प साकारण्याचे प्रयत्न सुरूच ठेवले. त्यांचे शरीर जणू त्यांची सत्त्वपरीक्षाच घेत होते, मात्र समाजाप्रति असलेल्या आपल्या वचनबद्धतेपासून त्यांनी कधीही फारकत घेतली नाही. त्यामुळेच आजही लाखो लोकांसाठी, विशेषतः संघर्षातून धैर्य मिळविणाऱ्यांसाठी, महात्मा फुले यांचे जीवितकार्य आजही आदर्शवत आहे. सावित्रीबाई फुले यांचा आदरपूर्वक उल्लेख केल्याशिवाय महात्मा फुले यांचे स्मरण पूर्ण होऊच शकत नाही. त्या स्वतः आपल्या देशातील महान सुधारकांपैकी एक होत्या. महात्मा फुले यांचे निधन झाल्यानंतरही सावित्रीबाईंनी हा वसा तसाच पुढे चालू ठेवला. १८९७मध्ये प्लेगच्या साथीचा उद्रेक झालेला असताना त्यांनी बाधित रुग्णांची इतक्या समर्पण भावनेनं सेवा केली की, त्या स्वतः त्या रोगाच्या विळख्यात सापडल्या आणि त्यातच त्यांना आपले प्राण गमावावे लागले.

मला २०२२मधील माझ्या पुणे भेटीचे स्मरण होते, त्यावेळी मी शहरातील महात्मा फुले यांच्या भव्य पुतळ्याला अभिवादन केले होते. त्यांना अत्यंत प्रिय असलेल्या शिक्षणासारख्या विषयांप्रति आपल्या बांधिलकीची आपण नव्याने मांडणी करत आहोत, अन्यायाप्रति आपल्या संवेदनशीलतेची पुन्हा नव्याने जाणीव करून देत आहोत. नैतिक स्पष्टता आणि लोककल्याणाचा उद्देश यांची जोड मिळाल्यास, भारतातील सामुदायिक शक्ती चमत्कार घडवून आणू शकते असेच त्यांची जीवनगाथा आपल्याला सांगते. म्हणूनच ते आजही लाखोंना प्रेरणा देत आहेत. त्यांचे शब्द आणि कृतीतून आजही आशेचा किरण डोकावतो. म्हणूनच महात्मा जोतिराव फुले त्यांच्या जन्मापासून दोनशे वर्षांनंतरही भारताच्या भविष्याचे मार्गदर्शक आहेत.

व्यवस्थेच्या डोळ्यांत डोळे घालून प्रश्न विचारणारा महात्मा

विद्येविना गेलेली मती जोतिबांनी पुन्हा मिळवून दिली, म्हणूनच आजचा बहुजन समाज ताठ कण्याने उभा आहे, हे ध्यानी ठेवले पाहिजे!

प्रा. ज्योती वाघमारे
खासदार, राज्यसभा

भारतीय इतिहासाच्या क्षितिजावर जेव्हा अज्ञानाचा आणि विषमतेचा काळोख दाटलेला होता, तेव्हा त्या अंधाराला भेदून प्रकाशाची पहिली ठिणगी ज्या महापुरुषाने टाकली, ते महात्मा जोतिबा फुले. आज आपण त्यांची २००वी जयंती साजरी करीत आहोत. हे केवळ एका महापुरुषाच्या स्मरणाचे वर्ष नाही, तर त्यांनी मांडलेल्या समतेच्या, विज्ञानाच्या आणि माणुसकीच्या मांडणीचा पुनरारंभ करण्याचे वर्ष आहे.

क्रांतीचा सूर्य पुण्याच्या भिडेवाड्यात उगवला आणि त्याची धग आजही विषमतेच्या भिंती जाळत आहे. जोतिबा केवळ एक समाजसुधारक नव्हते, तर ते आधुनिक भारताचे पहिले 'सकळ शास्त्रसंपन्न' क्रांतिकारक होते. जोतिबांच्या कार्याचा पाया हा 'शिक्षण' होता; परंतु त्यांचे शिक्षण केवळ अक्षरांची ओळख करून देण्यापुरते नव्हते. त्यांच्या मते, शिक्षण हे शोषितांच्या हाती दिलेले अस्त्र होते. 'विद्येविना मती गेली, मतीविना नीती गेली...' या ओळींमधून त्यांनी शिक्षणाचा समाजशास्त्रीय कार्यकारणभाव मांडला. हा विचार आजही जागतिक स्तरावर अमान्य करता येत नाही. ज्या समाजात ज्ञानावर एका विशिष्ट वर्गाची मक्तेदारी असते, तिथे लोकशाही कधीच रुजू शकत नाही हे त्यांनी ओळखले होते. १ जानेवारी १८४८ रोजी भिडेवाड्यात सुरू झालेली मुलींची पहिली शाळा ही केवळ एक शैक्षणिक संस्था नव्हती, तर ती हजारो वर्षांच्या पितृसत्ताक आणि वर्णवर्चस्ववादी मानसिकतेला दिलेले खुले आव्हान होते.

२४ सप्टेंबर १८७३ रोजी जोतिबांनी स्थापन केलेला सत्यशोधक समाज ही शोषितांच्या आत्मभानाची मोठी चळवळ होती. जोतिबांनी 'निर्मिक' (The Creator) ही संकल्पना मांडली. त्यांनी सांगितले की, सर्व मानव एकाच निर्मात्याची लेकरे आहेत, त्यामुळे कोणालाही मध्यस्थ (पुरोहित) मानण्याची गरज नाही. ज्या काळात विचार करणे गुन्हा होता, त्या काळात जोतिबांनी व्यवस्थेच्या डोळ्यांत डोळे घालून प्रश्न विचारण्याचे धाडस दिले.

जोतिबांचे साहित्य हा शोषितांच्या दुःखाचा आणि संघर्षाचा दस्तऐवज आहे. त्यांनी 'बळीराजा' हा कष्टकऱ्यांचा सांस्कृतिक नायक म्हणून उभा केला. तत्कालीन संस्कृतप्रचुर भाषेला नाकारून बहुजनांच्या बोलीभाषेला साहित्यात प्रतिष्ठा मिळवून दिली. त्यांनी मांडलेले तत्त्वज्ञान हे सर्वसामान्यांना समजेल अशा भाषेत होते. 'शेतकऱ्याचा आसूड' (१८८३) या ग्रंथातून त्यांनी शेतकऱ्यांच्या शोषणाची कारणे सांगितली. सावकारी पाश, अस्मानी संकटे आणि सुलतानी जुलूम यावर त्यांनी कडाडून प्रहार केला.

जोतिबांचा स्त्री-मुक्तीचा विचार केवळ शाळा काढण्यापुरता मर्यादित नव्हता. त्यांनी सावित्रीबाईंना शिक्षित करून त्यांना वैचारिक सहचारी म्हणून उभे केले. 'बालहत्या प्रतिबंधकगृह' स्थापन करून सामाजिक बहिष्कार सोसणाऱ्या स्त्रियांना आश्रय दिला. एका विधवा स्त्रीच्या मुलाला (यशवंत) दत्तक घेऊन रक्ताच्या नात्यापेक्षा माणुसकीचे नाते श्रेष्ठ असल्याचे सिद्ध केले. ही कृती आजच्या काळातील कोणत्याही मानवी हक्क चळवळीपेक्षा कितीतरी मोठी आणि क्रांतिकारी होती.

जोतिबांनी ब्रिटिश राजवटीचे विश्लेषण अत्यंत बारकाईने केले होते. ब्रिटिशांमुळे शिक्षणाची दारे उघडली, हे मान्य करतानाच त्यांनी सावध केले की, सरकारी नोकऱ्यांमध्ये पुन्हा तेच लोक बसले आहेत जे शेतकऱ्यांचे शोषण करतात. भारतातील पहिली कामगार संघटना उभी करण्यात जोतिबांच्या विचारांचा मोठा वाटा होता. कामगारांना सुटी मिळावी, त्यांच्या कामाचे तास निश्चित असावेत, ही मागणी सर्वप्रथम जोतिबांच्याच विचारसरणीतून पुढे आली. ११ मे १८८८ रोजी मुंबईच्या कोळीवाड्यात एका प्रचंड जनसमुदायाने जोतिबांना 'महात्मा' ही पदवी बहाल केली.

ही पदवी कोणत्याही राजाने किंवा सत्तेने दिलेली नव्हती, तर ती ज्यांच्यासाठी जोतिबा आयुष्यभर लढले, त्या कष्टकरी जनतेने दिलेली कृतज्ञता पावती होती. विद्येविना गेलेली मती जोतिबांनी पुन्हा मिळवून दिली, म्हणूनच आजचा बहुजन समाज ताठ कण्याने उभा आहे. महात्मा फुलेंची २०० वी जयंती साजरी करत असताना केवळ त्यांच्या प्रतिमेचे पूजन करणे पुरेसे नाही. समाजातील अंधश्रद्धा आणि जातीय विद्वेष संपवण्यासाठी जोतिबांच्याच मार्गाने चालावे लागेल. जात, धर्म आणि लिंगाच्या पलीकडे जाऊन माणसाला माणूस म्हणून ओळखणे, हीच जोतिबांना खरी श्रद्धांजली ठरेल.

अनंत जिभांनी बोलणाऱ्यांना जोतिबांचे सत्य कसे परवडेल?

विचार करण्याची प्रक्रिया बंद केली की, धडांची गर्दी वाढते. ज्यांची शिकार झाली तेच सध्या शिकाऱ्यांची शक्ती वाढवण्यात मशगूल आहेत. आजच्या अशा विपरीत काळात जोतिबांच्या स्मरणाचा अर्थ समजावून घ्यायला हवा!

प्रा. डॉ. यशवंत मनोहर
ज्येष्ठ साहित्यिक, विचारवंत

जोतिबांच्या क्रांतिलॉजिकची आज विशेषच गरज आहे. हे लॉजिक टाळणारांना सत्य आणि असत्य यातला फरकच कळत नाही. त्यामुळे मनूच्या प्रतिक्रांतीत ते सहज समरस होतात. विचार करण्याची प्रक्रिया बंद केली की, धडांची गर्दी वाढते. या गर्दीला स्वातंत्र्य, स्वाभिमान आणि सत्य या मूल्यांचाच विसर पडतो. या गर्दीचे रूपांतर मनुस्मृतीच्या श्लोकांमध्ये होऊन जाते. ही गर्दी आपल्याच गुलामीचा विकास करत राहते. महाराष्ट्राने जोतिबांना समजावून न घेण्याचा हा दुष्परिणाम आहे.

ज्यांची शिकार झाली तेच सध्या शिकाऱ्यांची शक्ती वाढवण्यात मशगूल आहेत. अशा विपरित काळात जोतिबांचे स्मरण करण्याचा अर्थ आपण समजावून घेण्याची सर्वतोपरी गरज आहे.

स्त्रिया, शूद्र आणि अतिशूद्र यांना सर्वार्थांनी अधःपतित करणारी शोषणसत्ता जोतिबांनी बारकाईने समजावून घेतली होती. तिच्या निर्मूलनासाठी एक पायाभूत सिद्धान्तन उभे केले होते. हे त्यांचे क्रांतिलॉजिक एकोणिसाव्या शतकातही अजोडच होते आणि आजही ते अनिवार्यच आहे. म्हणून आपण जोतिबा फुल्यांना क्रांतिपिता म्हटले पाहिजे. मनुमानी करणारे आजच्या समाजाच्या डोक्याला पुष्यमित्र बांधू इच्छितात तर जोतिबा भारताला मनुविहीन भारतात नेऊ इच्छितात. बाबासाहेब आंबेडकरांनी यासाठीच जोतिबांना गुरू मानले आणि भारतीय संविधानात स्वच्छ मनुविहीन भारताचा सिद्धांत मांडून ठेवला.

फुल्यांची क्रांती वरवरची नव्हती. ती आमूलाग्र क्रांती होती. चातुर्वर्ण्य ही विषमता आहे आणि विषमतेला संस्कृती म्हणता येत नाही. विषमता दैव, कर्मविपाक आणि अशाच अनेक खोटेपणावर उभी केली आहे. अशा असत्यांमधून संस्कृती निर्माण होत नाही.

चातुर्वर्ण्य ही सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक आणि शारीरिक शोषणाचीच व्यूहरचना आहे आणि शोषणाला संस्कृती म्हणता येत नाही. स्त्रिया, शूद्र आणि अतिशूद्र या ९५ टक्के बहुजनांना दुय्यम ठेवून त्यांना मानवी अस्तित्वच नाकारणाऱ्या दहशतवादाला संस्कृती होता येत नाही.

जोतिबांनी समतेच्या, बंधुत्वाच्या आणि स्वातंत्र्याच्या संस्कृतीसाठी निर्णायक आंदोलन सुरू केले. हे आंदोलन असत्यशोधकांविरुद्ध, वर्चस्वस्थापकांविरुद्ध, अज्ञानशोधकांविरुद्ध आणि विषमताप्रवर्तकांविरुद्ध होते. जोतिबा सत्यशोधक होते. 'मानवाचा धर्म, सत्य हीच नीती, बाकीची कुनीती जोती म्हणे..' 'मानव भावंडे सर्व एकसहा..' हा माणुसकीच्या आणि पर्यायाने देशाच्या अखंडतेचाच फुलेसिद्धांत आहे.

जोतिबा हे माणसांमध्ये बहिणी-भावांचे नाते निर्माण करणारे पद्धतीशास्त्र आहे. विषमताशिरोमणींनी आणि असत्यप्रवर्तकांनी निर्माण करून ठेवलेल्या अतार्किक आणि माणूसद्रोही संबंधांची जोतिबांनी विरचना केली आणि सर्वमानवसमभावी संबंधांची नवरचना केली. कोणावरही अन्याय होऊ नये, मानवांना स्वातंत्र्याचे मस्तक असावे आणि त्यांच्यातील भावंडभाव अजिंक्य राहावा, हे जोतिबांचे सत्यशोधन होते.

त्यांच्या याच सत्यशोधनाने एकमय सर्वधर्मी कुटुंबाचे चित्र काढले. ही त्यांची धर्मनिरपेक्षताच आहे. लोकांच्या मनामधील परकेपणाला त्यांनी आपलेपणा शिकवला. ते असे निरामय माणुसकीचे महातत्त्वज्ञ होते.

सर्वमयतेचे एकमयतेत, खंडतेचे अखंडतेत, स्वार्थाचे सर्वार्थात, द्वेषाचे प्रेमात आणि अमानुषतेचे मानुषतेत रूपांतर करणारे लॉजिक म्हणजे जोतिबा! त्यांनी सार्वजनिक सत्यशोधक धर्म निर्माण केला. सत्य हे धर्मातीतच असते म्हणून फुले सत्यमय झाले. अभेदभाव, सर्व बंधुभगिनीभाव हेच त्यांचे सत्य होते. जोतिबा असे सर्वांच्या समान हितसंबंधाचे सत्य मांडत होते.

या सत्यामुळे ज्यांचा अहंकार, वर्चस्व आणि धंदा धोक्यात येत होता, त्यांनी जोतिबांना कधीही आपले म्हटले नाही. मालकशाहीवाद्यांना लोकशाही शत्रू वाटते. त्यांना सर्वांना समान अधिकार आणि एकमूल्यता देणारे संविधान नको असते. निवडकांची मक्तेदारी जपणाऱ्यांना सर्वांची समान मक्तेदारी पटतच नाही. थोड्यांच्या सत्तेची चटक लागलेल्यांना सर्व लोकांची सत्ता मान्य होत नाही. लोकशाही म्हणजे समता, पण मालकशाही नावाच्या विषमतेला समतेची उदंड भीतीच वाटते. या मालकशाहीच्या निर्मूलनासाठी आज जोतिबांच्या क्रांतिलॉजिकची कधी नव्हे इतकी गरज आहे.

राजकारण म्हणजे हितसंबंधांची स्थापना! हे राजकारण थोड्या वर्चस्वींच्या हितसंबंधांसाठी, अन्यायग्रस्त बहुसंख्य लोकांच्या हितासाठी आणि सर्वांच्याच समान वा वर्गातीत हितसंबंधांच्या प्रस्थापनेसाठी असे तीन स्तरावर चालते. जोतिबांनी पहिल्या पातळीवर अल्पसंख्य मक्तेदारांच्या विरोधात सर्व बहुजनांचे राजकारण सुरू केले. त्यापुढच्या टप्प्यावर त्यांनी सर्वांच्याच समान हितसंबंधांचे राजकारण सुरू केले.

'सर्वांना बंधूपरी पोटाशी धरावे' या वचनातून आणि 'सार्वजनिक सत्यधर्म' या नावातूनही आपणास हे दिसते. या राजकारणाच्या यशस्वीतेसाठी त्यांनी सर्व विषमताशिरोमणींना विरोध करणारे लोक सोबत घेतले. माणसांच्या मनांमधील विषमताशिरोमणींना तडीपार करून त्यांनी लोकायत, बुद्ध या समताशिरोमणींची प्रस्थापना केली. हे त्यांच्या लॉजिकचे प्रात्यक्षिक होते.

दुटप्पी सत्तापिसाटांना हे जोतिबांचे सत्यनिष्ठ राजकारण मान्य होऊ शकत नाही. ज्यांना पक्ष हे साधन आणि चातुर्वर्ण्यधर्म हे साध्य वाटते त्यांना जोतिबांचे राजकारण संकटासारखे वाटणे साहजिकच आहे. गळ्याभोवती असलेल्या अनंत जिभांनी जे बोलतात त्यांना जोतिबांचे सत्य परवडूच शकत नाही.

फुल्यांचे राजकारण आज हवे आहे. ते साहित्यातही, समाजातही, शिक्षणातही आणि राजकारणातही हवे आहे. त्यासाठी सर्वच बहिणींनी आणि भावांनी जोतिबांच्या क्रांतिलॉजिकच्या वा त्यांच्या तत्त्वज्ञानाच्या लेकी आणि लेक होण्याची गरज आहे. अशा सद्विवेकाची निर्मिती जोतिबांना अपेक्षित होती.

त्यासाठी सर्वच भावंडांनी त्यांना दुय्यम ठेवणारी आणि त्यांच्या अक्षमतेचा विकास करणारी व्यवस्था नीट तपासण्याची आवश्यकता आहे. वर्चस्ववाद्यांनी कोणकोणत्या पद्धतींनी आपल्यावर सेवकत्व लादले हे बहुजनांनी प्रथम समजावून घ्यायला हवे. प्रश्न विचारण्याच्या क्षमतेतूनच स्वातंत्र्याचा उदय होतो. जोतिबांनी केलेल्या संग्रामाचे मर्म समजावून घेतले तर एकूण समाज आधुनिक आणि निरंतर क्रांतिकारी होईल. आजही ज्योतिबा कसे अनिवार्य आहेत, हे आपल्याला कळेल.

मनुशोषण व्यवस्थेला जोतिबांनी एकोणविसाव्या शतकात समताव्यवस्था हा पर्याय दिला. त्याच्या प्रस्थापनेसाठी पायाभूत आंदोलन उभे केले. हा पर्याय सर्वांनाच सन्मानदायी आहे. या पर्यायाच्या प्रस्थापनेसाठी सर्वांनीच ज्योतिबांचे मन व्हायला हवे. ही जोतिबांसंबंधीची केवळ कृतज्ञता नव्हे. ते केवळ स्मरणही नव्हे. हे त्यांनी केलेल्या क्रांतीला सादर निमंत्रण आहे.

जनमन

विशेष मुलांना न्यायालयाकडून दिलासा

१९८ विशेष शाळांमध्ये शिकणाऱ्या सुमारे दहा हजार दिव्यांग विद्यार्थ्यांना येत्या शैक्षणिक वर्षापासून सर्वसाधारण शाळांमध्ये समाविष्ट करण्याच्या सरकारच्या निर्णयाला सर्वोच्च न्यायालयाने स्थगिती दिली हे बरे झाले! अस्थिव्यंग असलेले विद्यार्थी सर्वसाधारण शाळेत इतर सुदृढ मुलांसमवेत नक्कीच संकोचून जाणार. त्यांच्या मनात तुलनात्मक न्यूनगंड निर्माण होऊन त्यांना मानसिक त्रासाला सामोरे जावे लागेल. प्रसंगी इतर मुलांकडून हेटाळणीदेखील होऊ शकते. त्यांना विशेष शाळेतील सुविधा सर्वसाधारण शाळेत न मिळाल्यामुळे त्यांची कुचंबणा होणार! मुख्य प्रवाहात ती मुलं येण्याऐवजी मूळ शिक्षणापासूनच तोडली जातील, अशी रास्त भीती वाटते! तथाकथित सर्वसमावेशक शिक्षणाची मागणी या विद्यार्थ्यांनी किंवा त्यांच्या पालकांनी केलेली नसताना ही नसती उठाठेव सरकारला का सुचते? मुलांना पिण्यासाठी शुद्ध मुबलक पाणी, सुरक्षित भोवताल, मुला-मुलींसाठी वेगळी स्वच्छ प्रसाधनगृहे, पोषक आहाराची व्यवस्था, पुरेसे शैक्षणिक साहित्य, दर्जेदार शिक्षण, शाळेची भक्कम इमारत, त्यांना खेळण्यासाठी मैदान इत्यादी सोयी आधी पुरवाव्यात. दिव्यांग विद्यार्थ्यांना आणि त्यांच्या अडचणींना समजून घेऊन त्याप्रमाणे बदल आणि सोयी करणे गरजेचे आहे. शिक्षण आणि त्यासाठीच्या दर्जेदार, योग्य सोयी-सुविधा मिळणे हा प्रत्येकाचा हक्क आहे. सरकारनेही आपली जबाबदारी ओळखून त्याप्रमाणे कार्यवाही करणे गरजेचे आहे. विद्यार्थी शाळा आणि शिक्षणाच्या संदर्भात सर्व गोष्टींचा मूलभूत विचार होणे गरजेचे आहे. कोणताही विद्यार्थी कोणत्याही कारणाने शिक्षणापासून वंचित राहू नये.

- हेमंतकुमार मेस्त्री, मनोर

समकालीन महत्त्वाचे मुद्दे मांडणारी, नवी चर्चा सुरू करणारी वाचक-पत्रे या स्तंभामध्ये प्रसिद्ध केली जातील. आपली पत्रे येथे पाठवा : **janman@lokmat.com**

तिरकस आणि चौकस

गजानन घोंगडे

हे पत्र लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेडच्या वतीने मुद्रक व प्रकाशक **बालाजी मुळे** यांनी प्लॉट नं. ए - ८१८ इंडस्ट्रियल एरिया, एम.आय.डी.सी., महापे, नवी मुंबई येथे मुद्रित करून 'लोकमत', पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई कार्यालय - ४००७०५ येथून प्रसिद्ध केले. ● दूरध्वनी क्र : ०२२ ४६०४१७८४
● **मुंबई कार्यालय :** लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेड, तिसरा मजला, पारिजात हाउस, प्लॉट नं. १०७६, आपटे इंडस्ट्रियल इस्टेट, लक्ष्मीनरसिंग पपन मार्ग, डॉ. ई मोझेस रोडसमोर, गांधीनगर, वरळी, मुंबई, ४०००१८. ● दूरध्वनी क्र : ०२२- ४६०३५९३०, ०२२- ४७५०७९४६ ● **ठाणे कार्यालय :** वेस्टर्न व्ह्यू, श्री गजानन महाराज चौक, वारकरी भवनाजवळ, ठाणे,
फोन : २५४४१९०५, २५३८१७७४ ● **नवी मुंबई कार्यालय :** पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई ४००७०५. फोन : ०२२ ४६०४१७८४ ● संस्थापक संपादक : **स्व. जवाहरलाल दर्डा** ● मानद संपादिका : **श्रीमती उषाताई दर्डा** ● चेअरमन, एडिटोरियल बोर्ड : **डॉ. विजय दर्डा** ● एडिटर इन चिफ : **राजेंद्र दर्डा** ● समूह संपादक : **विजय बाविस्कर**
● संपादक : **अतुल कुलकर्णी*** (*पी. आर. बी. कायद्यानुसार संपादकीय जबाबदारी यांची आहे.) 'लोकमत'मधील लेखांचे हक्क राखून ठेवले आहेत. लोकमत © हे चिन्ह लोकमत मीडिया प्रायव्हेट लि. चे. व्यापारचिन्ह आहे.

प्रेरणा

खुद से प्रेम करें, खुद को अपने प्रेम का हकदार मानें। अपनी खुशी को महसूस करें। -प्रेंटिस मलफोर्ड

संपादकीय

अमेरिका-ईरान शांति प्रयास कैसे सफल होंगे?

कूटनीति के छात्रों को पढ़ाया जाता है कि जंग खत्म कर शांति की बहाली के लिए हुई वार्ताओं की सफलता की तीन शर्तें होती हैं। पहली, क्या युद्धरत दोनों पक्षों के लिए सही समय आ चुका है, यानी क्या दोनों पक्ष युद्ध से थककर शांति को ज्यादा लाभकारी मानने लगे हैं? दूसरी, क्या ऐसी स्थिति बन चुकी है कि समझौते की भाषा/शर्तें रचनात्मक रूप से इतनी गोलमोल रखी जाएं कि दोनों पक्ष जीत का दावा कर सकें? और तीसरी, क्या मध्यस्थता कराने वाला पक्ष इतना समर्थ, सबल और सक्षम है कि दोनों को समझौते के लिए मजबूर करे, जैसे किसी जमाने में यूएन और यूएस हुआ करते थे। इन तीनों पैरामीटर्स में ट्रम्प ने एक चौथा फैक्टर जोड़ दिया है- उनका अप्रत्याशित आचरण। ट्रम्प युद्ध को खत्म करना लाभकारी तब मानेंगे, जब उनके अमेरिकी समर्थकों में संदेश जाए कि उन्होंने दुश्मन को झुकाकर अमेरिका को फिर महान बना दिया। लेकिन क्या अमेरिकी जनता यह नहीं पूछेगी कि लड़ाई का औचित्य क्या था? उधर ईरान की जनता ने अद्भुत बलिदानी जज्बा और सामूहिक परिपक्वता दिखाते हुए राष्ट्र, संस्कृति और समाज को सर्वोपरि रखा। नेतृत्व-विहीनता की स्थिति में भी सामूहिक नेतृत्व को स्वीकारा। अगर अमेरिका होर्मुज पर ईरान का दावा माने और ईरान परमाणु-हथियार न बनाने का वादा करे तो मध्य मार्ग निकल सकता है।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

गाय हमारे ग्रामीण और शहरी जीवन की सशक्त कड़ी है

भरोसे की चिट्ठी और सच्चाई की पावती हो, पुराने लोग ऐसा कहा करते थे। इसका मतलब होता है जो काम करो, सच्चाई के साथ करो। 27 अप्रैल को गो-सम्मान दिवस मनाया जाएगा। लोग संकल्प पत्र भरेंगे। गाय की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएंगे। गाय हमारे ग्रामीण और शहरी जीवन की एक बहुत ही सशक्त कड़ी है। अगर आज थोड़ा बहुत भी ग्रामीण क्षेत्र में जीवन बचा है तो उसके पीछे गाय है। यदि हम गाय की सेवा, सुरक्षा और सम्मान के लिए संकल्पित होते हैं तो इसका फायदा शहरी जीवन को मिलेगा। जो लोग नगरों में रह रहे हैं, वही जानते हैं कि जीवन कितना चुनौतीपूर्ण हो चुका है? रसोई बजट बिगड़ गया, स्वास्थ्य में बेचैनी है, नौकरी-कारोबार में दबाव है, अचल संपत्ति की उलझनें हैं, किफायती आवास का धोखा है और अपराध कब आपके जीवन में प्रकट हो जाए, कह नहीं सकते। फिर भी लोगों को लगता है कि मौज-मस्ती का सबसे बड़ा अड्डा शहर ही हैं। गो-माता को बचाइए तो शायद शहरी जीवन में भी थोड़ी राहत मिलेगी।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

विशेष • शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रेरित करता है

भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं महात्मा फुले

जयंती-वर्ष

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

आज 11 अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक महात्मा ज्योतिराव फुले की जन्म-जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके 200वें जयंती वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है।

महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म-चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। उन्हें केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव भी हम आज तक महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ। लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए। बचपन से ही महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वो कहते भी थे, हम जितने ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है। साफ है कि बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही।

महात्मा फुले के जीवन में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि ऐसी शक्ति है, जिसे सभी से साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं। उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बनाया।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी प्रेरित करता है। पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए रिसर्च और इनोवेशन को प्राथमिकता दी है। ऐसा इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और इनोवेशन के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत युवाओं को प्रगति का आधार-स्तम्भ बना रहा है।

अपने ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे, किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए उन्होंने गरीबों, वंचितों, कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए।

महात्मा फुले ने कहा था- 'जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिळत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिळत नाही', यानी जब तक समाज के सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर

महात्मा फुले के 200वें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

आवाज बना। यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज की मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है।

महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वे स्वयं महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इसे जारी रखा।

मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने शहर में महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके 200वें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

मैनेजमेंट • पैटर्न्स को ऑब्जर्व करें और पूर्वानुमान लगाएं

एक मैनेजर और एक अच्छे लीडर में क्या अंतर होता है?

सेल्फ-हेल्प

डॉ. राम चरण
विश्व विख्यात लेखक और कई शीर्ष कम्पनियों के सलाहकार

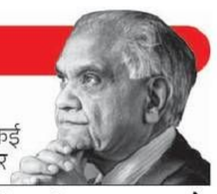

हर मैनेजर बहुत अच्छा लीडर भी बनना चाहता है। लेकिन इन दोनों में अंतर है। आप जानते हैं- क्या? आज की दुनिया में इसका जवाब बहुत सरल है। एक बहुत अच्छा लीडर बदलावों को पहले ही देख लेता है और उन पर विवेकपूर्ण ढंग से काम करता है। मैनेजर प्रतिक्रिया देता है; लीडर पूर्वानुमान लगा लेता है।

हम एआई और अभूतपूर्व गति के युग में जी रहे हैं। हर दिन नए घटनाक्रम सामने आते हैं। घोषणाएं होती हैं। सोशल मीडिया तरह-तरह के विचारों से भर जाता है। शोर बना रहता है। लेकिन आने वाले कल के विनर्स वे नहीं होंगे, जो इस शोर पर प्रतिक्रिया देते हैं। वे वो होंगे, जो एक्शंस को देखते हैं, तथ्यों को जोड़ते हैं और उनके आधार पर एक स्पष्ट विचार-प्रक्रिया निर्मित करते हैं।

अधिकांश लोग बदलावों को सुर्खियों, भाषणों और सोशल मीडिया रिएक्शंस के जरिये समझते हैं। यह एक भूल है। घोषणाएं भ्रामक हो सकती हैं। ओपिनियन भटका सकते हैं। प्रतिक्रियाएं तो अकसर भावनात्मक ही होती हैं। लेकिन एक्शंस यानी ठोस कार्रवाइयां अलग होती हैं। उन्हें जांचा-परखा जा सकता है। वे मंशाओं को उजागर करती हैं। वे समय के साथ सामने आती हैं और हमें बताती हैं कि कोई व्यक्ति, कम्पनी या देश किस दिशा में आगे बढ़ रहा है। हर मैनेजर, लीडर और व्यक्ति को एक आदत विकसित करनी चाहिए : वास्तविक कार्रवाइयों की पहचान करना और उन्हें शोर से अलग करना।

यह वो अनुशासन है, जो सब कुछ बदल देता है। यह वो अभ्यास है, जिसे मैं अपनाने के लिए प्रेरित करता हूं। समय के साथ कार्रवाइयों का अवलोकन करें। किसी एक क्षण को न देखें, बल्कि क्रम को देखें। उन्हें एक सूत्र में पिरोएं। फिर स्वयं से पूछें : यह पैटर्न क्या संकेत देता है? आगे क्या हो सकता है? एक्शंस को जोड़कर एक सुसंगत लाइन-ऑफ-थिंकिंग बनाने की यह क्षमता आज के समय में लीडरशिप के सबसे शक्तिशाली कौशलों में से एक है। और आप इसका अभ्यास रोज कर सकते हैं।

रोज केवल दस मिनट एक्शंस का अवलोकन करने और तथ्यों को जोड़ने (कनेक्टिंग डॉट्स) में लगाएं। समय के साथ इसका प्रभाव बढ़ता जाता है। आपका माइंड अधिक तेज होता है, आपके निर्णयों में सुधार आता होता है और आपकी अंतर्दृष्टियां विकसित होती हैं- ठीक वैसे ही जैसे बैंक खाते में चक्रवृद्धि ब्याज। छोटे-छोटे दैनिक निवेश असाधारण परिणाम देते हैं।

पूर्वानुमान कोई जादू नहीं है, यह एक मानवीय कौशल है। कुछ लोग मानते हैं कि भविष्य का अनुमान लगाने के लिए विशेष प्रतिभा की आवश्यकता होती है। ऐसा नहीं है। मनुष्य स्वाभाविक रूप से पूर्वानुमान लगा सकते हैं। जब आप किसी मित्र से बातचीत करते हैं, तो अकसर उसके अगला शब्द कहने से पहले ही उसका अनुमान लगा लेते हैं। जब आप क्रिकेट मैच देखते हैं, तो मैदान में निर्मित होने वाली स्थिति को पढ़ते हैं और आगे क्या होगा, इसका कयास लगा लेते हैं। हमारा मस्तिष्क इसी तरह से बना है।

यही स्वाभाविक क्षमता एआई का आधार भी है। एआई भी पैटर्न्स का अवलोकन करता है और पूर्वानुमान लगाता है। आप भी कर सकते हैं।

आप ऑब्जर्व करते हैं। आप पूर्वानुमान लगाते हैं। यदि आप गलत होते हैं, तो एडजस्ट करते हैं। अगली बार आप अधिक सटीक होते हैं। यही सीखने की प्रक्रिया है। इसी तरह से लीडर्स बनते हैं।

अपने क्षेत्र में किसी भी प्रमुख लीडर, बड़ी कंपनी या किसी महत्वपूर्ण डेवलपमेंट को देखें। भावनात्मक प्रतिक्रिया न दें। किसी एक खबर के आधार पर राय न बनाएं। इसके बजाय, पिछले पांच या छह महीनों में लिए गए एक्शंस को देखें। उन्हें क्रम में रखें। फिर तीन प्रश्न पूछें : सबसे पहले कौन-से कार्य हुए? उसके बाद क्या हुआ? कौन-से पैटर्न उभर रहे हैं? फिर यह अनुमान लगाने का प्रयास करें कि आगे क्या हो सकता है। आप गलत हो सकते हैं- यह पूरी तरह स्वीकार्य है। महत्वपूर्ण यह है कि आप अपने मानसिक कौशल का निर्माण कर रहे हैं। हर अभ्यास इसे और मजबूत बनाता है।

एक्शंस को जोड़कर एक सुसंगत लाइन-ऑफ थिंकिंग बनाने की यह क्षमता आज के समय में लीडरशिप के सबसे शक्तिशाली कौशलों में से एक है। और अच्छी बात यह है कि आप इसका अभ्यास हर दिन कर सकते हैं।

आज के दौर में अगर आप अपने संस्थान के बाहर क्या हो रहा है, उसे समझ नहीं पाते, तो अनिश्चितता से नहीं निपट सकते। आप हमेशा प्रतिक्रिया करते रहेंगे, नेतृत्व नहीं कर पाएंगे। अच्छे लीडर्स एक साथ दो जिम्मेदारियां निभाते हैं। उनकी एक नजर आंतरिक क्रियान्वयन पर होती है- आज के काम को सही ढंग से पूरा करना। दूसरी नजर क्षितिज पर होती है- जो आने वाला है, उसे पहले से समझना। सूचना, डेटा और अंतर्दृष्टि अब चौबीसों घंटे उपलब्ध हैं। एडवांटेज उसी को मिलता है, जो उन्हें देखने, जोड़ने और समझने की कला में माहिर हो। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

11 अप्रैल के अंक से विशेष अनुबंध के तहत सिर्फ दैनिक भास्कर में
इकोनॉमिस्ट ने मिडिल ईस्ट युद्ध के नतीजों को अपनी कवर स्टोरी का विषय बनाया है।
मैगजीन ने उसके आर्थिक प्रभावों पर भी नजर डाली है।

The Economist

दैनिक भास्कर अब आप इकोनॉमिस्ट के सभी आर्टिकल **DB एप** पर **हर शनिवार** पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

ओपिनियन युद्ध में अमेरिका की ताकत बेअसर साबित हुई, उसके कोई लक्ष्य पूरे ही नहीं हुए, वहीं इजराइल भी कमजोर पड़ा

ईरान दबाव बनाने में सफल रहा, सबसे बड़ा नुकसान ट्रम्प को

ईरान-अमेरिका युद्ध में सबसे बड़ी हार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की होगी। उनके प्रमुख लक्ष्यों को आघात लगा है। फिलहाल शांति तो अस्थिर प्रतीत होती है। अमेरिका और ईरान के बीच लेबनान, होर्मुज खोलने सहित कई मुद्दों पर असहमति है। इस्लामाबाद में होने वाली वार्ता की योजना पर भी स्थितियां अलग हैं।

ट्रम्प के दोबारा युद्ध न छेड़ने का सबसे पुख्ता कारण है, अब उन्हें लगता है कि युद्ध शुरू ही नहीं करना चाहिए था। वे जानते हैं कि जंग फिर छिड़ने से बाजारों में दहशत फैल जाएगी और मिडिल ईस्ट में सुनहरे युग का आगाज होने की उनकी घोषणा मूर्खता लगेगी। ईरान के पीछे हटने का कारण है उसके नेताओं की मौत। हालांकि उसे नागरिकों की मौतों की ज्यादा चिंता नहीं है लेकिन बिजली और ट्रांसपोर्ट नेटवर्क की तबाही से देश पर शासन करना मुश्किल हो जाएगा। ईरान चाहता है कि प्रतिबंध हट जाएं। वहां की हुकूमत को लगता है बातचीत के लिए अब स्थिति अनुकूल है। इसलिए ये संभावना सबसे ज्यादा है कि ईरान की हुकूमत सत्ता में बनी रहे व लक्ष्य हासिल करने के लिए बातचीत करती रहे। ईरानी नौसेना, वायुसेना खत्म हो चुकी है।

कुछ महीनों तक बना रहेगा युद्ध का दुनिया पर असर

खाड़ी देशों ने ग्लोबल सप्लाई का 10% तेल उत्पादन कम कर दिया है। इंश्योरेंस महंगा होगा। 2026 के अंत में तेल मूल्यों के 75 डॉलर रहने की संभावना है। कतर की गैस उत्पादन क्षमता 17% कम हो गई है। इससे खाद की कमी हुई है। एशिया, यूरोप, उत्तर अमेरिका और अफ्रीका में फसलों की बुआई पर असर पड़ा है। पेट्रोकेमिकल्स, हीलियम, एल्युमीनियम की सप्लाई के दुरुस्त होने में समय लगेगा।

युद्ध में अमेरिका की ताकत को जरूरत से ज्यादा आंका गया

ईरान ने काफी मिसाइल, ड्रोन्स का इस्तेमाल कर लिया है। इनका और निर्माण करने की क्षमता बची नहीं है क्योंकि अर्थव्यवस्था वर्षों पीछे चली गई है। ट्रम्प के ईरानी शासन को खत्म करने के दावे के बावजूद शासन कायम है। वे उम्मीद कर रहे होंगे कि ईरानी जनता शासकों के खिलाफ उठ खड़ी होगी। लेकिन युद्ध से पहले की तुलना में इसकी संभावना कम है। ट्रम्प के नेतृत्व में अमेरिका के पास आत्ममंथन का मौका है। युद्ध ने दिखाया है कि अमेरिका की ताकत को जरूरत से ज्यादा आंकना आसान है। उसकी फैक्ट्रियां तेजी से हथियारों की सप्लाई नहीं कर सकीं। ईरान ने सीमित हथियारों से गैरपरंपरागत युद्ध लड़ा है। अमेरिका की शक्ति चुक गई।

इन बिंदुओं से समझिए युद्ध के नतीजे और भावी असर

परमाणु हथियार बढ़ने का खतरा
ईरान के पास दस परमाणु बम बनाने लायक 400 किलो यूरेनियम है। भावी हमलों से बचने के लिए ईरान के परमाणु बम बनाने के आसार बढ़े हैं। इससे क्षेत्र में परमाणु हथियार बढ़ेंगे। इसे रोकने के लिए अमेरिका को कुछ साल के अंतर पर हमले करना पड़ेंगे।

अमेरिका के तीन लक्ष्य अधूरे रहे
ट्रम्प अभियान को बड़ी जीत बता रहे हैं। लेकिन, ऐसा नहीं लगता है। उनके तीन सबसे बड़े लक्ष्यों में मामूली प्रगति हुई है। ये हैं- ईरान को काबू में करके मिडिल ईस्ट को सुरक्षित-समृद्ध बनाना, ईरान में तख्तापलट और ईरान को परमाणु शक्ति संपन्न बनने से रोकना।

खाड़ी देश देखेंगे नए विकल्प
तेल उत्पादक देशों ने खाड़ी से अलग हटकर तेल सप्लाई के लिए नई पाइपलाइन बना ली हैं। फिर भी ईरान जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमले करने में सक्षम है। खाड़ी देशों को सोचना पड़ेगा कि क्या वे अमेरिका पर निर्भर रह सकते हैं। या अपनी रक्षा खुद करनी चाहिए या ईरान के साथ सहयोग करना चाहिए?

इजराइल पहले से कमजोर हो गया
युद्ध ने इजराइल की सैनिक ताकत से हासिल होने वाले नतीजों की सीमाएं दिखाई हैं। रिपब्लिकन राजनेताओं की प्रशंसा के बावजूद 60% अमेरिकियों की उसके बारे में अच्छी धारणा नहीं है। इसमें पिछले साल से 7% की बढ़ोतरी हुई है। इससे इजराइल कमजोर हुआ है।

ईरान ने पाया एक नया 'हथियार'
युद्ध शुरू होने से पहले इजराइल ने ईरान समर्थक सैनिक गुटों को आंशिक तौर पर तोड़ दिया था। पर ईरान ने खाड़ी देशों पर हमले करके व होर्मुज में शिपिंग रोककर दबाव डालने का नया स्रोत हासिल किया है। खाड़ी देश व तेल कस्टमर आवाजाही पर रोक का विरोध करेंगे।

वर्ल्ड इन ब्रीफ

फ्रांस के खिलाफ रूस चला रहा फेक न्यूज अभियान

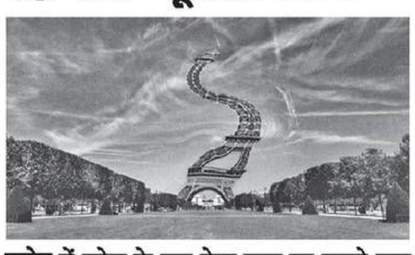

यूरोप में यूक्रेन के बाद फेक न्यूज का सबसे बड़ा शिकार फ्रांस है। रूस की मिलिट्री इंटेलिजेंस एजेंसी जीआरयू के स्टॉर्म 1516 के तहत फर्जी खबरें भेजने का अभियान चलाया जा रहा है। फरवरी में राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों से जेफ्री एपस्टीन के संबंधों पर फर्जी खबर चलाई गई। जनवरी 2025 से फरवरी 2026 के बीच फ्रांस में तूफान आने, तबाही होने के बीस दावे किए गए। रूसी एजेंसी फोटो, वीडियो, फेक न्यूज साइट्स के जरिये फर्जी दावे करती है। वह बॉट्स को फेक न्यूज पर क्लिक के लिए धन देती है।

सीरियाई शरणार्थियों की वापसी का मामला उलझा

दस साल पहले भीषण गृहयुद्ध के कारण सीरिया से आए दस लाख से अधिक शरणार्थियों के जर्मनी में स्थायी तौर पर रहने के आसार बन रहे हैं। उस वक्त चांसलर एंजेला मर्केल ने कहा था कि सीरिया में शांति होने पर वे अपने देश लौट जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हो सका है। पिछले सप्ताह बर्लिन में सीरिया के राष्ट्रपति अहमद अल शारा के साथ प्रेस कांफ्रेंस में जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मत्ज ने कहा कि 80% सीरियाइयों को तीन साल में स्वदेश लौट जाना चाहिए। छह लाख से अधिक शरणार्थियों को किसी तरह की कानूनी सुरक्षा मिल चुकी है।

चीन में एआई से बने माइक्रो सीरियलों ने हलचल मचाई

चीन में एआई से बने दो मिनट के एपिसोड ने मनोरंजन की दुनिया में उलटफेर किया है। स्क्रॉल करने वाली सोशल मीडिया पोस्ट के साथ आने वाले माइक्रो ड्रामा की लागत भी बहुत कम है। बोलने वाली बिल्लियों पर बने एक एनिमेटेड सीरियल को पांच लाख से अधिक व्यू मिल चुके हैं। जनवरी में पिछले साल के मुकाबले लंबे ड्रामा को देखने के समय में 15% गिरावट आई है। वहीं बाइटडांस के एआई माइक्रोड्रामा को देखने वालों की संख्या दो गुना से अधिक बढ़ी है।

© 2022 The Economist Newspaper Limited. All rights reserved

बिजनेस होंडा-निसान घाटे की ओर बढ़ रही

ट्रम्प टैरिफ और चीनी कारों से जापानी ऑटो इंडस्ट्री खतरे में

पिछले माह होंडा के चीफ मिबे तोशिहिरो ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि कंपनी 1957 के बाद पहली बार घाटा उठाने की ओर बढ़ रही है। उन्होंने नाकामी की जिम्मेदारी लेते हुए अपनी और अपने डिप्टी की तनख्वाह में 30% कटौती की जानकारी दी। हालांकि होंडा गंभीर मुश्किलों का सामना कर रही अकेली जापानी कार कंपनी नहीं है। पिछले सप्ताह मिबे ने आगाह किया कि जापान की ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री अस्तित्व के संकट से जूझ रही है। अमेरिका में आयातित कारों पर 25% टैरिफ से इंडस्ट्री का मुनाफा घटा है। सबसे अधिक असर चीनी प्रतिद्वंद्वी कंपनियों ने डाला है।

बिक्री के हिसाब से दुनिया की छठी बड़ी कंपनी निसान में लगातार दूसरे साल कटौती चल रही है। 2028 तक सात फैक्ट्रियां बंद करने की योजना है। 2019 में दुनियाभर में कारों की बिक्री में जापानी कार कंपनियों का हिस्सा 31% था। यह पिछले साल गिरकर 26% हो गया। वहीं दक्षिण पूर्व एशिया में मार्केट शेयर 2023 के 68% से गिरकर 2025 में 57% रह गया।

पड़ोस में बढ़ रही ईवी

पिछले साल ग्लोबल कार मार्केट में हाईब्रिड सहित 26% इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री हुई थी। यह 2019 से 3% अधिक है। जापान के पड़ोस में बिक्री अधिक है। पिछले साल एशिया में बिकी एक तिहाई कारें इलेक्ट्रिक हैं।

© 2022 The Economist Newspaper Limited. All rights reserved

संबंध इलेक्ट्रॉनिक, सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट पर फैसले 60 दिन के अंदर होंगे

भारत-चीन रिश्तों में सुधार के प्रयास बढ़े

2020-2021 में भारत और चीन के सैनिकों के बीच सीमा पर संघर्षों में दर्जनों सैनिक मारे गए और दोनों देशों के रिश्ते ठंडे पड़ गए थे। लेकिन पिछले एक साल से संबंध सुधारने के प्रयास हो रहे हैं। सीमाई झड़प के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहली बार पिछले वर्ष चीन गए थे। अक्टूबर में सीधी हवाई उड़ानें शुरू हो गई। 27 मार्च को दोनों देशों के वाणिज्य मंत्रियों पीयूष गोयल और वांग वेनताओ ने बातचीत की।

भारतीय मैन्युफैक्चरर्स चीनी सामान और जानकारी पर निर्भर हैं। बीजिंग के प्रति व्यावहारिक रुख अपनाने की जरूरत बढ़ रही है। चीन भारत के उदय में मदद तो नहीं करना चाहता है लेकिन वह तनावपूर्ण रिश्ते नहीं चाहता जब उसके पास चिंता करने के और बहुत कारण हैं। चीनी निवेश के प्रति भारत के रूख से इसे समझ सकते हैं। पिछले पांच वर्षों में भारत में चीनी वस्तुओं का आयात बढ़ा है लेकिन पूंजी का आना कम हो गया है। 2020 में भारत द्वारा चीन के निवेश प्रस्तावों को रोकने से ऐसा हुआ है। पिछले माह सरकार ने दो बदलावों का ऐलान किया है- 10% से कम

दोनों देशों की अपनी बाधाएं

भारत 100 अरब डॉलर से अधिक के व्यापार घाटे को कम करना चाहता है। मैन्युफैक्चरिंग में भी निवेश चाहता है। वहीं चीनी विशेषज्ञ लियु जोंगयी ने आगाह किया है कि भारत के नए नियमों के कारण भारतीय कंपनियों के लिए टेक्नोलॉजी लेकर चीनी निवेशकों को बाहर करना आसान हो जाएगा।

चीनी स्वामित्व वाली कंपनियों को कड़ी निगरानी से नहीं गुजरना होगा और इलेक्ट्रॉनिक, सौर ऊर्जा जैसे प्रोजेक्ट पर फैसले 60 दिन के अंदर होंगे।

भारत सरकार को इससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ने की उम्मीद है। बीजिंग में भारत के पूर्व राजदूत शिवशंकर मेनन कहते हैं, नए नियम कई गुंजाइश छोड़ते हैं। स्पष्ट नहीं है कि रुके हुए इन्वेस्टमेंट को अब मंजूरी दी जाएगी। भारत में निवेश का जोखिम उठाने वाली चीनी कंपनियां बढ़ी हैं। वे 10% स्वामित्व सीमा से रुक सकते हैं।

पिछले साल चीन ने खाद, टनल बोरिंग मशीनों के निर्यात पर रोक लगा दी थी। आईफोन असेम्बली प्लांट्स में कार्यरत इंजीनियरों को वापस बुला लिया था। भावी चीनी निवेशक अपने देश की कंपनियों के टैक्स मामलों में उलझने से पीछे हट सकते हैं। चीन की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी बीवाईडी की एक भारतीय वेंचर में निवेश करने की योजना का नतीजा शून्य रहा। चीनी फाइनेंस कंपनी एंट ग्रुप ने पिछले साल भारतीय कंपनी में अपनी हिस्सेदारी बेच दी है।

© 2022 The Economist Newspaper Limited. All rights reserved

बिज़नेस भास्कर

Business Standard और TheEconomist की खबरों के साथ

नई दिल्ली, शनिवार 11 अप्रैल, 2026

बिजनेस ब्रीफ

2025 में स्पेसएक्स को ₹46,430 करोड़ घाटा

न्यूयॉर्क | एलन मस्क की स्पेसएक्स को 2025 में 46,430 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। इस घाटे में मस्क का एआई स्टार्टअप एक्सएआई भी है, जिसे स्पेसएक्स ने फरवरी में खरीदा था। बीते साल कंपनी को कुल 1,71,791 करोड़ रुपए की आय हुई। स्पेसएक्स दुनिया की सबसे सक्रिय कंपनी मानी जाती है।

भारत की ग्रोथ रेट 6.9% रह सकती है: एडीबी

नई दिल्ली| एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर 6.9% रहने का अनुमान लगाया है। बीते वित्त वर्ष विकास दर 7.6% थी। एडीबी का अनुमान रिजर्व बैंक के अनुमान से मेल खाता है। वर्ल्ड बैंक का भी अनुमान है कि इस साल भारत की ग्रोथ 6.6% से ज्यादा रहेगी।

होटल-रेस्टोरेंट पीएनजी कनेक्शन लें: केंद्र

नई दिल्ली | सरकार ने सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों को सलाह दी है कि होटल, रेस्टोरेंट और कैंटीन जैसे कमर्शियल प्रतिष्ठानों को पीएनजी (पाइप्ड नेचुरल गैस) कनेक्शन देने को प्राथमिकता दें। इससे कमर्शियल एलपीजी की डिमांड कम होगी। सरकार का मानना है कि पीएनजी को बढ़ावा देने से एलपीजी पर निर्भरता कम होगी और सप्लाई पर दबाव घटेगा।

भास्कर एनालिसिस निचले स्तरों से ऑटो 13%, रियल्टी इंडेक्स 19% रिकवर

महीने भर बाद निफ्टी 24,000 पार, छह हफ्तों की गिरावट पर लगा ब्रेक

भास्कर न्यूज | मुंबई

घरेलू शेयर बाजार ने शुक्रवार को शानदार रिकवरी की। निफ्टी 50 ठीक एक महीने बाद 24 हजार के मनोवैज्ञानिक स्तर के ऊपर बंद होने में सफल रहा। वहीं, सेंसेक्स ने भी 918 अंक (1.2%) उछलकर 77,550 पर बंद हुआ। इस तेजी के साथ ही छह हफ्तों से जारी गिरावट का सिलसिला थम गया। इन दोनों बेंचमार्क इंडेक्स ने इस हफ्ते 6% की बढ़त दर्ज की, जो जनवरी-फरवरी 2021 के बाद का सबसे बेहतरीन साप्ताहिक क्लोजिंग है। एसबीआई सिक्युरिटीज के वीपी सुदीप शाह ने कहा कि निफ्टी 500 के 433 शेयरों में तेजी रही। एक हफ्ते की तेजी ने पिछले तीन हफ्तों के पूरे घाटे की भरपाई कर दी है, जो खरीदारों की मजबूत वापसी का संकेत है। शाह के मुताबिक ऑटो और रियल्टी इंडेक्स 2.5% से ज्यादा की बढ़त के साथ टॉप पर रहे। अपने निचले स्तर से ऑटो 13% और रियल्टी इंडेक्स 19% रिकवर हो चुका है। हालांकि निफ्टी आईटी इंडेक्स दबाव में रहा। निफ्टी 24,200-24,250 के ऊपर टिकता है, तो शॉर्ट टर्म में यह 24,400 और फिर 24,600 के स्तर को छू सकता है।

आईटी इंडेक्स को छोड़कर सभी सेक्टरों में उछाल, जानिए वजह

▪ **अस्थिरता तेजी से घट रही...** बाजार में डर को मापने वाला इंडेक्स 7.7% गिरकर 18.8 पर आ गया, जो दर्शाता है कि अस्थिरता कम हो रही है। शुक्रवार को निफ्टी आईटी को छोड़कर सभी इंडेक्स चढ़े। इसमें 1.9% की गिरावट देखी गई।

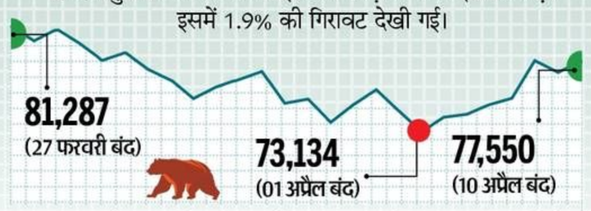

451

लाख करोड़ रुपए पहुंच गया बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल मार्केट कैप। शुक्रवार की तेजी से यानी एक दिन में निवेशकों की संपत्ति में 6.87 लाख करोड़ रुपए का उछाल आया।

शुक्रवार को जहां निफ्टी 50 में 0.87% की बढ़त रही, वहीं निफ्टी आईटी इंडेक्स 2.8% गिरकर 30,721.4 के स्तर पर आ गया। इंडेक्स के 10 में से 9 शेयर लाल निशान में रहे। कोफोर्ज, इन्फोसिस, और टीसीएस में 3% से ज्यादा गिरावट देखी गई। गिरावट के 3 प्रमुख कारण

1 नए एआई मॉडल 'मिथोस' का डर हावी

मोतीलाल ओसवाल की रिपोर्ट के अनुसार, एंथ्रोपिक का नया मॉडल मिथोस कोडिंग, साइबर सिक्योरिटी में इंसानों से बेहतर है। निवेशकों को डर है कि यह सॉफ्टवेयर कंपनियों के प्रॉफिट मार्जिन को कम कर सकता है और वर्कफोर्स की जरूरत घटा सकता है।

2 टीसीएस के नतीजों के बाद मिली-जुली राय

टीसीएस के चौथी तिमाही के नतीजे उम्मीद के मुताबिक थे, पर शेयर 3% गिरकर 2,505 पर आ गए। पूरे साल के लिहाज से कंपनी कमजोर रही। एबिटा मार्जिन 25.3% रहा, जो इंडस्ट्री में सबसे बेहतर है, लेकिन मार्जिन विस्तार उम्मीद से कम रहा।

3 रुपए में मजबूती से आय घटने की आशंका

रुपया 10 पैसे मजबूत होकर 92.41/ डॉलर पर पहुंच गया। मजबूत रुपए का सीधा असर आईटी कंपनियों की डॉलर से होने वाली आय पर पड़ता है। ईरान संघर्ष व वैश्विक अनिश्चितता के कारण निवेशक आईटी जैसे रिस्की सेक्टर से दूरी बना रहे हैं।

▪ मिराए एसेट शेयरखान के मानव मेदेवाला के मुताबिक बाजार एक सवाल पूछ रहा है- क्या एआई विकास को बढ़ाएगा या यह मुनाफे और कर्मचारियों की संख्या को घटाने वाला बल बनेगा? यही अनिश्चितता संस्थागत निवेशकों को दूर रख रही है। वेल्थमिल्स सिक्युरिटीज के क्रांति बाथिनी के मुताबिक आईटी शेयर फिलहाल ठहराव के दौर में हैं। अनिश्चितता के कारण शॉर्ट से मीडियम टर्म में खरीदारी की दिलचस्पी कम है।

खेती-किसानी • गेहूं-बागवानी फसलों पर सबसे ज्यादा मार पड़ी

बेमौसम बारिश-ओले... देश में 2.5 लाख हेक्टेयर फसलें तबाह, केंद्र कर रहा सर्वे

बिजनेस संवाददाता | भोपाल

देश के कई हिस्सों में बिगड़े मौसम ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से अब तक करीब 2.49 लाख हेक्टेयर रबी फसलें तबाह हुई हैं। 8 अप्रैल तक के आंकड़ों के मुताबिक, सबसे ज्यादा असर गेहूं, आम, लीची पर हुआ है।

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि केंद्र ने तीन विभागों को नुकसान आंकने के लिए सर्वे की जिम्मेदारी दी है। मंत्रालय के अधिकारी राज्यों के साथ मिलकर जानकारी जुटा रहे हैं। वह रायसेन कृषि मेले में किसानों को संबोधित कर रहे थे। मौसम विभाग के मुताबिक, 2-8 अप्रैल के बीच मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर के राज्यों में बारिश हुई। एमपी, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, यूपी सहित 15 राज्यों में ओलावृष्टि के साथ तेज हवाएं चलीं।

राहत: खरीफ के लिए ₹41,534 करोड़ की सब्सिडी

सरकार जून से शुरू होने वाली खरीफ बुआई हेतु खाद की आपूर्ति सुनिश्चित कर रही है। पश्चिम एशिया के तनाव के कारण वैश्विक कीमतें बढ़ने से किसानों को बचाने के लिए सब्सिडी 11.6% बढ़ाई गई है। फॉस्फेटिक और पोटाश के लिए इसे 37,216 करोड़ से बढ़ाकर 41,534 करोड़ रुपए कर दिया गया है।

तकनीक: अब एग्रीस्टैक आईडी से मिलेगी खाद

कालाबाजारी और औद्योगिक उपयोग रोकने के लिए एमपी-हरियाणा में पायलट प्रोजेक्ट शुरू हुआ है। अब एग्रीस्टैक-लिंक्ड पहचान पत्रों से ही खाद मिलेगी। देश में 13 करोड़ के लक्ष्य के मुकाबले 9.29 करोड़ किसान आईडी बन चुकी हैं।

चुनौती: औसत जमीन सिर्फ 0.9 हेक्टेयर प्रति किसान

खेती की औसत जमीन घटकर 0.9 हेक्टेयर प्रति किसान रह गई है। यह पैदावार बढ़ाने में बड़ी बाधा है। गेहूं-चावल के भंडार के बावजूद देश दालों और खाद्य तेलों के लिए आयात पर निर्भर है। चौहान ने किसानों को संबद्ध गतिविधियों से जुड़ने की सलाह दी।

रणनीति: हर राज्य के लिए बनेगा अलग कृषि रोडमैप

मंत्रालय अब एग्रो-क्लाइमेट जोन के आधार पर राज्यों के लिए अलग रोडमैप तैयार कर रहा है। इसके लिए पांच जोनल कॉन्फ्रेंस होंगी। कृषि मेलों के जरिए किसानों को नई तकनीकों से सीधा जोड़ा जाएगा।

कॉर्पोरेट विवाद

शापूरजी ने फिर की टाटा सन्स की लिस्टिंग की मांग

भास्कर न्यूज | मुंबई

शापूरजी पालोनजी (एसपी) समूह ने शुक्रवार को एक बार फिर शेयर बाजार में टाटा सन्स की लिस्टिंग की मांग उठाई। चेयरमैन शापूरजी पालोनजी मिस्त्री ने कहा कि यह सिर्फ नियमों का पालन नहीं, बल्कि बेहतर गवर्नेंस, पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए जरूरी है।

मिस्त्री ने कहा कि ऐसा कोई ठोस सबूत नहीं है, जिससे साबित हो कि लिस्टिंग से टाटा ट्रस्ट्स को नुकसान होगा। शेयर लिस्टिंग से निवेशकों का दायरा बढ़ेगा, शेयरधारकों को फायदा मिलेगा और ट्रस्ट्स के लिए स्थिर डिविडेंड के जरिये सामाजिक कार्यों को और मजबूती मिलेगी। सुत्रों के मुताबिक, टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन नोएल टाटा लिस्टिंग के सख्त खिलाफ हैं। दूसरी तरफ ट्रस्टी वेणु श्रीनिवासन और विजय सिंह ने इस विचार का समर्थन किया है।

युवाओं में हार्ट रिस्क... हेल्थ इंश्योरेंस 50% तक महंगा

अमित कुमार | नई दिल्ली

हृदय रोग अब सिर्फ बुजुर्गों की बीमारी नहीं रही। 20-30 साल के युवाओं में भी बढ़ते कार्डिएक मामलों ने हेल्थ इंश्योरेंस को महंगा और मुश्किल बना दिया है। हेल्थ प्लेटफॉर्म प्लम के एक लाख क्लेम और 10,000 हेल्थ चेकअप के विश्लेषण में युवाओं में 'साइलेंट' हार्ट रिस्क तेजी से बढ़ता दिखा है। बीमा कंपनियां इस जोखिम की कीमत सीधे ग्राहकों से वसूल रही हैं। हर तीन में से एक आवेदक को 10-50% अतिरिक्त प्रीमियम देना पड़ रहा है। हर पांच में से एक प्रस्ताव सीधे खारिज हो रहा है। वेटिंग पीरियड भी बढ़ाया जा रहा है। 60% हार्ट क्लेम में सर्जरी जरूरी होती है। सामान्य मामलों में 63,000, स्टेंट पर 2.5 लाख, बाईपास पर 3.2 लाख और गंभीर मामलों में 28 लाख रुपए तक खर्च होते हैं।

अब 20-30 साल की उम्र में ही प्रिवेंटिव स्क्रीनिंग

- अब तक बीमा कंपनियां कम उम्र कम प्रीमियम मॉडल पर काम करती थीं। अब यह मॉडल बदल रहा है।
- बीएमआई या सामान्य कोलेस्ट्रॉल ही नहीं, एपो-बी और इन्फ्लेमेशन इंडिकेटर्स भी देखे जा रहे हैं।
- 20-30 साल की उम्र में ही प्रिवेंटिव स्क्रीनिंग की जा रही है।
- पहले युवाओं के कम क्लेम से बुजुर्गों का खर्च मैनेज होता था।

बचाव के लिए क्या करें?

जल्दी पॉलिसी लें: किसी भी रिस्क मार्कर के उभरने से पहले पॉलिसी लॉक करना भविष्य के 'प्रीमियम लोडिंग' से बचा सकता है।

गहन जांच: सामान्य लिपिड प्रोफाइल के बजाय एडवांस हार्ट चेकअप (जैसे एपो-बी' टेस्ट) करवाएं, ताकि बीमारी का शुरुआती स्टेज पर पता चल सके।

645 करोड़ की डिजिटल पेंटिंग शून्य की हुई, लेने वाले को पछतावा नहीं

बिजनेस संवाददाता | सिंगापुर

सिंगापुर की वह रात विग्नेश सुंदरासन कभी नहीं भूल सकते। घड़ी की सुइयां सुबह के 4 बजा रही थीं। विग्नेश आईमैक के सामने बैठे थे। उनके डेस्क पर स्टारबक्स कॉफी के खाली कपों की कतार थी और पास में ही कुछ बैकअप कंप्यूटर तैयार रखे थे, ताकि क्रिस्टी की नीलामी वेबसाइट पर कोई तकनीकी अड़चन उनके अरमानों पर पानी न फेर दे। उस रात उस वेबसाइट पर 2.2 करोड़ लोग इतिहास बनते देख रहे थे। दो हफ्ते पहले जिस कलाकृति की बोली 10 हजार रुपए से शुरू हुई थी, लेकिन अंतिम घंटे में 33 बोलीदाताओं के बीच छिड़ी जंग ने सबको हैरान कर दिया। जब हथौड़ा गिरा, तो उन्होंने इसके लिए करीब 645 करोड़ रुपए चुकाए। यह कोई वन गॉग या पिकासो की पेंटिंग नहीं थी, बल्कि बीपल (माइक विंकेलमैन) द्वारा बनाई गई 5,000 डिजिटल तस्वीरों का एक कोलाज था। यह किसी जीवित शख्स की आर्ट के लिए लगाई गई तीसरी बड़ी बोली है।

सुंदरासन ने 12 की उम्र में उधारी के कम्प्यूटर के साथ शुरू की थी कोडिंग

37 साल के सुंदरासन तमिलनाडु के होसुर में पले-बढ़े। 12 की उम्र में उधारी के कंप्यूटर पर घर से ही कोडिंग शुरू कर दी थी। उन्होंने क्रिप्टो एक्सचेंज से लेकर बिटकॉइन एटीएम तक के व्यवसाय खड़े किए, लेकिन पहचान इसी नीलामी से ही मिली। सिंगापुर में उन्होंने 'पडिमाई आर्ट एंड टेक स्टूडियो' नाम से एक गैलरी खोली है। इसमें वीआर हेडसेट से कला का अनुभव किया जा सकता है। इस गैलरी में प्रवेश मुफ्त है। वे चाहते हैं कि लोग वहां आएं। तकनीकी और सृजनात्मकता को महसूस करें, न केवल कीमत पर चर्चा करें।

vijay sales

Trust Matters

www.vijaysales.com

NOW OPEN AT
EDM MALL
Ground Floor, Plot No.1,
Kausambi, Ghaziabad
Uttar Pradesh - 201010

Prices so low, you cannot resist.

Vijay Sales Apple Days

11th April 2026 Onwards

iPhone17 Pro
Starting at
₹1,24,190*
₹10,683* x 12 month

iPhone17
Starting at
₹75,790*
₹3,283* x 24 month

iPhone16
Starting at
₹64,490*
₹5,541* x 12 month

iPhone15
Starting at
₹54,900*
₹4,742* x 12 month

WATCH Ultra 3
Starting at
₹78,990*
₹9,110* x 9 month

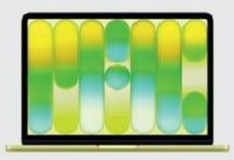
MacBook Neo
Starting at
₹60,290*
₹2,679* x 24 month

iPad
11th Gen
Starting at
₹30,490*
₹1,354* x 24 month

AirPods 4
Starting at
₹10,990*
₹500* x 24 month

Up to ₹7,000* instant cashback on credit cards of AXIS BANK | ICICI Bank | SBI card + Exchange Bonus up to ₹10,000* Powered By CASHIFY | No Cost EMI schemes available on | ICICI Bank | IDFC FIRST Bank | Protect+ with AppleCare Services

Up to 24 Months No Cost EMI | Offer valid at Vijay Sales stores & For more offers visit: vijaysales.com

*Starting price inclusive of Cashback Exchange bonus additional

AMERICAN EXPRESS
INSTANT DISCOUNT UP TO ₹20,000*
ON AMERICAN EXPRESS EMI TRANSACTIONS

HSBC
INSTANT DISCOUNT UP TO ₹12,000*
ON CREDIT CARDS EMI & NON EMI TRANSACTIONS

HDFC BANK
INSTANT DISCOUNT UP TO ₹7,500*
WITH EASYEMI ON HDFC BANK CREDIT CARDS

UP TO ₹30,000/- INSTANT DISCOUNT & CASHBACK ON CREDIT CARD / DEBIT CARD & PAPER FINANCE
RBL BANK | onecard | BOBCARD | YES BANK | DBS | AU SMALL FINANCE BANK | IDFC FIRST Bank CONSUMER DURABLE LOAN | BAJAJ FINSERV | HDB FINANCIAL SERVICES

VIJAY SALES (INDIA) PVT. LTD.

SCAN FOR STORES

MUMBAI | PUNE | AHMEDABAD | SURAT | GANDHINAGAR | VADODARA | DELHI | GURUGRAM | NOIDA | INDIRAPURAM | FARIDABAD | GHAZIABAD | HYDERABAD | WARANGAL | ANDHRA PRADESH

DELHI - Model Town III | Pitampura | Rohini (E) | Paschim Vihar | Uttam Nagar (E) | Dwarka | Rajapuri | Janakpuri | Rajouri Garden | Patel Nagar | Karol Bagh | Lajpat Nagar II | Kalkaji | Saket J-Block | Vikas Marg | Dilshad Garden | Daryaganj | Indirapuram | Ghaziabad - RDC Rajnagar | Noida | Greater Noida | Gurugram | Old Gurugram | Faridabad - Crown | Faridabad - Mewla Maharajpur | Hauz Khas | Narela | Dundahera | Najafgarh | Nangloi | Dwarka Mor | Burari | Budh Vihar | Palam Vihar | Durgapuri | Gaur Chowk | Roop Nagar

Now Open - ASHOK VIHAR II: K C Goel Marg, Opposite Deep Market, Ashok Vihar II, New Delhi-110052 | ROHINI SECTOR-16: Giani Gurumukhi, Musafir Marg, Near Jhanda Chowk, New Delhi 110042
KRISHNA NAGAR: F-3/11 & F-3/12, Krishna Nagar, Delhi - 110051, Oppo. Happy English School | AMOLIK PLAZA: Shop No. 19-20, Near DPS Chowk, Sector-81, Faridabad, Haryana - 121002
Mahavir Enclave: RZD-69 Mai Road, Mahavir Enclave Part -1, Near Dashrath Puri Metro Station, New Delhi-110045 | BhajanpuraA: 32, Main Road Wazirabad, Opposite C Block Yamuna Vihar Bus Stand, Brijpuri, Bhajanpura

For special discounts on corporate and builder enquiries, please email us at b2b@vijaysales.com

Scan to Shop Online
www.vijaysales.com

*Conditions apply. This offer includes all other discounts also. No other offer can be clubbed with this offer. Images shown are for illustrative purpose only. Offer till stocks last. Finance offer applicable at the sole discretion of Financier. #Processing Fees and other charges is applicable as per Financier Bank. For Paper Finance: Please bring Aadhaar Card, Pan Card, Electric Bill & Cancelled Cheque. Offer is based on minimum transactions slabs defined by Finance company. Convenience fees will be applicable for HDB finance Cashback. Kindly speak to our store sales staff for the "Terms and Conditions" of all the bank offers, and for the respective Instant Discount/Cashback amounts applicable on each Bank. *Cashback Applicable Select Banks & Cards. Upto off on select brands and models only.

मुंबई घडवणारे उद्यमी मराठी हात

सचिन रोहेकर
sachin.rohekar@expressindia.com

मुंबईला स्वप्ननगरी म्हणून घडवण्याच्या जादूकडे जे लोक आकर्षित झाले आणि पुढे त्यांनीच मुंबईच्या घडणीत योगदान दिले अशांपैकी एक म्हणजे तात्यासाहेब अर्थात वामन श्रीधर आपटे. कापड व्यवसायातील भागीदारीपासून सुरू झालेला त्यांचा प्रवास आणि साखर कारखाने, मूकपट निर्मिती अशा विभिन्न क्षेत्रांतील त्यांचे उद्यम साहस याचा मागोवा घेणारे त्यांच्या पणतीने लिहिलेले पुस्तक...

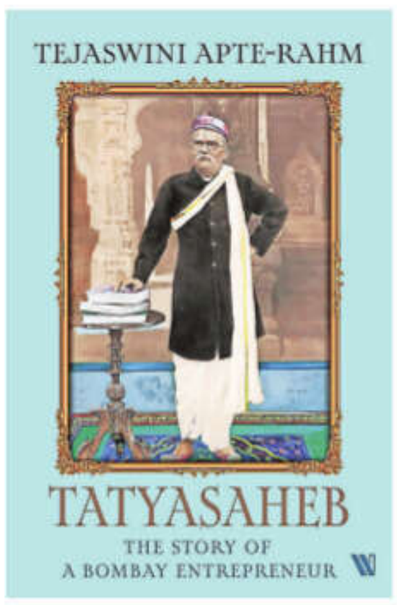

'तात्यासाहेब : दी स्टोरी ऑफ अ बॉम्बे आंत्रप्रेन्युअर'
लेखिका – तेजस्विनी आपटे-राम
प्रकाशक – वेस्टलँड बिझनेस
पाने– २७३, **किंमत**– ६९९ रु.

सामान्य आर्थिक स्थितीतील एका स्थलांतरित कोकणस्थ ब्राह्मण कुटुंबात जन्म. गिरगावच्या चाळीतील वास्तव्यात, कुटुंबातील सोवळं-ओवळं, विटाळ, शुद्धता आणि अशुद्धतेची पाय जखडून ठेवणारी कर्मठ सामाजिक बंधनं. अशातही अत्यंत कल्पकतेने केलेल्या आंतरधार्मिक भागीदाऱ्या, केवळ सुशिक्षित असण्याचाच नव्हे तर बहुभाषक कौशल्यांचा खुबीने वापर आणि मुख्य म्हणजे माणसांची अचूक पारख, शिस्त आणि अथक कार्यनिष्ठा हाच गाठीशी असलेला मुख्य ऐवज. याच भांडवलाच्या जोरावर कापड उद्योग, चित्रपट निर्मिती (सायलेन्ट फिल्म्स), साखर उद्योग अशा अगदी भिन्न धर्माच्या व्यवसायात जम. वाऱ्याची दिशा ओळखण्याची कुशाग्र व्यापारी बुद्धी आणि त्यामुळे तेजी खुणावत असलेल्या व्यवसायात उडी घेऊन चमत्कारिक यश. बघता बघता चाळीतल्या एका खोलीतील बिऱ्हाड थेट समुद्रकिनाऱ्यावरील आलिशान बंगल्यापर्यंत पोहोचते आणि मुंबईच्या व्यापार वैभवात मानाचे स्थान मिळवते... १९ व्या शतकातील मुंबईतील ब्रिटिशांच्या गोऱ्या वर्तुळातील प्रभावशाली नामावलीत एक मराठी नावदेखील कर्तबगारी गाजवत होते.

ते नाव म्हणजे तात्यासाहेब अर्थात वामन श्रीधर आपटे. त्यांचीच पणती (नातवाची मुलगी, चौथ्या पिढीची प्रतिनिधी) आणि नामांकित लेखिका तेजस्विनी आपटे-राम यांनी लिहिलेल्या 'तात्यासाहेब: द स्टोरी ऑफ ए बॉम्बे आंत्रप्रेन्युअर' या चरित्रात हा दीडशे वर्षांपूर्वीचा उद्यम इतिहास ग्रथित आहे. १८७५ ते १९५२ असा तात्यासाहेबांचा केवळ जीवनकालच नव्हे, तर त्या काळात घडत गेलेल्या मुंबई आणि या नगरीच्या उद्यम ऊर्मीचा पटही त्यांनी प्रभावीपणे खुलवला आहे.

भारतातील स्वदेशी वाणिज्यवादाचे युग ज्याला म्हटले जाते त्या १८६० ते १९४० या काळात एकीकडे डेव्हिड ससून, जीजीभॉय, वाडिया, टाटा तर, दुसरीकडे प्रेमचंद रायचंद, बिर्ला, रुईया या पंक्तीतच बसेल असे आपटे हेही एक नाव होते. पण कापूस, अफू अथवा दलाली-सावकारी या पारशी, माहेश्वरी, गुजराती समुदायाची मक्तेदारी असलेल्या क्षेत्रांचा अपवाद करत तात्यासाहेबांनी वेगळी वाट चोखाळत आपला ठसा उमटवला.

त्या काळी 'मँचेस्टर ऑफ द ईस्ट' असे वर्णन केला गेलेला मुंबईतील गिरणगाव उदयास आला होता. येथील क्षितिजावर कापड गिरण्यांची उंच धुरांडीच केवळ दिसत. लेखिका सांगतात, तेव्हा म्हणजे विसाव्या शतकाच्या उंबरठ्यावर, १९०० साली या परिसरात एकूण १३६ कापड गिरण्या सुरू होत्या. त्याआधीच म्हणजे १८९२ मध्ये १७ वर्षीय तात्यांनी मुंबईतील मुळजी जेठा (एमजे) या कापड बाजारात उमेदवारी सुरू केली होती. वयाच्या सहाव्या-सातव्या वर्षी मोठ्या बंधूंसह गुजरातमध्ये जावे लागलेले आणि तेथेच इंग्रजी माध्यमात मॅट्रिकपर्यंत शिकलेले तात्या हे मराठी, इंग्रजीसह, गुजराती भाषेतही निष्णात होते. द्वारका, गुजरातमध्येच त्यांची एमजे मार्केटमधील कापड व्यापारी वल्लभदास यांच्याशी झालेली ओळख पुढे उपयोगी ठरते. सुरुवातीचा प्रशिक्षण काळ, एमजे मार्केटमधील वल्लभदास, पुढे मोरारजी वेलजी यांच्याकडे काही काळ काम करून, तात्यांचा गोविंदजी मोरारजींसह भागीदारीत स्वतःचा व्यवसाय १८९४ मध्ये सुरू होतो. पुढे प्लेग साथीच्या उद्रेकाने मुंबई सोडावी लागल्याने तोट्यात गेलेली ही भागीदारी गुंडाळावी लागते. व्यवसायातील पहिल्या पावलावरच्या या अपयशाने खचून जाण्याऐवजी तात्या १ जुलै १८९८ला गुजरातीबहुल एमजे मार्केटमध्ये स्वतःची पेढी सुरू करतात.

पहिल्या वर्षीच कमावलेला ३०० रुपयांचा नफा ही तात्यांची उमेद वाढवणारी सुरुवात ठरते. दोन वर्षांत नफ्याचे प्रमाण १२,००० अशा त्या काळी अवाढव्य व अकल्पनीय स्तरावर पोहोचते. तोवर एमजे मार्केटमधील मोठे प्रस्थ झालेले तात्या पुढे ब्रिटिश अधिकाऱ्याच्या अमलाखाली कोहिनूर मिल्सचे एकमेव विक्रेते होतात. त्या काळी कोणत्याही गिरणीची 'सोल एजन्सी' ही खासच होती. तात्यांची तेथील कामगिरी तर कोहिनूर मिल्सच्या यशाचीही मुख्य आधारस्तंभ ठरली.

या प्रवासात त्यांनी केलेल्या भागीदाऱ्या पुढे जीवनभर उपयोगी पडल्या. विशेषतः कोहिनूरचे व्यवस्थापन पाहणारी ब्रिटिश कंपनी 'किलिक निक्सन अँड कं.' आणि तिचे अध्यक्ष थॉमस ब्रिकेट यांच्याशी संबंधांतून तात्यांना ब्रिटिश कॉर्पोरेट संस्कृतीचा जवळून परिचय झाला. यातून कोहिनूरच्या संचालक मंडळावरही त्यांना स्थान देण्यात आले. फलटणसारख्या ग्रामीण भागात साखर कारखाना सुरू करण्याचे धाडस जेव्हा तात्यांनी केले, तेव्हाही ब्रिकेट आणि किलिक निक्सन अँड कंपनीशी राहिलेले सख्य त्यांना लाभदायी ठरले.

मूकपटांच्या व्यवसायात तात्यांचा प्रवेश मात्र ठरवून झाला नाही. कापड व्यवसायातील काही भागीदारांच्या बैठकीत असतानाच, त्यांना एक पत्र सोपवण्यात आले. या पत्रात दादासाहेब फाळके यांना चित्रपट निर्मितीसाठी आर्थिक साहाय्य करण्याची शिफारस करण्यात आली होती. ही शिफारस खुद्द लोकमान्य टिळक यांनीच केली होती. तात्या यांचा स्वातंत्र्यलढा अथवा राजकारणाशी संबंध नसला तरी त्यांच्या मनात टिळकांविषयी नितांत आदर होता. चित्रपटांविषयी काहीही माहिती नसतानाही, फाळके यांना अर्थसाहाय्यास ते तात्काळ राजी झाले. 'हिंदुस्तान फिल्म कंपनी'ची मुहूर्तमेढ अशी रोवली गेली. १६ वर्षांच्या कालावधीत तात्यांनी सुमारे १०० मूकपटांची निर्मिती केली, ज्यापैकी साधारण ४० चित्रपटांचे दिग्दर्शक स्वतः फाळके होते.

ब्रिटिशांनी १९३० च्या सुमारास साखर उत्पादनाला प्रोत्साहनाचे धोरण आखले. तरी दुष्काळी आणि अत्यंत दुर्गम अशा फलटणमध्ये साखर कारखाना सुरू करण्याची कल्पनाही त्याकाळी अशक्य सोडाच, वेडेपणाचीच होती. मालोजीराजे हे फलटण संस्थानाचे राजे आणि द्रष्टे नेते, त्यांचे तात्यांशी कौटुंबिक मैत्रीचे संबंध हेच फलटण शुगर वर्क्स उभा राहण्यामागचा विश्वास होता, जो खराही ठरला. 'वामन सेठ'च्या भरवशावर मफतलाल गगनभाई आणि नहालचंद लालूचंद हे साखर व्यवसायातील कसलीही माहिती नसलेले आर्थिक भागीदार उभे राहिले. पुढे १९४२ मध्ये कंपनीच्या समभागांची-प्रत्येकी १२५ सार्वजनिक विक्री होऊन, तिला 'पब्लिक लिमिटेड' रूप दिले जाते. तीन भागीदारांनी ४० लाखांच्या गुंतवणुकीतून उभ्या केलेल्या कंपनीतील ३० टक्के हिस्सा विकून ते ३० लाख रुपये परतावा स्वरूपात मिळवितात. सर्वांत उल्लेखनीय योगदान हे की, पश्चिम महाराष्ट्रात आज चांगल्याच फोफावलेल्या साखर पट्ट्याच्या उदयास फलटणचा हा यशस्वी प्रयोग कारण ठरला.

तेव्हाची म्हणजेच दीडशे वर्षांपूर्वीची मुंबई हीदेखील स्वप्नांची आणि संधींचीच नगरी होती. किंबहुना, 'हिंदुस्तान फिल्म कंपनी'चे मॅनेजिंग पार्टनर या नात्याने, लोकांसाठी स्वप्ने विणण्यात खुद्द तात्यांचाही प्रत्यक्ष सहभाग होता. लेखिकेने हे पुस्तक लिहायला घेतले तोपर्यंत त्यांना त्यांचेच पणजोबा असले तरी तात्यांबाबत खूपच त्रोटक माहिती होती. अगदी इतिहास संशोधकाच्या भूमिकेत शिरून मिळेल त्या स्रोतातून माहिती मिळवत, त्याच्या अन्य स्रोतांद्वारे पडताळ्याच्या दशकभराच्या प्रयासातून हा लेखनप्रपंच त्यांनी पुरता निरपेक्षपणे पूर्ण केल्याचे त्या सांगतात. चरित्रपर लेखनातील केवळ गुणगानाचा मोह टाळणारा हा तटस्थपणा या पुस्तकाचे मोल निश्चितच वाढवणारा आहे.

देशाची आर्थिक राजधानी म्हणून मुंबईवर जो आज मुकुट सजला आहे तो अशा अनेक ध्येयासक्त, महत्त्वाकांक्षी कतृत्ववानांच्या असामान्य भासेल अशा उद्यम साहसातून एक एक वीट रचली जात आकाराला आला आहे. या स्वप्ननगरीच्या घडवण्याच्या जादूने हे लोक आकर्षित झाले आणि पुढे त्यांनीच मुंबईच्या घडणीत योगदान दिले. एकेकाळची सुंदर बेट नगरी मुंबईचे ते जुने रूप, झाडांनी डवरलेले मोकळे रस्ते, निवांतपणा वगैरेच्या आठवणी आज अनेकांसाठी केवळ मनांतील हळहळ बनून राहिल्या असतील. परंतु मुंबईचे अंगभूत सृजनरूप त्यांनाही नाकारता येणार नाही. या नगरीच्या त्याच वैशिष्ट्याला, तिच्या पूर्ववैभवाच्या इतिहासाला समजून घेण्यासाठी या पुस्तकाला जरूरच विचारात घेतले जावे.

विस्मृतीत गेलेली 'युगयात्रा'

'युगयात्रा' ही केवळ इतिहासातील एक यात्रा नाही; ते आपल्या वर्तमानाचे जिवंत प्रतिबिंब आहे, याची जाणीव करून देणाऱ्या नाटकाविषयी अनुवादकाचे मनोगत, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या जयंतीनिमित्त (१४ एप्रिल)...

डॉ. रवींद्र म्हसदे
इंग्रजी विभागप्रमुख व प्राध्यापक,
नेस वाडिया महाविद्यालय, पुणे
ravindra.mhasade@gmail.com

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या जयंतीनिमित्त (१४ एप्रिल) त्यांचे स्मरण केले जात असताना, त्यांच्या चिरंतन विचारांबरोबरच ते विचार जनसामान्यांपर्यंत पोहोचवणाऱ्या साहित्यकृतींचाही पुनर्विचार करणे आवश्यक ठरते. त्यांपैकीच एक महत्त्वाची साहित्यकृती म्हणजे 'युगयात्रा'. प्राचार्य एम. बी. चिटणीस यांनी लिहिलेले हे एक उल्लेखनीय, परंतु दीर्घकाळ दुर्लक्षित राहिलेले मराठी नाटक आहे, ज्याचा इंग्रजी अनुवाद 'युगयात्रा : द जर्नी ऑफ एजेस' नुकताच साहित्य अकादमी, नवी दिल्ली यांनी प्रकाशित केला आणि व्यापक वाचकवर्गासाठी उपलब्ध करून दिला आहे. १४ एप्रिल १९५५ रोजी बाबासाहेबांचा ६४ वा जन्मदिन साजरा करण्यासाठी या नाटकाचा पहिला प्रयोग औरंगाबाद येथील नागसेन वन परिसरात तीन हजार प्रेक्षकांसमोर सादर करण्यात आला. या नाटकाने गेल्या वर्षी सत्तरीच्या महोत्सवी प्रवासाचा टप्पा पार केला. 'युगयात्रा' हे केवळ एक नाटक नाही; ते एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक कथन आहे, जे भारतातील शोषित समाजघटकांच्या शतकानुशतकांच्या ऐतिहासिक प्रवासाचे प्रभावी चित्रण करते. आंबेडकरी विचारसरणीत खोलवर रुजलेले हे नाटक मानवी प्रतिष्ठा, समता आणि न्याय यांसाठीच्या संघर्षाचे प्रभावी साहित्यिक रूप साकारते.

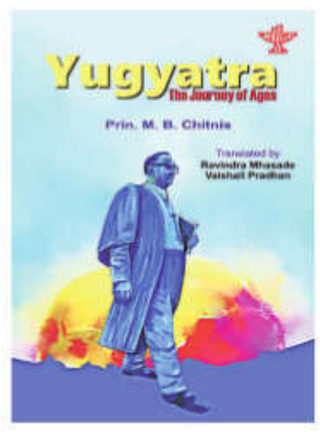

या नाटकाला विशेष महत्त्व प्राप्त करून देणारी गोष्ट म्हणजे चिटणीस यांचा डॉ. आंबेडकर यांच्याशी असलेला निकटचा संबंध. त्यांच्या बौद्धिक सहवासात अनेक वर्षे घालवताना नाटककारांनी जात, धर्म, राजकारण आणि शिक्षण यांबाबतचे आंबेडकरांचे चिंतन आत्मसात केले. हेच विचार नाटकाच्या तात्त्विक गाभ्याला आकार देतात, ज्यामुळे ते सर्जनशीलतेबरोबरच एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक दस्तावेज ठरते. नाटकाची सुरुवात 'शंबूक' या शोकांत, पण संघर्षशील व्यक्तिरेखेच्या प्रभावी प्रसंगाने होते. वर्णाने शूद्र असलेल्या तपस्वी शंबूकाची आत्ममुक्तीची धडपड जातिव्यवस्थेच्या कठोर चौकटीत अपराध मानली जाते. त्याची शोकांत परिणती अशा व्यवस्थेचे दर्शन घडवते, जिथे धर्म न्यायावर मात करतो आणि व्यवस्थेतील नैतिक विरोधाभास समोर येतो. हा नाटकाचा प्रारंभच सामाजिक विषमतेच्या खोलवर रुजलेल्या चौकटीवर थेट प्रश्न उपस्थित करणारा आहे. यानंतर कथा गौतम बुद्ध यांच्या परिवर्तनकारी शिकवणींकडे वळते. विषमता आणि कर्मकांडांना नाकारत बुद्धांचा धम्म करुणा, विवेक आणि सार्वत्रिक मानवी प्रतिष्ठेचा पुरस्कार करणारा ठरतो. 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' हा त्यांचा संदेश जात-लिंगभेदाच्या पलीकडे जाऊन सर्वसमावेशक कल्याणाची हाक देतो.

ही यात्रा पुढे संत चोखामेळा यांच्या जीवनातून उलगडत जाते. त्यांची अखंड भक्तीही त्यांना सामाजिक अपमानापासून वाचवू शकत नाही, ही बाब आध्यात्मिक समता आणि सामाजिक भेदभाव यांतील खोलवरचा विरोधाभास अधोरेखित करते. भक्तीमुळे मान मिळूनही जातीमुळे अपमान सहन करावा लागणारा हा संत आपल्याला प्रश्न विचारतो- आपली मूल्यव्यवस्था नेमकी कशावर आधारलेली आहे? पुढील प्रसंगात, या नैतिक परंपरेतील विठू महार ही व्यक्तिरेखा विलक्षण मानवतेचे दर्शन घडवते- आपली संपत्ती त्यागून तो संकटग्रस्त गावाचे रक्षण करतो; तरीही, त्याच्या जातीय ओळखीमुळे समाज त्याच्या सद्गुणांना मान्यता देण्यास तयार नसतो. अशा विविध प्रसंगांद्वारे 'युगयात्रा' हे दाखवते की मानवी प्रतिष्ठेचा नकार प्राचीन, मध्ययुगीन आणि आधुनिक काळांमध्ये सातत्याने कसा टिकून राहिला आहे, प्रतिबंध आणि सुधारणांच्या प्रयत्नांनंतरही. तसेच सामाजिक दृष्टिकोन अनेकदा कायदे आणि राजकीय बदलांपेक्षा अधिक काळ टिकून राहतात, याचे सूक्ष्म चिंतनही हे नाटक मांडते. नाटकाचा शेवटचा टप्पा विसाव्या शतकात येतो आणि डॉ. आंबेडकर यांच्या जीवनसंघर्षात परिपूर्ण होतो. महाड सत्याग्रह, मनुस्मृती दहन आणि काळाराम मंदिर चळवळ यांसारख्या मानवी हक्कांच्या लढ्यांतील निर्णायक क्षणांचे प्रभावी चित्रण यात आढळते. तसेच स्वातंत्र्य, समता, बंधुता आणि न्याय या तत्त्वांवर आधारलेल्या भारतीय राज्यघटनेच्या निर्मितीचा त्यांचा महान वारसा यामध्ये गौरविला आहे.

भारतात सामाजिक न्यायाचे प्रश्न सार्वजनिक चर्चेच्या केंद्रस्थानी असताना 'युगयात्रा' अत्यंत समकालीन भासते. विषमतेवरील तिची टीका आणि मानवी प्रतिष्ठेचा केलेला ठाम पुरस्कार थेट आजच्या वास्तवाशी संवाद साधतो. या नाटकाचा इतिहासही त्याच्या आशयाइतकाच प्रभावी आहे. बाबासाहेबांनी २० नोव्हेंबर १९५५ रोजी या नाटकाच्या प्रयोगाला आवर्जून उपस्थित राहून आपली पसंती नोंदवली होती. त्यांच्या सूचनेप्रमाणे १९५६ साली दीक्षाभूमी येथे झालेल्या ऐतिहासिक बौद्ध दीक्षा समारंभात जवळपास सहा लाख प्रेक्षकांसमोर याचे सादरीकरण झाले- भारतीय रंगभूमीच्या इतिहासातील एक अभूतपूर्व घटना. तरीही इतकी व्यापक पोहोच असूनही हे नाटक मुख्य प्रवाहातील साहित्यिक इतिहासात दीर्घकाळ दुर्लक्षित राहिले.

या ऐतिहासिक महत्त्वाची जाणीव ठेवून साहित्य अकादमी, नवी दिल्ली यांनी 'युगयात्रा'चा इंग्रजी अनुवाद प्रकाशित करून तो अधिक व्यापक वाचकवर्गासाठी उपलब्ध करून दिला आहे. या प्रयत्नामुळे या नाटकाला भारतीय साहित्य-सांस्कृतिक विश्वात त्याचे योग्य स्थान प्राप्त व्हावे आणि राष्ट्रीय तसेच आंतरराष्ट्रीय स्तरावर त्याचा प्रसार व्हावा, ही अपेक्षा आहे. अनुवादक म्हणून, या प्रभावी कथनाला भाषिक सीमांच्या पलीकडे नेण्याची जबाबदारी आम्हाला प्रकर्षाने जाणवली. त्याची भावनिक तीव्रता आणि तात्त्विक खोली अबाधित ठेवत ते समकालीन वाचकांसाठी सुलभ करणे हा आमचा प्रामाणिक प्रयत्न आहे. 'युगयात्रा' ही केवळ इतिहासातील एक यात्रा नाही; ती आपल्या वर्तमानाचे जिवंत प्रतिबिंब आहे आणि अधिक न्याय्य, समताधिष्ठित व मानवी भविष्य घडविण्याचे प्रभावी आवाहनदेखील आहे.

बुकबातमी

एआयच्या वापरामुळे कामावर कुऱ्हाड

कृत्रिम बुद्धिमत्तेमुळे लोकांना आपले पोटापाण्याचे व्यवसाय गमावावे लागतील, ही भीती एका वेगळ्याच रूपात प्रत्यक्षात आलेली नुकतीच दिसली. पुस्तकाचे परीक्षण करण्यासाठी एआयचा वापर केल्यामुळे 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'मध्ये मुक्त पत्रकार असलेल्या एका समीक्षकाला आपले काम गमावावे लागले आहे. ॲलेक्स प्रेस्टन असे या समीक्षकाचे नाव असून ऑगस्टमध्ये प्रसिद्ध झालेल्या एका परीक्षणावरून त्यांच्यावर ही कारवाई करण्यात आली आहे.

प्रेस्टन यांनी केलेले आणि ऑगस्टमध्ये प्रसिद्ध झालेले परीक्षण आणि त्याच पुस्तकाचे 'द गार्डियन'मध्ये प्रसिद्ध झालेले परीक्षण यात कमालीचे साम्य असल्याच्या तक्रारी वाचकांनी 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'कडे केल्या होत्या. या तक्रारींची दखल घेत 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'ने या प्रकरणाची चौकशी करण्याचा निर्णय घेतला. प्रीस्टन यांनी परीक्षण लिहिण्यासाठी एआय टूलचा वापर केल्याचे चौकशीत मान्य केले. या टूलने 'द गार्डियन'मधील लेखाचा भाग घेतल्याचे आपल्या लक्षात आले नाही, अशी कबुली त्यांनी दिली.

संपादकीय विभागातील कर्मचारी पत्रकार असोत किंवा मुक्त पत्रकार- त्यांनी कृत्रिम बुद्धिमत्तेवर अवलंबून राहणे आणि अन्य लेखकांच्या लेखनाचा श्रेय न देता समावेश करणे, ही 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'च्या सचोटीचे आणि पत्रकारितेच्या मूलभूत मानकांचे गंभीर उल्लंघन करणारी बाब आहे, असे 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'च्या प्रवक्त्यांनी प्रसिद्ध केलेल्या पत्रकात नमूद केले आहे. प्रेस्टन यांनी २०२१ ते २०२६ या कालावधीत 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'मध्ये सहा परीक्षणे लिहिली होती.

या वादात सापडलेल्या परीक्षणाचा शेवट त्यांनी 'सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे, विरोधाभासांनी भरलेल्या, घायाळ, युद्धग्रस्त, विभागलेल्या, दिशाहीन आणि चमत्कारिक अवस्थेतील देशासाठी गायलेले हे एक प्रेमगीत आहे. एक अशी इटली, जिथे जीवन म्हणजे एक वेशभूषा आणि कलेचा प्रयोग आहे, जिथे ओसाड जमिनीवर सर्कस उभी राहते.' अशा शब्दांत केला आहे. या शेवटाचे 'गार्डियन'मध्ये प्रसिद्ध झालेल्या परीक्षणातील उल्लेखांशी साधर्म्य असल्याचे स्पष्ट झाले आहे.

यावर विविध माध्यमांना प्रतिक्रिया देताना प्रेस्टन यांनी म्हटले की, याआधी आपण कधीही लेखनासाठी एआयचा वापर केलेला नाही. झालेली चूक लक्षात येताच आपण ताबडतोब 'द न्यू यॉर्क टाइम्स'शी संपर्क साधून पूर्ण जबाबदारी स्वीकारली आणि माफी मागितली. प्रेस्टन हे सहा पुस्तकांचे लेखक आहेत. 'अ स्ट्रेंजर इन कोर्फु' हे त्यांचे ताजे पुस्तक गेल्या महिन्यात 'पेगासस बुक्स'द्वारे प्रकाशित झाले असून त्याचे वितरण 'सायमन अँड शुस्टर'ने केले आहे. त्यांनी 'फायनान्शियल टाइम्स', 'द इकॉनॉमिस्ट' आणि 'द गार्डियन' यांसारख्या माध्यमांमध्येही लेखन केले आहे. ते 'मॅन ग्रुप' या गुंतवणूक व्यवस्थापन कंपनीमध्ये सल्लागार विभागाचे प्रमुख म्हणून कार्यरत आहेत. या वर्षाच्या सुरुवातीला, त्यांनी या कंपनीच्या संकेतस्थळासाठी 'द एआय बबल : हिडन रिस्क्स अँड अपॉर्च्युनिटीज' या शीर्षकाचा एक लेख लिहिला होता.

आंतरराष्ट्रीय कथापटल...

'द पेंग्विन बुक ऑफ इण्टरनॅशनल शॉर्ट स्टोरी' हा ग्रंथ चार दिवसांपूर्वी प्रकाशित झाला. लेबॅनॉनी-अमेरिकी लेखक रबी अल् मदीन आणि अमेरिकी लेखक-संपादक जॉन फ्रीमन यांच्या संपादनाखाली हा कथागुच्छ तयार झालाय. पैकी जॉन फ्रीमन यांनी 'ग्रॅण्टा' या मासिकाच्या संपादकपदी असताना काही वर्षांतच त्याचे रूपडे बदलले ते त्यात जगभरातील कथालेखकांना आवर्जून लिहिते करून. पुढे 'फ्रीमन्स' हे नवे मासिक काढून त्यांनी शोधून काढलेल्या कित्येक नव्या लेखकांना त्यात लिहिते ठेवले. या कथासंग्रहात सहा खंडातील लेखकांच्या कथांना समाविष्ट करण्यात आले आहे. त्यातील संपादकीय भागाचा अंश येथे वाचता येईल. ज्यात आंतरराष्ट्रीय कथापटलावर दोघांनी चर्चा केली आहे.

https:// tinyurl. com/5 bktj6 sr

बुक-नेट

नायजेरियन रोमान्सिका...

नायजेरिया हा गेल्या दीड-दोन दशकात साहित्य-कला-संगीत आणि चित्रपट प्रांतात अधिकाधिक पुढे जात असलेला आफ्रिकी देश. डझनांहून अधिक लेखक अमेरिकी आणि ब्रिटिश नियतकालिकांमधून आंतरराष्ट्रीय ओळख मिळविलेले. इथल्या इंग्रजी लेखकांची नवी पिढी अमेरिकेत साहित्य विषय शिकवतदेखील आहे. स्थानिक भाषांमध्ये गेल्या दशकभरात बायकांनी खास बायकांसाठी लिहिलेल्या शृंगार कादंबऱ्यांचा प्रचंड सुळसुळाट झाला. शरियाचा कायदा येथील काही भागांमध्ये लागू असल्यामुळे या कादंबऱ्यांना जाळण्याचा उद्योग करण्यात आला. पण त्यावर शक्कल काढत महिलांनी या कादंबऱ्यांचा लेखन आणि वाचनप्रवाह आटू दिलेला नाही. मोबाइलमधील 'व्हॉट्सॲप' यंत्रणाच त्यांनी या कामासाठी राबविली. अत्यल्प वर्गणी भरून या कादंबऱ्या प्रकरणांमध्ये दर आठवड्याला कशा वाचल्या जातात त्याची गोष्ट न्यू यॉर्क टाइम्सने तपशिलात दिलीय. जपानमध्ये असा मोबाइल फोनवरून कादंबरी लिहिण्याचा आणि ती पसरवण्याचा समांतर प्रयोग २००० च्या दशकात लोकप्रिय होता. त्या लेखक आणि वाचकांचे समांतर साहित्याला पूरक विश्व तयार झाले होते. ताजा नायजेरियावरील शृंगार कादंबऱ्यांवरील लेख आणि न्यू यॉर्करने घेतलेला जपानी मोबाइल कादंबरी क्रांतीवरचा २००८ सालातील रसाळ आढावा येथे वाचता येईल.

https:// tinyurl. com/ mu9 d4 x2 v https:// tinyurl. com/3 f74746 k

पुस्तकालयांची युद्धकालीन स्थिती...

माजिद माजिदी यांच्या दीड-दोन दशकांपूर्वीच्या सिनेमांतून इराण पाहिलेल्या जगाला गेल्या वर्षी इस्त्रायलविरोधात दंड थोपटलेला इराण पाहून धक्का बसलेला. कारण इराण इतका प्रगत असेल, याची तोवर अर्ध्याहून अधिक जगाला बिलकूल कल्पना नव्हती. याच स्तंभात गेल्या वर्षी इराणमधील पुस्तकालयांची स-चित्रफीत माहिती देण्यात आलेली. 'बुकसिटी' ही तिथली पुस्तक दुकानांची साखळी अमेरिकी ग्रंथदालनाच्या तोडीची. शहराशहरांत विखुरलेली. ताज्या युद्धात हल्ल्यांमुळे या पुस्तकालयांचे काय हाल होत आहेत, त्यावरचे वृत्त या दुव्यावर वाचता येईल. *https:// tinyurl. com/5 d42 fsd8*

विकास बालवाडीत!

समग्र शिक्षा योजनेबद्दल संभ्रम निर्माण करणारी ढिलाई असो की नियमावलीस मंजुरी नसल्याने 'बालवाटिकां'च्या नियमनासाठीचा कायदा कागदावरच असल्याचे वास्तव...

विकासाचा मार्ग शिक्षण व्यवस्थेतून जातो - किंवा जायला हवा अशी अपेक्षा असते. पण 'विकसित भारता'चे स्वप्न २०४७ पर्यंत साकार करू पाहणाऱ्या देशात शिक्षण व्यवस्थेकडे सरकार कितपत गांभीर्याने पाहते - किंबहुना पाहत नाही - याचे मासलेवाईक नमुने म्हणाव्यात, अशा बातम्या गेल्या आठवडाभरात झळकल्या. शिक्षणाविषयीच्या अनास्थेचा हा रोग देशाची प्रकृती खालावणारा आहे, हे सांगायलाच हवे. त्यामुळे या बातम्यांच्या अनुषंगाने ऊहापोह आवश्यक. बातम्या वेगवेगळ्या घटना, निर्णयांसंबंधी असल्या, तरी शिक्षण व्यवस्थेचा समग्र विचार करताना हे सगळेच विषय कोणत्या ना कोणत्या टप्प्यावर एकमेकांच्या हातात हात घालणारे असल्याने त्यांचा एकत्रित विचार समर्पकही आहे.

ज्या शालेय शिक्षणाच्या पायावर सुशिक्षित समाजाचा डोलारा उभारला जातो, त्या शालेय शिक्षणावरच अनवस्था प्रसंग ओढवेल, अशी बातमी काही दिवसांपूर्वी आली. उपरोल्लेखित बातम्यांच्या साखळीतील ही महत्त्वाची कडी. देशातील इयत्ता पहिली ते बारावीच्या सुमारे २५ कोटी विद्यार्थ्यांसाठीच्या समग्र शिक्षा योजनेची उपेक्षा, असे या बातमीचे एका ओळीत वर्णन करता येईल. या योजनेसाठीच्या तरतुदींत यंदाच्या अर्थसंकल्पात २ टक्के वाढ सुचवण्यात आली. पण प्रत्यक्षात, १ एप्रिलपासून सुरू होणाऱ्या आर्थिक वर्षासाठी महाराष्ट्राला या योजनेबाबत ३१ मार्चपर्यंत केंद्राने काहीही कळवलेलेच नाही. परिणामी, या योजनेंतर्गत काम करणाऱ्या सुमारे ३८०० कर्मचाऱ्यांच्या भवितव्याचा प्रश्न निर्माण झाला. या योजनेंतर्गत काम करणारे सारे कर्मचारी अद्याप कंत्राटीच. ते गेली काही वर्षे सेवा कायम करण्याची मागणी करत आहेत, पण त्याला वाटाण्याच्या अक्षता लावल्या जातात. या कर्मचाऱ्यांनी सुरू केलेल्या आंदोलनाकडेही सरळ दुर्लक्ष करण्यात आले. वास्तविक, नव्या राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाची आणि शिक्षण हक्क कायद्याची अंमलबजावणी करण्यासाठी राज्ये व केंद्रशासित प्रदेशांना साह्य करणे हे समग्र शिक्षा योजनेचे सर्वांत महत्त्वाचे उद्दिष्ट आहे. या योजनेतून भौतिक सुविधांपासून आर्थिक साह्यापर्यंतची मदत अपेक्षित आहे. तसेच विद्यार्थ्यांना देण्यात येणाऱ्या कौशल्य शिक्षणापासून त्यासाठीच्या तंत्रज्ञान सुविधेपर्यंतची वाटही याच योजनेतून जाते. त्याचे कामकाज करणारे कर्मचारी त्यामुळे योजनेचा एक प्रकारे कणा, पण योजनेसाठीच्या निधी, मनुष्यबळाबाबत कोणतीच स्पष्टता येत नसल्याने तोच मोडून पडण्याच्या मार्गावर आहे. ही योजना पाच वर्षांपूर्वी घोषित झाली. ती आता आहे तशीच राबवणार की काही बदल होणार, याचीही काही कल्पना नाही. पश्चिम बंगाल आणि तमिळनाडूसारख्या राज्यांत केंद्र आणि राज्याचे ताणलेले संबंध या योजनेसाठी मारक ठरताना दिसतातच; पण महाराष्ट्रात 'डबल इंजिन' असूनही संभ्रम राहणे बरे नव्हे.

शालेय शिक्षणालाच जोडलेला दुसरा महत्त्वाचा आणि महाराष्ट्रासाठी अधिक महत्त्वाचा विषय म्हणजे अनियंत्रित बालवाड्या. नवीन शैक्षणिक धोरणाने पूर्वप्राथमिक शिक्षण औपचारिकपणे पायाभूत स्तरात समाविष्ट केले. त्यानुसार, तीन ते सहा वर्षे वयोगटातील मुलांसाठी बालवाटिका, बालवाटिका १ आणि बालवाटिका २ अशा तीन स्तरांवरील पाठ्यक्रमांची निर्मितीही झाली आहे. या बालवाड्यांचे नियमन करण्यासाठी नियमावलीही तयार आहे. घोडे अडले आहे, ते राज्य सरकारच्या अंतिम मंजुरीसाठी.

खासगी बालवाड्यांचे पेव राज्यात गेल्या दोन दशकांत फुटले. विशेषतः खासगी विनाअनुदानित शाळांनी या बालवाड्या सुरू करून वेगळे अर्थकारण सुरू केले. नर्सरी, ज्युनिअर केजी, सीनिअर केजी अशा गोंडस नावांनी सुरू केलेल्या या बालवाड्या पहिल्या इयत्तेला जोडलेल्या असल्याचे शाळांनी भासवायला सुरुवात केल्याने, एकदा का या बालवाडीत प्रवेश मिळाला की 'चांगल्या' शाळेतील दहावीपर्यंतचा प्रवास निश्चित, असे समजून पालकांच्याही यावर उड्या पडल्या. शिक्षण हक्क कायदा (आरटीई) सहा ते १४ वर्षे वयोगटातील मुलांसाठी

...ही हेळसांड एकीकडे, तर राजकीय हस्तक्षेपाची शंका येण्याजोगे निर्णय दुसरीकडे... अशाने देशाच्या शैक्षणिक आकांक्षा वरच्या इयत्तेत कशा जाणार?

असल्याने तो बालवाड्यांना लागू होत नाही, असे सांगून खासगी शाळांनी मनमानी शुल्क तर आकारलेच, शिवाय आर्थिक दुर्बल घटकातील मुलांना २५ टक्के जागा राखीव ठेवण्याचा 'आरटीई'चा दंडक पुढल्या इयत्तांसाठीही निष्प्रभ करण्याची पळवाट शोधली. वास्तविक, शाळाप्रवेशाच्या बिंदूपासून 'आरटीई' लागू व्हायला हवा. पण वयोगटाच्या तांत्रिकतेची ढाल पुढे करून शाळांनी आणि सर्वच पक्षांच्या सरकारांनी याबाबत संदिग्धता ठेवणे पसंत केले. अति झाले तेव्हा नियंत्रणाची मागणी होऊ लागली. राष्ट्रीय शिक्षण धोरणाने पायाभूत स्तरामध्ये त्याचा समावेश केल्याने त्याला अधिकृतता आली. या कायद्याच्या अंमलबजावणीसाठी नियमावली आता तयार असूनसुद्धा, सरकारी मान्यतेची मोहोर अजून काही केल्या उमटत नाही. यामुळे सरकारी पातळीवरील शिक्षणाविषयीचे आकलन, आस्था यांविषयी जशी शंका उमटते, तसाच कोणाकोणाचे कुठेकुठे हितसंबंध गुंतलेले असल्याने यावर निर्णय होत नाही का, हा प्रश्नही रास्त ठरतो.

शालेय शिक्षणासाठी आणखी एक कायमचा कळीचा मुद्दा म्हणजे अध्यापन प्रक्रियेतील कालसुसंगत बदलांसाठी शिक्षकांचे क्षमतावर्धन. त्यालाही औपचारिक चौकट मिळावी आणि पुढे जाऊन त्यातील संशोधनाच्या वाटांनाही धुमारे फुटावेत, या उद्देशाने झालेला निर्णय ही बातम्यांच्या साखळीतील अलीकडची तिसरी बातमी. ती आहे राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन आणि प्रशिक्षण परिषद अर्थात 'एनसीईआरटी' या संस्थेला अभिमत विद्यापीठाचा दर्जा दिल्याची. 'एनसीईआरटी' सध्या केंद्रीय माध्यमिक शिक्षण मंडळासाठी पाठ्यक्रम आणि पाठ्यपुस्तके तयार करणे ही दोन कामे प्रामुख्याने करते. ही संस्था अभिमत विद्यापीठ झाल्याने, तिला अध्यापनातील पदवी, पदव्युत्तर आणि पीएचडी अभ्यासक्रम राबविणे शक्य होणार असून, अध्यापनातील स्वतंत्र संशोधनालाही चालना मिळेल, असे अपेक्षित आहे. सध्या असलेले शिक्षणशास्त्राचे (बीएड) अभ्यासक्रम शाळांसाठी उपलब्ध पाठ्यक्रम कसा शिकवायचा, याचे अध्यापन करतात. आता 'एनसीईआरटी' ही पाठ्यक्रम तयार करणारीच संस्था विद्यापीठ झाल्याने काय शिकवायचे आणि ते कोणी, कसे शिकवायचे, या दोन्ही गोष्टी हातात हात घालून एकत्रितपणे उभ्या राहाव्यात, असे अपेक्षित असेल. सैद्धान्तिकदृष्ट्या हे चांगलेच. पण यातही मेख आहे.

'एनसीईआरटी' विद्यापीठ झाल्यानंतर त्या संस्थेला सध्या असलेली स्वायत्तता टिकणार का, हा प्रमुख प्रश्न. विद्यापीठ झाल्याने ती विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या (यूजीसी) अधिनियमांच्या अधीन राहणार. 'एनसीईआरटी' स्वायत्त असूनही तिचा अलीकडचा 'लौकिक' हा तयार केलेल्या पाठ्यपुस्तकांत नंतर 'सुधारणा' करत राहण्याचा असल्याने, हे नवे अधीनत्व थेट शरणागतीकडे जाईल की काय, ही भीती नाकारायची कशी? काही इयत्तांच्या इतिहासातून मुघलांचा काळ, शीतयुद्ध, औद्योगिकीकरण यांवरील धडे वगळणे, राज्यशास्त्रातून लोकशाही, निषेध चळवळी यांवरील धडे काढून टाकणे, राजकीयदृष्ट्या अन्य संवेदनशील संदर्भांची 'फेरउजळणी' होणे, विज्ञानातून डार्विनच्या उत्क्रांतीच्या सिद्धान्ताला बाहेरचा रस्ता दाखवणे हे अलीकडच्या काळात 'एनसीईआरटी'च्याच निर्णयांनुसार झालेले आहे. आता हीच संस्था अभिमत विद्यापीठ म्हणून शिक्षकांना पदवी देणारी संस्था असेल, तर तेथे मिळणारे शिक्षणही असलेच एकरेषीय नसेल कशावरून? भविष्यातील शिक्षकांना दुसरी बाजू न सांगणारे प्रशिक्षण देशाच्या लोकशाहीची चौकटीत बसते का, असा रास्त प्रश्न यातून उपस्थित होतो. 'एनसीईआरटी'ची स्वायत्तता टिकावी, म्हणून तिला विद्यापीठाऐवजी 'आयआयटी'प्रमाणे राष्ट्रीय महत्त्वाच्या संस्थेचा दर्जा द्यावा, अशी मागणी झाली होती. ती पूर्ण न होणे, हा नेमक्या कोणत्या धोरणाचा भाग आहे, असे विचारणे गैर कसे ठरेल?

तर, देश विकसित होण्याचे स्वप्न हे असे भुसभुशीत पायावर उभे आहे. विकसित देशासाठी सर्वांगीण शैक्षणिक विकास हवा आणि तो आवाक्यात येण्यासाठी नियमाधारित, पण कोणत्याही अवाजवी दबावांपासून मुक्त अशी व्यवस्था हवी. सध्या शिक्षण क्षेत्राकडे पाहिल्यास विकासाच्या आकांक्षेचीही इयत्ता कळते आणि 'विकास बालवाडीत आहे' असे म्हणावे लागते.

इनोव्हेटिव... एफिशियंट... स्वीडिश!

ऑलिम्पिक आख्यान

सिद्धार्थ खांडेकर
siddharth.khandekar
@expressindia.com

१९१२ साली स्टॉकहोम येथे झालेले ऑलिम्पिक आजही स्पर्धेच्या इतिहासातले पहिले परिपूर्ण ऑलिम्पिक मानले जाते. त्यानंतर पहिल्या महायुद्धामुळे १९१६ चे ऑलिम्पिक होऊ शकले नाही. १९२० पासून मात्र हळूहळू ऑलिम्पिक ही सवय बनत गेली.

पॅरिस १९०० आणि सेंट लुईस १९०४ मधील निरुत्साहामुळे घरंगळत जाणारी ऑलिम्पिक चळवळ लंडन १९०८ च्या नेटक्या आयोजनामुळे पुन्हा रुळांवर आली. ऑलिम्पिकचे पालक, चालक पिअर द कुबर्ता त्यामुळे समाधानी होते. ग्रीसने सुरुवातीपासूनच स्पर्धा भरवण्याविषयी बऱ्यापैकी उत्साह दाखवला होता. बिचाऱ्यांनी नंतरही आयोजनाची तयारी चालवली होती आणि मुदतमध्य (इंटरकलेटेड) ऑलिम्पिकची संकल्पना जवळजवळ रेटून नेली होती. ती कुबर्तांनी हाणून पाडली, कारण मूळ ऑलिम्पिकला हे समांतर ऑलिम्पिक झाकोळेल आणि संपवेल अशी रास्त भीती त्यांना वाटली. ऑलिम्पिकसाठी यशस्वीरीत्या अनेक घटक जुळून यावे लागतात याची जाण ऑलिम्पिकच्या कर्त्या-धर्त्यांना होऊ लागली होती. सरकारी पुढाकाराचे अधिष्ठान प्रधान ठरत होते. त्यानंतर खासगी निधीची मदत हाही घटक महत्त्वाचा सिद्ध होऊ लागला होता. युरोपातील अनेक महासत्तांचे लक्ष महत्त्वाच्या मुद्द्यांकडे लागलेले होते. सन १९०५ मध्ये जपानने युद्धात रशियाचा पराभव केला. आधुनिक जगात एखाद्या आशियाई देशाने युरोपीय देशाचा युद्धात पराभव करण्याची ती पहिलीच वेळ. त्या पराभवाचा हादरा इतर युरोपीय देशांनाही बसला. वसाहतींना अधिक लुबाडून धन करावी नि शस्त्रसज्ज, सावध राहिलेले बरे अशी विचारधारा प्रबळ होती. त्यात ही ऑलिम्पिक भरवण्याची हौस म्हणजे खूळ वाटणाऱ्यांचे प्रमाण लक्षणीय होते. शिवाय त्या काळी ऑलिम्पिकच्या माध्यमातून नव्हे, तर जत्रा, प्रदर्शनाच्या माध्यमातून सामर्थ्य मांडणाऱ्यांचा वर्गही प्रभावी होता. खेळ, खेळाडू, त्यातून तंदुरुस्ती, त्यातून क्रीडा स्पर्धा, त्यातून निकोप आंतरसांस्कृतिक आदानप्रदान आणि अखेरीस यातूनच शाश्वत क्षेत्रीय, जागतिक शांतता आणि बंधुभाव ही बहुसूत्री ओळखून ती रेटणारे कुबर्ता यांचे महत्त्व या परिप्रेक्ष्यात अधोरेखित होते. ब्रिटिश सरकार आणि ब्रिटनमधील क्रीडा संघटकांनी अल्पसूचनेतूनही लंडन ऑलिम्पिकचे यशस्वी आयोजन करून 'कुबर्ता स्कूल'वर पसंतीची मोहोर उमटवली होतीच. कदाचित त्यावेळची प्रमुख महासत्ता असलेल्या ब्रिटनला ते शक्य झाले. पण केवळ सांपत्तिक ताकदीवरच ऑलिम्पिक भरवणे शक्य असते हा समज खोटा ठरवणारी कृती त्या काळापासूनच अलिप्त तरी विलक्षण उद्यमशील असलेल्या स्वीडनने करून दाखवली. लंडन ऑलिम्पिकपाठोपाठ हे ऑलिम्पिक झाल्यामुळे चळवळीची प्रतिष्ठा आणि तिचे महत्त्व वाढण्यास मदतच झाली. संपर्कक्रांतीच्या पहिल्या टप्प्यावर असलेल्या बहुतांश जगताने याची नोंद घ्यायला सुरुवात केली होतीच.

स्टॉकहोम ऑलिम्पिक १९१२

वैज्ञानिक, उद्योजक आल्फ्रेड नोबेलच्या देशात झालेले ते ऑलिम्पिक आजही स्पर्धेच्या इतिहासातले पहिले परिपूर्ण ऑलिम्पिक मानले जाते. आंतरराष्ट्रीय ऑलिम्पिक समितीचे अधिवेशन १९०९ मध्ये बर्लिनला झाले. त्या वेळी स्टॉकहोमच्या दावेदारीस फारसे आव्हान मिळाले नाही. बर्लिनच्या शिष्टमंडळाने सुरुवातीस इच्छा दाखवली, पण नंतर माघार घेतली. स्टॉकहोममध्ये त्या ऑलिम्पिकसाठी उभारण्यात आलेले लाल विटांचे स्टेडियम आजही उभे आहे. नेटके आयोजन करूनही स्वीडनला नंतर कधीही ऑलिम्पिक भरवता आले नाही किंवा भरवावेसे वाटले नाही. नॉर्डिक देशांपैकी केवळ फिनलंडने १९५२ मध्ये हेलसिंकीला ऑलिम्पिक भरवून दाखवले. परंतु स्थैर्य आणि समृद्धीच्या निकषांवर सतत वरचे स्थान मिळवणारे हे देश ऑलिम्पिकचा पसारा उचलण्यास मात्र नंतर तितकेसे उत्सुक दिसले नाहीत. स्वीडनने १९५८ मध्ये विश्वचषक फुटबॉल या आणखी एका मोठ्या आणि खर्चीक स्पर्धेचे आयोजन केले, त्यानंतर मोठ्या स्पर्धांच्या आयोजनाकडे हा देश कधी वळला नाही. कदाचित ऑलिम्पिकचा आकारच अवाढव्य होऊ लागल्यामुळे ती चंगळ या देशांना मानवली नसावी. तरी स्टॉकहोम ऑलिम्पिकमध्ये काही बाबी स्वीडनने प्रथमच सादर केल्या. महिलांना जलतरण आणि डायव्हिंगमध्ये सहभागी करून घेतले गेले. ट्रॅकवरील धावण्याच्या स्पर्धांसाठी फोटो-फिनिश उपकरण मैदानावरील पंचांसाठी साह्यकारक म्हणून वापरले गेले. घोषणांसाठी ध्वनिक्षेपकाचा वापरही पहिल्यांदाच झाला. लंडन ऑलिम्पिकचे आयोजन सुरळीत पार पडले, तरी त्या स्पर्धेस राजकीय रंग होता. विशेषतः ब्रिटिश आणि अमेरिकी खेळाडूंमध्ये धुमश्चक्रीची वेळ आली होती. अमेरिकी ॲथलीट्सनी उद्घाटनात संचलनाच्या वेळी ब्रिटिश सम्राटाचा केलेला कथित अपमान जुन्या वळणाच्या (म्हणजे त्या काळच्या बहुतेक) ब्रिटिशांना अजिबात आवडला नव्हता. तसले काही राजकीय पेच घडूच नयेत याची दक्षता स्वीडनच्या आयोजकांनी घेतली. हिंसावृत्ती टाळण्यासाठीच बहुधा बॉक्सिंग स्पर्धा त्यावेळच्या ऑलिम्पिकमधूनच वगळण्यात आली! स्वीडिश सम्राट गुस्ताव पाचवे यांनी आयोजनात उत्साहाने भाग घेतला. त्या स्पर्धेत पहिल्यांदाच पाचही खंडांतील खेळाडू सहभागी झाले. ऑलिम्पिकमध्ये झळकणारा जपान हा पहिला आशियाई देश ठरला. त्या स्पर्धेत ब्रिटिश संघाची पीछेहाट झाली. त्यातही अमेरिकी संघाला सर्वाधिक सुवर्णपदके मिळाल्याचे वास्तव विशेष झोंबले असावे. सर आर्थर कॉनन डॉइल नामे महानुभावांनी एका दैनिकात त्याबद्दलच्या निराशेला वाट मोकळी करून दिली होती. स्टॉकहोममध्ये ६ जुलै ते २२ जुलै अशा थोडक्या मुदतीत स्पर्धा पार पडल्या. त्या वेळी हवामानही आल्हाददायक होते. स्थानिकांच्या मते त्या वेळी उष्णतेची लाट आली होती! सर्वाधिक कमी तक्रारी आणि बहुतेकांना आलेले आनंददायी अनुभव हा त्या स्पर्धेचा अमीट ठसा होता.

ती स्पर्धा गाजवली जिम थॉर्प या अमेरिकन वल्लीने. तो अर्धा गोरा नि अर्धा रेड इंडियन असा मिश्रवंशी, मिश्रवर्णी होता. त्याने डेकॅथलॉन आणि मॉडर्न पेंटॅथलॉन अशा दोन स्पर्धांमध्ये सुवर्णपदक जिंकले. अमेरिकेत तो बेसबॉल, बास्केटबॉल अमेरिकन फुटबॉल, ॲथलेटिक्स असे सर्व खेळ खेळायचा. तो कधीकाळी फुटकळ बेसबॉल लीग पैशासाठी खेळला अशी चुगली कोणी तरी ऑलिम्पिक संघटनेकडे केली, नि दुसऱ्याच वर्षी त्याची सुवर्णपदके रद्द ठरवण्यात आली. कारण त्या काळी ऑलिम्पिकमध्ये खेळणारे हौशीच असले पाहिजेत असा दंडक होता. पुढे कित्येक वर्षांनी थॉर्पच्या वारसांना ती पदके परत करण्यात आली, यात ऑलिम्पिक संघटनेचीच त्या प्रसंगातून गेलेली पत कशीबशी परत मिळाली.

दशकातील एकमेव ऑलिम्पिक

पिअर द कुबर्तांनी ज्या मूल्यांवर ऑलिम्पिक खेळांचा डोलारा उभा करण्याचा प्रयत्न चालवला होता, त्या मूल्यांच्या स्टॉकहोम १९१२ नंतर दोन वर्षांतच ठिकऱ्या उडाल्या. प्राचीन ऑलिम्पिक स्पर्धांच्या काळातही लढाया व्हायच्या. परंतु त्या काळात नगरराष्ट्रे ऑलिम्पिकच्या काळात त्या थांबवून क्रीडा स्पर्धांमध्ये सहभागी व्हायची. ऑलिम्पिक ट्रूस किंवा ऑलिम्पिक युद्धविराम ही संकल्पना त्या काळातलीच. शस्त्रे खाली ठेवली जायचीच. यजमान शहरात रक्तपात नको, स्पर्धेसाठी जाणाऱ्यांच्या जीविताला हानी नको, असा साधा विचार त्या काळी असायचा. विसाव्या शतकाच्या दुसऱ्या दशकातील युरोपला ऑलिम्पिक ट्रूसशी देणेघेणे नसावे. ऑलिम्पिक संपल्यानंतर बरोबर दोन वर्षांनी म्हणजे जुलै १९१४ मध्ये पहिल्या महायुद्धाला सुरुवात झाली. ते १९१८ पर्यंत चालले. त्यामुळे १९१६ मधील ऑलिम्पिक होऊ शकले नाही. ते थेट १९२० मध्ये अँटवर्प येथे पार पडले. मूळ ऑलिम्पिक संकल्पना आणि पिअर द कुबर्ता यांनी त्याच संकल्पनेवर बांधलेले आधुनिक ऑलिम्पिक यांच्यासाठी ते युद्ध म्हणजे मोठा धक्का होता. यातून एक बाब स्पष्ट झाली. आधुनिक ऑलिम्पिक प्राचीन ऑलिम्पिकसारखे स्वप्नाळूपणे चालवता येणार नाही, हा तो धडा. पण त्याचबरोबर, ऑलिम्पिकची अव्यक्त अपरिहार्यता आणि गरज अँटवर्प १९२० आणि पुढे लंडन १९४८ या युद्धोत्तर ऑलिम्पिक स्पर्धांच्या निमित्ताने दिसून आली. ऑलिम्पिक ही सवय बनू लागली होती.

सूर्याला रात्री 'उजळवण्या'च्या प्रयोगाला विरोध का?

विशेष विश्लेषण

मनीषा देवणे
manisha.devne@expressindia.com

गरजेनुसार खरेदी करता येऊ शकेल अशा कृत्रिम सूर्यप्रकाशासाठी कॅलिफोर्नियातील एका नवोद्यमाने प्रयत्न आरंभले असून या प्रकाशाची सुरुवातीची किंमत सुमारे ५,००० डॉलर प्रति तास असेल!

हा प्रयोग काय? तो कशासाठी?

रिफ्लेक्ट ऑर्बिटल नावाची अमेरिकेतील स्टार्टअप कंपनी एका वेगळ्याच प्रयोगावर काम करत आहे. सूर्य पृथ्वीच्या एका भागात मावळत असला तरी दुसरीकडे उगवत असतो. त्यामुळे पृथ्वीच्या कक्षेतला हा सूर्यप्रकाश मोठे आरसे लावून परावर्तित करायचा आणि हव्या त्या परिसराला तिथे रात्र असली तरी प्रकाशमान करायचे, अशी ही संकल्पना आहे. यासाठी पृथ्वीच्या जवळच्या कक्षेत (लो अर्थ ऑर्बिटमध्ये) उपग्रहांची संख्या दहा लाखांपर्यंत वाढवून त्या उपग्रहांवर परावर्तित आरसे बसविण्याची या कंपनीची योजना असल्याचे वृत्त 'द न्यूयॉर्क टाइम्स'ने दिले आहे. या उपग्रहांवरील आरशांतून परावर्तित होणाऱ्या सूर्यप्रकाशाद्वारे पृथ्वीवरील किमान पाच ते सहा किलोमीटरचा परिसर 'गरजेनुसार' प्रकाशमान करण्याचा कंपनीचा मानस आहे. होता. याच प्रकाशावर पृथ्वीच्या कक्षेत सौरऊर्जेवर चालणारे प्रचंड संगणकीय जाळे उभारण्यासाठी दहा लाखांपर्यंत उपग्रह प्रक्षेपित करण्याचा प्रस्ताव स्पेसएक्स या कंपनीने दिला आहे. स्पेसएक्स या इलॉन मस्कच्या कंपनीची मदत उपग्रह सोडण्यासाठी घेतली जाईल. गोम अशी की, 'रिफ्लेक्ट ऑर्बिटल'चा संस्थापक आणि सीईओ बेन नोवॉक हा पूर्वी स्पेसएक्समध्येच अभियंता होता. हा प्रकल्प २०२५ च्या अखेरपर्यंत पूर्ण करण्याचा कंपनीचा मानस होता. आता तो अखेरच्या टप्प्यात आहे असे म्हटले जात आहे. मात्र तो फेडरल कम्युनिकेशन्स कमिशन या नियामक संस्थेच्या परवानगीच्या टप्प्यावर आहे.

नेमके काय काय उभारणार?

या योजनेनुसार, सुमारे ६० फूट रुंदीचा आरसा असलेला एक नमुना उपग्रह तयार केला जाणार आहे. नियामकांनी परवानगी दिल्यास, हा चाचणी उपग्रह याच उन्हाळ्यात त्याच्या नियोजित कक्षेत पोहोचून पृथ्वीपासून सुमारे ६४४ कि.मी. उंचीवरून तो सुमारे ४.८ कि.मी. व्यासाच्या गोलाकार भागावर सूर्यकिरण परावर्तित करेल. जमिनीवरून पाहिल्यास, आकाशात पूर्ण चंद्राइतका तेजस्वी एक बिंदू दिसेल. हा प्रकल्प मंजूर झाल्यास, २०२८ पर्यंत एक हजार उपग्रह, २०३० पर्यंत पाच हजार आणि अखेरीस २०३५ पर्यंत ५० हजार उपग्रह आरशांचे जाळे उभारण्याचे कंपनीचे दीर्घकालीन उद्दिष्ट आहे.

कंपनीच्या महत्त्वाकांक्षेनुसार काही उपग्रहांचा आकार १८० फुटांपर्यंतदेखील वाढू शकतो. या खटाटोपाचा उद्देश असा ग्राहकवर्ग तयार करणे आहे, जो 'गरजेनुसार सूर्यप्रकाश' खरेदी करू शकेल. या कृत्रिम प्रकाशाची सुरुवातीची किंमत सुमारे पाच हजार डॉलर प्रति तास असेल! यासाठी रिफ्लेक्ट ऑर्बिटल कंपनीने एक ॲप तयार केले आहे. मात्र या प्रकल्पाला खूप विरोध होत आहे.

विरोधाचे कारण काय?

जगभरातील ३० हून अधिक देशांतील सुमारे २,५०० संशोधकांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या चार आंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थांच्या अध्यक्षांनी या प्रयोगाला आक्षेप घेणारे पत्रच उपग्रह आणि केबलद्वारे होणाऱ्या आंतरराज्यीय आणि आंतरराष्ट्रीय संवादाचे नियमन करणाऱ्या अमेरिकी नियामक संस्थेला (फेडरल कम्युनिकेशन्स कमिशनला) लिहिले आहे. युरोपियन बायोलॉजिकल रिदम्स सोसायटी (ईबीआरएस), सोसायटी फॉर रिसर्च ऑन बायोलॉजिकल रिदम्स, जपानी सोसायटी फॉर क्रोनोबायोलॉजी आणि कॅनेडियन सोसायटी फॉर क्रोनोबायोलॉजी या चार संस्थांचा आक्षेप असा की, नैसर्गिक रात्रीच्या प्रकाशाच्या वातावरणात जागतिक पातळीवर मोठा बदल झाल्यास माणूस आणि प्राण्यांमधील झोप व हार्मोन्स नियंत्रित करणारी जैविक घड्याळे, रात्री सक्रिय असलेल्या प्रजातींचे स्थलांतर, वनस्पतींचे ऋतूचक्र आणि समुद्रातील अन्नसाखळीचा पाया असलेल्या प्लवकांचे (फायटोप्लँक्टन) जीवनचक्र यावर परिणाम होऊ शकतो. या पार्श्वभूमीवर त्यांनी नियामकांना संपूर्ण पर्यावरणीय आढावा घेण्याचे आणि उपग्रहांच्या परावर्तनक्षमतेवर तसेच रात्रीच्या आकाशातील एकूण प्रकाशमानतेवर मर्यादा घालण्याचे आवाहन केले आहे. या योजनेला खगोल अभ्यासकांचादेखील विरोध आहे. डार्कस्काय इंटरनॅशनल या संस्थेचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी रस्किन हार्टली यांच्या मते, आधीच सध्याच्या उपग्रहांमुळे रात्रीचे आकाश उजळण्याचे प्रमाण १० टक्क्यांनी वाढले आहे. स्लोव्हाक ॲकॅडमी ऑफ सायन्सेसचे डॉ. मिरोस्लाव कोसिफाय यांच्या मॉडेलिंगनुसार, सध्या उपग्रहांमुळे रात्रीच्या आकाशाच्या प्रकाशमानतेत तीन ते आठ मायक्रोकँडेला (प्रकाशाची तीव्रता मोजण्याचे एकक) प्रति चौ. मीटर इतकी भर पडते. सन २०३५ पर्यंत ही वाढ पाच ते १९ मायक्रोकँडेला होऊ शकते. ही वाढ नैसर्गिक अंधार जपण्यासाठी खगोलशास्त्रज्ञांनी आखून दिलेल्या मर्यादेपर्यंत जाण्याची भीती आहे.

यापूर्वी असे प्रयोग झाले होते का?

सूर्यप्रकाश परावर्तित करण्याचे दोन प्रयोग यापूर्वीही झाले आहेत. कामगारांची उत्पादनक्षमता वाढवण्यासाठी पूर्वीच्या सोव्हिएत महासंघाच्या व्लादिमिर सिरोमित्निकोव्ह या वैज्ञानिकाने हा प्रयोग केला, तो २७ ऑक्टोबर १९९२ रोजी कार्यान्वितही झाला. पण पुढे निधीअभावी हा प्रकल्प गुंडाळला गेला. चीनदेखील महागड्या पथदिव्यांवरील खर्च कमी करण्यासाठी याच प्रकारच्या योजनेवर काम करत आहे. अमेरिकन कंपनीच्या या योजनेच्या यशस्वितेबद्दलही अनेकांना शंका आहे. इतका खटाटोप करून मिळणारा प्रकाश चंद्राच्या चांदण्यासारखा- म्हणजे लख्ख नव्हे पण कामापुरता- असल्यास काय उपयोग, असे म्हणणारेही टीकाकार आहेत.

फायदे कोणते?

अपवादात्मक स्थितीत, उदा.- एखाद्या ठिकाणी रात्री भूकंप झाला किंवा अन्य कोणती आपत्ती आली तर बचावकार्यासाठी अशा कृत्रिम प्रकाशाचा उपयोग होऊ शकतो, मात्र यासाठी निसर्गाचे चक्र बदलण्याची जोखीम माणसाला परवडणारी आहे का हा प्रश्न या निमित्ताने विचारला जात आहे.

लोकमानस

loksatta@expressindia.com

विश्वास निर्माण व्हावा हा उद्देश

'भरकटलेला भविष्यवेध!' या संपादकीयात रिझर्व्ह बँकेच्या द्वैमासिक पतधोरणातील 'थांबा पाहू' धोरणावर वर्तमान जागतिक स्थितीच्या पार्श्वभूमीवर टीका केली आहे.

खरे पाहता अमरिकेचे 'टॅरीफ धोरण', इराण युद्धातून घटलेली निर्यात व वाढलेले इंधन तेलाचे दर यातून भारतासारख्या विकसनशील देशाच्या अर्थव्यवस्थेवर ताण आला आहे. सरकारतर्फे उपाययोजना कार्यान्वित केल्या जात आहेत. पाच राज्यांच्या निवडणुकांनंतर दरवाढ अटळ असल्याचे भाकीत हीच दोलायमान जागतिक स्थिती कायम राहिली तर कदाचित ते खरेही ठरेल. आर्थिक वर्षातील उत्पन्न घटीचे, चलनवाढीचे अंदाज, उत्पादन क्षेत्रातील घट याची नोंद घेत आयातीचा खर्च वर्षभर भागवू शकेल एवढ्या राखीव गंगाजळीचे आकडे यातून नागरिकांत विश्वास निर्माण व्हावा हा 'पतधोरण समितीचा' उद्देश नजरेआड करण्याजोगा नाही.

■ **लक्ष्मण संगेवार,** नांदेड

हे तुष्टीकरण नाही का?

चार राज्ये व एका केंद्रशासित प्रदेशातील निवडणुकांच्या पार्श्वभूमीवर घईघाईने बोलावलेल्या लोकसभेच्या विशेष अधिवेशनात लोकसभेच्या जागा वाढवण्याबरोबरच महिला आरक्षणावरही चर्चा होणार असल्याचे सांगितले जाते. नेटाने प्रयत्न करूनही या विधानसभा जिंकणे अवघड असल्याचे दिसून येत असल्याने मध्यप्रदेश, महाराष्ट्रात जनमत विरोधात असताना हुकमी ठरलेले 'लाडकी बहीण' हे तुष्टीकरणाचे कार्ड संपूर्ण भारतात व्यापक तत्वावर खेळण्याचा भाजप सरकारचा प्रयत्न असण्याची शक्यता दाट वाटते. निकराचा प्रयत्न म्हणून महिला मतदारांना आकर्षित करण्यासाठी या अधिवेशनात 'किसान सन्मान' सारखीच रोख रकमेची 'नारी सन्मान' योजना लागू होऊन, या योजनेचा मोठमोठ्या जाहिरातींद्वारे गाजावाजा करत रोख रकमा तातडीने (कदाचित मतदानाच्या एक-दोन दिवस आधी) लाभार्थींच्या खात्यात जमा झाल्या, तरी आश्चर्य वाटू नये.

■ **किशोर थोरात,** नाशिक

खासगीकरणापासून वाचवा...

'हाफकिनचे खासगीकरणाकडे पाऊल!' ही बातमी (लोकसत्ता- ९ एप्रिल) वाचली. या जागतिक कीर्तीच्या संशोधन व उत्पादन संस्थेच्या प्रयोगशाळेच्या अद्ययावतीकरणासाठी सरकारकडून गेल्या २४ वर्षांत निधीच उपलब्ध होऊ शकला नाही. गेली अनेक वर्षे सर्पदंश, श्वानदंशावरील इंजेक्शन, पोलिओ डोस सर्व सरकारी रुग्णालय तसेच दवाखान्यांत मोफत दिले जातात. देशाला पोलिओमुक्त करण्यात हाफकिनचा सिंहाचा वाटा आहे. देशात एखाद्या साथरोगाचा प्रादुर्भाव झाला की, रोगावर औषध वा एखादी लस कधी येणार याची चर्चा असते. परंतु त्यासाठी रात्रंदिवस प्रयत्न करणाऱ्या शास्त्रज्ञांची चर्चा फारशी होत नाही. याला सरकारी उदासीनता कारणीभूत आहे. मी मुंबईतील हाफकिन इन्स्टिट्यूटमध्ये अनेक वर्षे कार्यरत होतो. एकेकाळी या संस्थेत शास्त्रज्ञ रात्रंदिवस संशोधन करत. परंतु १९७५ साली शासनाच्या चुकीच्या निर्णयामुळे हाफकिन इन्स्टिट्यूटचे विभाजन करून दोन स्वतंत्र स्वायत्त संस्था निर्माण करण्यात आल्या तेव्हापासूनच संस्थेची अधोगतीकडे वाटचाल सुरू झाली. हाफकिनला गतवैभव प्राप्त होण्यासाठी सरकारने योग्य उपाययोजना कराव्यात आणि खासगीकरणापासून वाचवावे.

■ **विजय हरिश्चंद्रे,** कर्जत (रायगड)

...तर दुर्दशा होणे अपरिहार्य

'बारामती पोटनिवडणुकीतून काँग्रेसची माघार' हे वृत्त वाचले. सुनेत्रा पवारांविरुद्ध काँग्रेसने बारामती पोटनिवडणुकीसाठी आपला उमेदवार घोषित केला, तेव्हा काँग्रेसने पवारांच्या सरंजामशाही/ घराणेशाहीविरुद्ध दंड थोपटले आहेत आणि भाजपच्या मनसुब्यांनाही आव्हान दिले आहे, असे वाटू लागले होते. हर्षवर्धन सपकाळ आपल्या 'पीळदार मिश्या' सार्थ ठरवतील असेही वाटले होते. पण काँग्रेसच्या वल्गना फोल ठरल्या व नेहमीप्रमाणे पवारांची खेळी यशस्वी झाली. पार्थ पवार यांनी काँग्रेसवर दुगाण्या झाडल्या. काँग्रेसचे असे धोरण असेल, तर या पक्षाची दुर्दशा होणे अपरिहार्य आहे. काँग्रेसने पवारांपुढे घातलेल्या लोटांगणामुळे आता पार्थ पवार यांच्या घोटाळ्यांना क्लिन चिट मिळणे सुरूच राहील.

■ **शशिकांत मुजुमदार,** नवी पेठ (पुणे)

प्रवाह

77 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

सबसे मूल्यवान काम दूसरों की जिंदगी में खुशी लाने की कोशिश करना है। -रॉबर्ट बैडेन पॉवेल

सख्त संदेश

उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित शास्त्री नगर के सेंट्रल मार्केट में अवैध निर्माणों पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को महज प्रशासनिक कार्रवाई के रूप में नहीं, बल्कि 'कानून के शासन' की पुनः स्थापना की दिशा में एक निर्णायक हस्तक्षेप के रूप में भी देखा जाना चाहिए। इसे स्थानीय स्तर पर फैली अव्यवस्था और अनियंत्रित शहरीकरण पर अंकुश लगाने की कोशिश के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसमें पूरे देश के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि नियमों की अनदेखी कर खड़े किए गए ढांचे बर्दाश्त नहीं किए जा सकते। उल्लेखनीय है कि देश के अधिकांश शहरों में अनधिकृत निर्माण एक गंभीर और पुरानी समस्या रही है। बढ़ती आबादी का दबाव, भूमि की बढ़ती कीमतें और नियोजन की कमजोरियों के बीच अक्सर लोग और व्यावसायिक प्रतिष्ठान नियमों को दरकिनार कर निर्माण कर लेते हैं। कई बार यह सब प्रशासन की मिलीभगत या उसकी निष्क्रियता के कारण संभव हो पाता है। ऐसे में, न्यायपालिका का हस्तक्षेप पूरे तंत्र को आईना दिखाने जैसा है। ताजा मामला रिहायशी प्लॉटों को बिना अनुमति के व्यावसायिक जगहों में बदलने और अधिकारियों द्वारा उनके खिलाफ कार्रवाई न करने से जुड़ा है। अदालत ने न सिर्फ मेरठ विकास प्राधिकरण और आवास विकास परिषद की लापरवाही पर नाराजगी जताते हुए फटकार लगाई, बल्कि कुल 859 अवैध सेटबैक (जरूरी खुली जगह) निर्माणों को ध्वस्त करने का आदेश दिया। अदालत ने उचित ही कहा कि प्रशासन की लापरवाही के कारण ही अवैध निर्माण इतने बड़े स्तर पर बढ़े हैं, जिसे रोकने के लिए सख्त कार्रवाई जरूरी है। कोर्ट का यह कहना भी बिल्कुल दुरुस्त है कि किसी की जिंदगी की कीमत पर व्यवसाय नहीं चल सकता। बेशक सील संपत्तियों में अवैध तरीके से चल रहे छह स्कूल, छह अस्पताल, आदि के कामकाज प्रभावित होंगे, पर अगर इन्हें जुर्माना वसूल कर वैध ठहराया जाएगा, तो पूरे देश में अराजकता फैल सकती है। चूंकि, पूरे देश में अवैध निर्माण हो रहे हैं, इसलिए इन्हें हतोत्साहित करना स्वागतयोग्य कदम है। अवैध निर्माण से न केवल सुनियोजित विकास के नियम का उल्लंघन होता है, बल्कि कानून के राज के समानांतर एक भ्रष्ट तंत्र को पनपने का भी अवसर मिलता है। अदालत के इस फैसले से न केवल अवैध एवं अनधिकृत निर्माण करने वाले व्यवसायियों को सबक मिलेगा, बल्कि आवासीय परिसर एवं नगरों के सुनियोजित विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। लेकिन यह प्रशासनिक इच्छाशक्ति और नागरिक सहयोग के बगैर शायद ही संभव हो।

कभी खुश भी रहा करो

अगर खुश रहना एक सामाजिक प्रक्रिया है और ज्ञान की अवस्था है, तो फिर बम के धमाकों के बीच भी खुश रहा जा सकता है। मेरे-तुम्हारे के बीच भी, परीक्षाओं के परिणामों के बीच भी, अपने-परायों के इर्द-गिर्द भी।

नन्दितेश निलय
स्पीकर, लेखक एवं एथिक्स प्रशिक्षक

लेख की शुरुआत शैलेंद्र के उस गीत से, *किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके, तो ले उधार...* युद्ध और तमाम तरह की अस्थिरता के बीच फंसी अपने दुखों में सिमटी इस दुनिया को कोई कैसे सिखाए कि सिर्फ पैसा ही नहीं, बल्कि दुख भी उधार में लिया जा सकता है। उधारी का दुख किसी की मुस्कुराहट का हिस्सा बनने की संभावना तय कर सकता है। तो फिर बटोरिए दुख और पूछिए अपने आप से कि ऐसे समय में भला खुश कैसे रहा जाए? क्योंकि तमाम परेशानियों के बीच और भविष्य की असुरक्षा में फंसे लोग एक सुरक्षित व सुकून भरा जीवन ही तो ढूंढ़ रहे हैं। आखिर अरस्तू भी मानते थे कि खुशी वह अंतिम लक्ष्य और सर्वोच्च उद्देश्य है, जिसे मनुष्य ढूंढ़ रहा है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खुशी किसी रील से निकली, या स्क्रॉल करती हुई अंगुलियों में फंसी कोई अनुभूति नहीं होती और न ही उस स्क्रीन से चिपकी आंखों की धुंधलाती चमक। खुशी तो हर वह चिंता भी होती है, जो अपने-अपनों को, इनको-उनको स्वस्थ और सुरक्षित देखने की आशा रखती है। जब यह दुनिया कोविड जैसी महामारी में फंसी थी, तो हर पल हम सभी जीवन-मृत्यु के बीच खुश रहने की सारी संभावना को समाप्त होते देख रहे थे, क्योंकि जब जीवन ही नहीं बचेगा, तो फिर क्या खुशी, क्या दुख! पर मनुष्य तो मनुष्य ठहरा! उसे पता था कि इस दुनिया को वह बचा सकता है, और उसने अपने आप को मास्क में ढककर दूसरे के लिए भी सोचा। कोई हॉस्पिटल में रुका, तो कोई दूध पहुंचाने पहुंचा। कोई ऑक्सीजन सिलिंडर को पटरियों पर लेकर दौड़ा, तो कोई वैक्सीन। कुछ ऐसा ही हर उस व्यक्ति के साथ हुआ, जिसने किसी न किसी की जान कोविड में बचाई और दुनिया सबसे अंधेरे दौर से निकलकर खुशी की रोशनी ढूंढ़ पाई।

अब्राहम मैस्लो, जो एक अग्रणी अमेरिकी मनोवैज्ञानिक रहे, ने 'आवश्यकताओं के अपने पदानुक्रम या पिरामिड मॉडल' से यह बताना चाहा कि हमारी खुशी या मोटिवेशन मुख्य रूप से उन पांच आवश्यकताओं की पूर्ति पर निर्भर है, जिनमें बुनियादी जरूरतें, सुरक्षा, जुड़ाव, सम्मान और आत्म-साक्षात्कार प्रमुख होते हैं। यह सुरक्षा और जुड़ाव का भाव इतना महत्वपूर्ण है कि कई बार हमें यह यकीन नहीं होता कि तमाम आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक सीमाएं होने के बावजूद कोई कंचनबाई मेघवाल, जो एक आंगनबाड़ी सहायिका थीं, अपनी जान की परवाह किए बिना उन बच्चों की ओर दौड़ पड़ेंगी, जिनको डंक मारने के लिए मधुमक्खियां सैकड़ों की संख्या में पहुंच चुकी थीं। कंचनबाई सीमाएं तोड़, अपनी साड़ी से सभी बच्चों को ढक देती हैं, और अपनी जान खोकर भी सभी बच्चों की जान बचा लेती हैं। जान बचाना या जिंदगी देना उस खुशी या प्रेरणा का ही हिस्सा होता है, जो सामाजिक संबंधों, गिलिगन के 'केयर' और डार्विन के 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' के सिद्धांत को बुनता है।

अब्राहम मैस्लो यह भी बताते हैं कि खुश रहने के लिए एक-दूसरे को सुरक्षित रखने और जुड़ाव के भाव के साथ सम्मान व आत्म-साक्षात्कार का भाव भी होना चाहिए। आखिर खुशी ही वह मानवीय मूल्य है, जो हमें बार-बार यह याद दिलाता है कि आखिर हमारे जीवन का प्रयोजन क्या है। यह सवाल भी उठाता है कि हमारा आकलन सिर्फ उपयोगिता के आधार पर होना चाहिए या उस सादगी, विनम्रता और सद्भाव के आधार पर भी, जहां कोई अपने घमंड, स्वार्थ या अपनी लालच को जीवन जीने का दर्शन नहीं बनाता। तभी तो, अगर इतिहासकार हरारी को यह लगता है कि एआई सुपर इंटेलिजेंट बनकर अपने आप फैसले लेगा, तो हाजी अख्तर भी मानो हरारी को बताना चाहते थे कि खुद्दारी के साथ जीना और दूसरों को उनका हक देकर खुश होने का भाव किसी चैटबॉट के पास नहीं हो सकता।

हमेशा की तरह, उस दिन भी हाजी अपना कबाड़ बीन रहे थे, तभी उन्हें एक बोरी मिलती है, जिसमें कबाड़ और स्क्रैप होता है और जो उनको पिछली दिवाली पर एक व्यापारी से मिला था। उधर उस व्यापारी को पता नहीं था कि उनके गहने सफाई के दौरान बोरी में ही चले गए थे। जब उन्हें वह गहने नहीं मिले, तो निश्चित ही उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठे होंगे। पर हाजी अख्तर तो ऐसे थे, जैसे गहने कभी खोए ही नहीं थे। गहनों ने तो अपने आप को उनके पास महफूज रखा था। जिस दुनिया में किसी और के रुपये उठाने में कोई झिझक नहीं होती, वहां अगर सोने और चांदी मिल जाएं, जिनकी कीमतें आसमान छू रही हों, तब तो मैस्लो साहब भी यह मानेंगे कि बड़े-बड़े सूरमा भी सही फैसले लेने से चूक जाते हैं। लेकिन अपनी खुद्दारी और आत्म-सम्मान में हाजी नहीं चूके।

इस लेख को पढ़ते-पढ़ते शायद आपको भी महसूस होगा कि अच्छा होना और अच्छाई के भाव से सोचना, महसूस करना और जीना ही खुश रहने का वह गुण है, जिसमें सभी की खुशी की संभावना बनती है। अगर खुशी का संबंध अच्छाई से है, तो खुशी सिर्फ और सिर्फ अच्छे इन्सान के मोहल्ले में ही रहती है और भाईचारे के साथ सभी के जीवन में एक आशा संजोए रहती है। यह न भूलें कि खुश रहना भी एक मौलिक अधिकार है। पर जब एक गलत आचरण लिए व्यक्ति खुश रहता है, तो किसी भी समाज के लिए खुशी का स्वरूप ही बदल जाता है। वह मानवीय कम और कुछ वस्तु के माफिक बनने लगती है। फिर मनुष्य वस्तु बन उस खुशी पर ग्रहण लगा देता है। आखिर कवि नरेश सक्सेना जी ने ठीक ही कहा है कि चीजों के गिरने के नियम होते हैं, पर मनुष्यों के गिरने के कोई नियम नहीं होते। इसलिए खुशी का अभिनंदन तो तब है, जब अच्छाई के साथ इसको अपने जीवन में उतारा जाए। और आज के दौर में अपने वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए यही हमारी जिम्मेदारी भी है। समय यह प्रश्न बार-बार पूछेगा कि हमने अपने आप को कितना बेहतर इन्सान बनाया, अपने आसपास के सदस्यों के दुख-दर्द में कितनी हिस्सेदारी की, कितना उनको सुनना और समझना चाहा! अगर खुश रहना एक सामाजिक प्रक्रिया है और ज्ञान की अवस्था है, तो फिर बम के धमाकों के बीच भी खुश रहा जा सकता है। मेरे-तुम्हारे के बीच भी, परीक्षाओं के परिणामों के बीच भी, अपने-परायों के इर्द-गिर्द भी। ऐसे में, शैलेंद्र को भी गुनगुनाया जा सकता है, क्योंकि जो दूसरों का दुख महसूस कर सकता है, वही वास्तविक ज्ञानी है। और तभी खुश रहने की संभावना बढ़ती है, क्योंकि खुशी एक सामूहिक मूल्य है। गुलजार साहब की उस सलाह से, *मुस्कुराते बहुत हो तुम, कभी खुश भी रहा करो।*

edit@amarujala.com

पड़ोस

म्यांमार के संकटों का कोई अंत है?

म्यांमार की मौजूदा स्थितियों से साफ होता है कि स्थिरता लाने का सेना का प्रयास उल्टा भी पड़ सकता है और म्यांमार लंबे समय तक एक अंतहीन संघर्ष के चक्र में फंसा रह सकता है।

केएस तोमर

पश्चिम एशिया में बढ़ती उथल-पुथल के बीच म्यांमार की ओर दुनिया का ध्यान नहीं ही गया। यह मुद्दा वैश्विक बहस में दबकर रह गया। यह सेना (जुंटा) के लिए फायदे का सौदा बन गई और जुंटा प्रमुख मिन आंग ह्लाइंग म्यांमार के नए राष्ट्रपति बन गए। दरअसल, सेना द्वारा बनाए गए सख्त कानूनों के चलते लगभग सभी भरोसेमंद विपक्षी दलों को या तो चुनाव से बाहर कर दिया गया या उन्हें खुद ही हटने पर मजबूर होना पड़ा। इससे सेना के 'लोकतांत्रिक' दावे खोखले साबित होते हैं और जनता के अलगाव को और ही गहरा करते हैं।

दल-बदल, गिरते मनोबल और स्थानीय विद्रोहियों और अनियमित बलों पर बढ़ती निर्भरता की खबरें सेना के भीतर तनाव का इशारा करती हैं, भले ही नव निर्वाचित राष्ट्रपति केंद्रीकृत नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास करें। बीजिंग पर अत्यधिक निर्भरता भी म्यांमार की रणनीतिक स्वायत्तता को कम करने के साथ घरेलू असंतोष को जन्म दे सकती है। म्यांमार में लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं और गरीबी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में, नए राष्ट्रपति के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह जनता की जरूरतों को पूरा करने और उनका भरोसा जीतने का काम कैसे करेंगे। हालांकि, नियंत्रित राजनीतिक प्रक्रियाओं के जरिये स्थिरता लाने का सेना का प्रयास उल्टा भी पड़ सकता है। इससे हालात और बिगड़ने का खतरा है तथा म्यांमार लंबे समय तक एक अंतहीन संघर्ष के चक्र में फंसा रह सकता है।

भारत के लिए म्यांमार संकट तात्कालिक, बहुआयामी और गंभीर परिणामों वाला है। म्यांमार की सीमा भारत के संवेदनशील पूर्वोत्तर राज्यों से होकर गुजरती है। 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद से अब तक करीब 31,000 शरणार्थी मिजोरम में आ चुके हैं। साथ ही, सीमा पार हथियारों की तस्करी और नशीले पदार्थों का कारोबार भी बढ़ा है। म्यांमार भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति का अहम हिस्सा है और पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाली योजनाओं का मुख्य केंद्र भी। वहां जारी आंतरिक संघर्ष 'कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट' जैसी बड़ी परियोजनाओं के लिए खतरा बन रहा है। सशस्त्र प्रतिरोध समूह, जिनमें पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज और विभिन्न जातीय सशस्त्र संगठन शामिल हैं, जुंटा को कड़ी चुनौती दे रहे हैं। 2023 में 'थ्री ब्रदरहुड अलायंस' द्वारा शुरू किया गया 'ऑपरेशन 1027' इसका बड़ा निर्णायक मोड़ साबित हुआ। म्यांमार का चीन के प्रति बढ़ता झुकाव भी भारत के लिए रणनीतिक संतुलन बनाए रखने और क्षेत्रीय भूमिका को सीमित करने का खतरा पैदा करता है।

नई दिल्ली को एक संतुलित व व्यावहारिक रणनीति अपनानी होगी। एक ओर उसे नए राष्ट्रपति के साथ कामकाजी संबंध बनाए रखने होंगे, तो दूसरी ओर जातीय समूहों और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों से भी सतत संवाद जारी रखना होगा। उसे म्यांमार की स्थिति को दूरस्थ समस्या के रूप में देखने के बजाय अपनी आंतरिक सुरक्षा के विस्तार के रूप में समझना होगा। भारत के सामने असली सवाल यह नहीं है कि म्यांमार एक नए दौर में प्रवेश कर रहा है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या यह अगला चरण उसकी पूर्वी सीमाओं पर दीर्घकालिक अस्थिरता को बढ़ावा देगा।

तकनीक की तरक्की इसमें है कि वह हमारे जीवन में कुछ इस तरह घुल जाए कि हमें पता ही न चले। -बिल गेट्स

हर जवाब एक नया सवाल लेकर आता है

जब हम किसी रहस्य को सुलझाते हैं, तो हमारे सामने और भी गहरे रहस्य खुल जाते हैं। यही विज्ञान की सुंदरता है। यह एक ऐसी यात्रा है, जो कभी समाप्त नहीं होती। यह यात्रा हमें लगातार आगे बढ़ने, सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती है।

ब्रायन ग्रीन

जीवन धारा

हम सबको अच्छी कहानी पसंद होती है। हम सब किसी रहस्य के पर्दे को हटते हुए देखना चाहते हैं। हम सब उस संघर्ष से जुड़ना चाहते हैं, जहां कोई साधारण-सा दिखने वाला नायक कठिनाइयों के बीच आगे बढ़ता रहता है। और सच तो यह है कि आधुनिक भौतिकी भी कुछ अलग नहीं है। यह भी एक महाकाव्य है, ब्रह्मांड के जन्म से लेकर उसके विस्तार तक की गाथा। यह एक ऐसा रहस्य है, जो हमारी समझ की सीमाओं को चुनौती देता है, और हमें बार-बार यह सोचने पर मजबूर करता है कि आखिर यह सब कैसे शुरू हुआ?

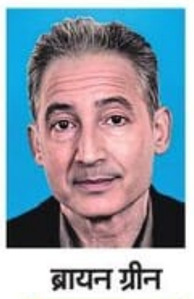

मानव, जो अभी ही इस अनंत ब्रह्मांड में आया है, फिर भी वह इस विशाल सृष्टि के रहस्यों को समझने की हिम्मत कर रहा है। यह प्रयास अपने आप में अद्भुत है। हम छोटे-से ग्रह पर रहने वाले जीव, दूरस्थ आकाशगंगाओं की गति को समझने की कोशिश कर रहे हैं, सूक्ष्म कणों के व्यवहार को जानने का प्रयास कर रहे हैं, और उन नियमों की तलाश में हैं, जो इस समूचे अस्तित्व को एक सूत्र में बांधे हुए है।

भौतिकी हमें सिखाती है कि हर उत्तर के पीछे एक नया प्रश्न छिपा होता है। जब हम किसी रहस्य को सुलझाते हैं, तो हमारे सामने और भी गहरे रहस्य खुल जाते हैं। यही तो विज्ञान की सुंदरता है। यह यात्रा कभी समाप्त नहीं होती। यह एक ऐसी यात्रा है, जो कभी समाप्त नहीं होती। यह हमें लगातार आगे बढ़ने, सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती है। यह खोज सिर्फ वैज्ञानिकों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर उस इन्सान की है, जो आसमान की ओर देखकर सवाल करता है कि वहां क्या है, हम यहां क्यों हैं, और यह दुनिया कैसे चलती है। यही जिज्ञासा हमें यह एहसास दिलाती है कि हम भले ही छोटे हों, लेकिन हमारी सोच असीमित है।

हम इस ब्रह्मांड का ही हिस्सा हैं, और उसे समझने की क्षमता भी हमारे भीतर है। यही सबसे खूबसूरत बात है कि हम सिर्फ इस कहानी का हिस्सा ही नहीं, बल्कि उसे समझने और कहने वाले भी हैं।

जब एआई की मदद से खड़ी कर दी कंपनी

एआई पर बहस का नतीजा कुछ भी हो, पर मैथ्यू ने सिर्फ एआई की मदद से कंपनी बनाकर इसकी असली ताकत साबित कर दी।

एरिन ग्रिफिथ
द न्यूयॉर्क टाइम्स

AI समय

मैथ्यू गैलाघर ने सिर्फ दो महीने में, लगभग 20,000 डॉलर और एक दर्जन से अधिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल्स के सहारे एक नई डिजिटल कंपनी खड़ी कर दी। 41 वर्षीय गैलाघर ने एआई की ताकत का पूरा इस्तेमाल किया और जिन कामों को वह खुद नहीं कर सकते थे, उन्हें समझदारी से आउटसोर्स कर दिया। गैलाघर की टेलीहेल्थ कंपनी, 'मेड्वी' वजन कम करने वाली दवाओं (जीएलपी-1) से जुड़ी है। कंपनी ने अपने पहले व्यावसायिक वर्ष 2025 में 40.1 करोड़ डॉलर की शानदार बिक्री की। दिलचस्प बात यह है कि अपने इस तेजी से बढ़ते कारोबार में गैलाघर ने केवल एक ही कर्मचारी को अपने साथ जोड़ा और वह हैं उनके छोटे भाई इलियट।

हाल ही में, एक मुलाकात के दौरान, गैलाघर, जिनके बिखरे हुए घुंघराले बाल, ढीली-ढाली टी-शर्ट और हाथों पर बने टैटू उनकी अलग पहचान बना रहे थे, ने बताया कि वह मेड्वी का पूरा काम घर से ही संभालते हैं। उनका दिन पूरी तरह काम में बीतता है, सिवाय उन पलों के, जब वह सो रहे होते हैं, नहा रहे होते हैं या अपने बच्चों के साथ समय बिता रहे होते हैं। उन्होंने अपनी आवाज का एआई क्लोन भी तैयार किया है, जो उनकी जगह फोन कॉल करता है और अपॉइंटमेंट्स तय करता है, ताकि वह काम पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें।

इससे पहले 2016 में उन्होंने 'वॉच गैंग' नाम का एक स्टार्टअप शुरू किया था, जो हाथ की बनी घड़ियां बेचने से जुड़ा था। गैलाघर ने इसे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए और 60 लोगों की टीम भी बनाई। पर यह मुनाफा नहीं कमा पाया। फिर, साल 2022 में उन्हें एआई के साथ प्रयोग करने की प्रेरणा मिली। दो साल बाद उनकी मुलाकात मेडिकल स्टार्टअप 'केयरवैलिडेट' के सह-संस्थापक जितेन छाबरा से हुई। इस मुलाकात के बाद मैथ्यू ने एक पुराने और साधारण बिजनेस आइडिया (जीएलपी-1 दवाओं के लिए बिचौलिए की भूमिका) से नई शुरुआत की।

गैलाघर ने मेड्वी की वेबसाइट बनाने के लिए उन्नत एआई टूल्स का उपयोग किया। साथ ही, उन्होंने एआई एजेंट्स और ऑटोमेटेड बॉट्स जैसे कस्टम टूल्स विकसित किए, जिससे सिस्टम आपस में आसानी से जुड़ सकें। ग्राहकों से संवाद के लिए विभिन्न एआई वॉइस टूल्स आजमाए। वह कहते हैं कि मेड्वी कोई एआई कंपनी नहीं है, पर इसे बनाने की पूरी ताकत एआई से ही आई है। सितंबर 2024 में मेड्वी ने आधिकारिक तौर पर अपना कारोबार शुरू किया।

हालांकि, चुनौतियां भी कम नहीं थीं। मेड्वी का कस्टमर सर्विस चैटबॉट कभी-कभी दवाओं की कीमतें खुद ही बना देता था और मैथ्यू उन कीमतों को मान भी लेते थे। कई बार चैटबॉट भ्रमित होकर यह तक कह देता था कि मेड्वी बालों के झड़ने की दवाएं बेचती है, जबकि ऐसा नहीं था। इसके अलावा, अगर कोई ग्राहक किसी असली इन्सान से बात करना चाहता, तो चैटबॉट उसे सीधे गैलाघर के निजी मोबाइल नंबर पर ट्रांसफर कर देता। नतीजतन, 1,000 से ज्यादा कॉल्स सीधे उनके पास आने लगीं। हालांकि, इस असहज स्थिति को भी गैलाघर ने बखूबी संभाला। उन्होंने कॉल्स को मैनेज करने का तरीका ईजाद किया और एक पेशेवर लॉ फर्म तथा एआई आधारित अकाउंटिंग टूल्स की जगह एक अकाउंटिंग फर्म की सेवाएं लीं। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए मीडिया एजेंसियों की मदद ली।

एक बार गैलाघर ने मेड्वी की वेबसाइट में एक छोटा-सा बदलाव किया और फिर एक लंबी यात्रा पर निकल गए। रास्ते में उन्हें फोन आया कि पिछले एक घंटे से कोई ऑर्डर ही नहीं आया है। वह तुरंत समझ गए कि वेबसाइट के अपडेट में कोई गड़बड़ी हुई है। उसे ठीक करने के लिए कंपनी में कोई और था नहीं, सो वह फौरन घर पहुंचे। यह एक बड़ी तकनीकी चूक थी। इसके बाद, उन्होंने अपने भाई इलियट को नौकरी पर रखा। इलियट का मुख्य काम ग्राहकों की बातचीत को सुनना, उसे व्यवस्थित करना और जरूरी जानकारी छांटना है।

2025 के अंत तक कंपनी के 2.5 लाख ग्राहक बन चुके थे। इतनी बड़ी सफलता के बाद भी गैलाघर की अपनी टीम को बढ़ाने की कोई खास योजना नहीं है। हालांकि, वह यह समझते हैं कि इन्सानी जुड़ाव का महत्व पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता। इसी सोच के तहत, अपने कुछ खास ग्राहकों से बेहतर रिश्ते बनाने के लिए उन्होंने सात 'ह्यूमन अकाउंट मैनेजर' नियुक्त किए हैं। दिलचस्प बात यह है कि ग्राहकों को प्रभावी ढंग से मैनेज करने के लिए 'ह्यूमन अकाउंट मैनेजर' भी एआई का ही सहारा ले रहे हैं।

फ्लिकी एआई

फ्लिकी एक एआई-संचालित वीडियो निर्माण टूल है, जो साधारण टेक्स्ट-जैसे ब्लॉग पोस्ट, स्क्रिप्ट या छोटे कैप्शन, आदि को एक आकर्षक और पेशेवर वीडियो में बदल देता है। इसमें आपको किसी जटिल वीडियो एडिटिंग सॉफ्टवेयर या टाइमलाइन की आवश्यकता नहीं होती। बस आपको अपना टेक्स्ट पेस्ट करना होता है और यह अपने आप विजुअल्स से लेकर वॉइसओवर तक सब कुछ तैयार कर देता है। इसे इस्तेमाल करने के लिए किसी भी तरह की एडिटिंग स्किल की जरूरत नहीं होती। यह टूल खासतौर पर कंटेंट क्रिएटर्स, मार्केटर्स, एजुकेटर्स के लिए बेहद उपयोगी है।

मूंग-उड़द का करें राइजोबियम कल्चर

ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द की खेती में राइजोबियम कल्चर अपनाकर किसान लागत घटा सकते हैं। इससे यूरिया जैसी रासायनिक नाइट्रोजन खाद की आवश्यकता कम पड़ती है। पीला मोजेक से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधी उन्नत किस्मों की बुआई करें।

राइजोबियम एक लाभकारी बैक्टीरिया है, जो दलहनी फसलों की जड़ों में गांठें बनाकर वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों के लिए उपयोगी रूप में बदल देता है। इसे नाइट्रोजन स्थिरीकरण कहते हैं। इससे रासायनिक नाइट्रोजन खाद (यूरिया) की आवश्यकता कम हो जाती है, जिससे खेती की लागत घटती है, मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है और किसानों की कमाई बढ़ती है।

ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द की खेती में राइजोबियम कल्चर के साथ बीज उपचार और उन्नत तकनीकें अपनाकर किसान बंपर उपज ले सकते हैं। फसल को संतुलित पोषक तत्व देकर, उचित सिंचाई अपनाकर और कीट प्रबंधन करके न केवल किसान की लागत घटती है, बल्कि टिकाऊ खेती को भी बढ़ावा मिलता है।

30-35 दिन बाद करें पहली सिंचाई

मूंग और उड़द में 3-4 सिंचाई पर्याप्त है। पहली सिंचाई बुआई के 30-35 दिन बाद करें। बाद में, आवश्यकतानुसार 10-15 दिन में हल्की सिंचाई करते रहें। फूल आने से पहले और दाना बनते समय सिंचाई जरूरी है। खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई व पेंडिमेथालिन का उपयोग करें। पीला मोजेक रोग, सफेद मक्खी, तेला व फलीछेदक कीट से बचाव करें।

बीज उपचार करके सीड ड्रिल से करें बुआई

प्रति किग्रा बीजों को 2.5 ग्राम थीरम व एक ग्राम कार्बेन्डाजिम से शोधन करें। इसके बाद 250 ग्राम राइजोबियम व पीएसबी कल्चर 0.5 लीटर पानी में घोलकर 10 किग्रा बीज पर लगाएं, छाया में 2-3 घंटे सुखाकर बुआई करें। कतार की दूरी 25-30 सेमी, पौधे की दूरी 10 सेमी और गहराई 4-6 सेमी रखें। सीड ड्रिल से बुआई करें। 15-20 किग्रा नाइट्रोजन, 40-50 किग्रा फॉस्फोरस व 20 किग्रा पोटाश तथा जैविक खाद दें।

-डॉ. लक्ष्मीकांत सारस्वत, कृषि वैज्ञानिक, केवीके, बुलंदशहर

मिट्टी और सही समय का करें चयन

मूंग व उड़द की फसल अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी में सबसे बेहतर होती है। जलभराव और क्षारीय भूमि में मूंग की खेती से बचना चाहिए। खेत की 2-3 बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें और पाटा लगाकर समतल करें। जायद में मार्च-अप्रैल बुआई के लिए सबसे उपयुक्त समय माना जाता है। खरीफ में जुलाई के पहले पखवाड़े में मूंग-उड़द की बुआई कर सकते हैं।

मूंग की उन्नत किस्मों से बंपर उपज

वैज्ञानिकों द्वारा सुझाई गई उन्नत और रोग-प्रतिरोधी किस्मों की बुआई करें। पूसा 9531, पूसा विशाल, पूसा विराट, पूसा 1431, पंत मूंग-9, एम.एच. 1142, पंत मूंग-5 और शिखा मूंग की प्रमुख प्रजातियां हैं। ये किस्में 52 से 75 दिनों में पकती हैं और 8 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देती हैं। अच्छी उपज के लिए क्षेत्र और मौसम के अनुसार सही किस्म का चयन करना चाहिए।

उड़द की बेहतर किस्में अपनाएं किसान

उड़द की उन्नत प्रजातियां 70 से 85 दिन में तैयार हो जाती हैं। ये किस्में प्रति हेक्टेयर 10-15 क्विंटल तक उपज देती हैं। उड़द की प्रमुख किस्मों में पंत यू.-19, पंत-35, आजाद उड़द-1, नरेंद्र उड़द-1, आजाद उड़द-2, शेखर-1 (हरा दाना), शेखर-2 (हरा दाना), पंत यू.-30, पी.डी.यू.-1, उत्तरा और पंत उड़द-31 शामिल हैं। जायद में 25-30 किग्रा और खरीफ में 15-20 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त माना जाता है।

नई रिसर्च

बीटल कीट के हमले पर अश्वगंधा का पलटवार

पौधों पर कीटों का हमला होने पर वे भी जवाब देते हैं। अश्वगंधा के पौधे पर बीटल कीट के हमले से जुड़ी ऐसी ही स्थिति के बारे में पता चला है। बीटल कीट के आक्रमण के दौरान अश्वगंधा का पौधा अपने मेटाबॉलिज्म को बदल देता है। लखनऊ स्थित सीएसआईआर-सीमैप के अध्ययन में यह दिलचस्प खुलासा किया गया है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि हमले के दौरान अश्वगंधा के पौधे में सुरक्षात्मक यौगिकों के बढ़ने से ऐसा होता है। ऐसी स्थिति कीटों की आहार उपलब्धता को सीमित कर देती है, जिससे उनके जीवित रहने की संभावना घटती है। यह जानकारी फसल सुरक्षा के प्राकृतिक उपाय खोजने की दिशा में अहम मानी जा रही है।

अश्वगंधा के पौधे पर बीटल कीट के हमले से पौधे में रासायनिक बदलाव होते हैं। पौधा अपनी रक्षा के लिए खास यौगिक अधिक मात्रा में बनाने लगता है, जबकि ऊर्जा से जुड़े तत्व भी प्रभावित होते हैं। ये तत्व कीटों के शरीर में भी पाए गए और अश्वगंधा के अर्क से कीटों की सेहत व जीवित रहने की क्षमता पर बुरा असर देखा गया है।

किचन गार्डन

गुणों से भरपूर हरी सब्जी अरुगुला गमले में उगाएं

अरुगुला जिसे तारामीरा या रॉकेट लीफ भी कहते हैं, एक पौष्टिक और तीखे स्वाद वाली हरी पत्तेदार सब्जी है, जो 30-40 दिनों में तैयार हो जाती है। इसका उपयोग सलाद, पिज्जा व सैंडविच में खूब होता। यह विटामिन-के, विटामिन-ए, विटामिन-सी और एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर सब्जी है। ठंडे स्थानों और रेतीली दोमट मिट्टी में इसकी अच्छी बढ़वार होती है। एक बार लगाने के बाद इसकी 6 से 8 बार कटिंग ले सकते हैं।

- **मिट्टी की तैयारी :** 50% सामान्य मिट्टी, 30% वर्मी कम्पोस्ट और 20% रेत या कोकोपीट मिलाकर उपयुक्त मिश्रण तैयार करें, जिससे पौधों की बढ़वार बेहतर होती है।

बाहरी पत्तियों की तुड़ाई

बुआई के 30 से 40 दिन के बाद जब पत्तियां 3 से 5 इंच लंबी हो जाएं, तो अरुगुला की तुड़ाई शुरू कर सकते हैं। बाहरी पत्तियों को तोड़ते रहें। इससे पौधा अंदर से नई पत्तियां बना लेगा और लंबे समय तक लगातार उत्पादन देता रहेगा।

मिट्टी को रखें हल्का नम

- अरुगुला को 4-6 घंटे धूप या हल्की छाया में रखें। 6 इंच गहरे गमले या ग्रो-बैग में करें बुआई। उचित जल निकासी का प्रबंध करें।
- मिट्टी हल्की गीली रखें। बीजों को लगभग 1/4 इंच गहराई और 1-2 इंच दूरी पर बोने के बाद उन्हें हल्की मिट्टी से ढक दें।
- पानी इतना दें कि मिट्टी में नमी बनी रहे, लेकिन जरूरत से ज्यादा सिंचाई न करें। जलभराव से बचें, नहीं तो जड़ें सड़ सकती हैं।

बात पते की

प्रीमियम पर पाएं 40% प्रोत्साहन

जलीय कृषि बीमा अपनाएं

प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह-योजना की जलीय कृषि बीमा योजना मछली पालकों के लिए फायदेमंद है। यह नुकसान की भरपाई कर किसानों की आय को स्थिर बनाए रखने में सहायक है।

राहत भरा प्रीमियम

प्रीमियम पर 40% प्रोत्साहन मिलता है। एससी / एसटी व महिला किसानों को अतिरिक्त 10 फीसदी लाभ मिलता है। प्रति हेक्टेयर ₹25,000 व अधिकतम 4 हेक्टेयर तक ₹1 लाख डीबीटी के जरिए प्रदान किए जाते हैं।

नुकसान की भरपाई

यह बीमा योजना प्राकृतिक आपदाओं, रोगों, प्रदूषण, बाढ़ व चक्रवात से होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई करती है। इसमें तालाब आधारित मछली पालन, झींगा फार्मिंग और अन्य जलीय कृषि उत्पादन शामिल हैं।

- **ऑनलाइन आवेदन :** जलीय कृषि बीमा का लाभ प्राप्त करने के लिए आधिकारिक वेबसाइट nfdp.dof.gov.in पर पंजीकरण करें। जानकारी के लिए टोल फ्री नंबर- 1800-425-1660 पर कॉल करें।

फर्टिलाइजर ब्रॉडकास्टर से करें सटीक खेती

फर्टिलाइजर ब्रॉडकास्टर उर्वरक, बीज व अन्य दानों को बड़े खेतों में समान रूप से फैलाने में उपयोगी है। इसके कोणीय या चौकोर हॉपर में सामग्री भरते हैं, जो छिद्र से नीचे गिरती है, जहां घूमती डिस्क उसे सेंट्रीफ्यूगल बल से दूर तक फैलाती है।

जैसी जरूरत, वैसी मशीन

- ब्रॉडकास्टर आकार व पावर के आधार पर भिन्न होते हैं। बड़े खेतों के लिए ट्रैक्टर-माउंटेड व बगीचे के लिए पुश/टो-बीहाइंड ब्रॉडकास्टर उपयुक्त है।
- बैकपैक (मैनुअल / बैटरी या बिजली से चालित) व हैंडहेल्ड फर्टिलाइजर ब्रॉडकास्टर छोटे कामों में उपयोगी माने जाते हैं।

फसल मंत्र

आम के बगीचे में फल मक्खी पर रखें नजर

- फल मक्खी के नियंत्रण के लिए मिथाइल यूजीनाल गंध ट्रैप (10 प्रति हेक्टेयर) लगाएं। फलों के झड़ने से बचाव के लिए एनएए 20 पीपीएम (प्लेनोफिक्स 90 मिली/200 लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- पत्ती काटने वाली सूंडी के नियंत्रण के लिए कार्बेरिल 0.2% छिड़कें। गुम्मा रोग से प्रभावित बौर नष्ट कर दें। मटर के आकार के फल हो जाएं तो सिंचाई करें। 10-15 दिन के अंतराल पर 2-3 सिंचाई करें।

बलुई मिट्टी या भट्टों के पास के बागों में आंतरिक सड़न रोकने के लिए बोरेक्स 1% का छिड़काव करें। प्ररोह भेदक कीट से प्रभावित भागों को काटकर नष्ट करें और नियंत्रण हेतु थियाक्लोप्रिड/फॉस 25 ईसी (2 मिली/लीटर) का छिड़काव करें।

कृषि मॉडल

मिसाल

नाम : ओमप्रकाश

प्राकृतिक खेती संग मोती उत्पादन से बढ़ी कमाई

मुरादाबाद जिले के सलेमपुर गांव के किसान ओमप्रकाश ने प्राकृतिक खेती के साथ मोती उत्पादन शुरू किया है। इससे उन्हें सेहतमंद फसलें मिल रही हैं, लागत घटी है और कमाई बढ़ गई है।

ओमप्रकाश के पास कुल 12 एकड़ जमीन है, जिसमें से करीब 3.5 एकड़ पर वे पूरी तरह से जीवामृत आधारित रसायन मुक्त खेती कर रहे हैं। देसी गाय के गोबर और गोमूत्र से तैयार जीवामृत का उपयोग कर वे सब्जियां, अनाज और अन्य फसलें उगाते हैं। इससे उनकी लागत कम हुई है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ी है। इसके अलावा, उन्होंने अपने खेत में किचन गार्डन विकसित किया है, जहां परिवार की जरूरत की लगभग सभी सब्जियां और फल उगाए जाते हैं।

- **मोती की खेती से बढ़ी आमदनी**

प्राकृतिक खेती के साथ ही ओमप्रकाश ने मोती की खेती को अपनाकर आय का एक नया स्रोत जोड़ा है। उन्होंने खेत में तालाब बनाकर उसमें करीब 30 हजार सीप डाले हैं। ओमप्रकाश का कहना है कि इन सीपों से तैयार मोती लगभग 18 महीने में तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा मिलता है। बाजार में मोतियों की अच्छी कीमत मिलने के कारण यह व्यवसाय तेजी से लाभदायक साबित हो रहा है।

- **सरकारी योजनाओं का भी मिला लाभ**

ओमप्रकाश ने बताया कि इस मॉडल को मजबूत बनाने के लिए उन्हें सरकारी योजनाओं का भी लाभ मिला है। मोती की खेती व मछली पालन के लिए सब्सिडी मिली, जिससे शुरुआती लागत कम हो गई। तालाब में मछली पालन भी करके उन्होंने अतिरिक्त आय का स्रोत विकसित किया है। उन्होंने बताया कि साल भर में करीब 15 लाख रुपये की आय हो जाती है।

अमर उजाला क्लासीफाइड

आवश्यकताएं - नौकरियां - बिक्री - प्रॉपर्टी - किराया - शिक्षा - सर्विसेज - लोन - फाइनेंस

विज्ञापन बुक करने के लिए कॉल करें 1800-121-1166

बुकिंग टाइम : सुबह 9 बजे से सांय 5:30 बजे तक

www.easyconnect.amarujala.com/classifiedonline

आवश्यकता है

सेल्स/मार्केटिंग

आवश्यकता है फिल्ड सेल्स के लिए लड़कों की, 12वीं पास कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज की जानकारी अनिवार्य है। सम्पर्क सूत्र 8860605971

DISCOUNT UPTO 50 LAKHS*
PLOTS | VILLAS | FARM LAND
GOA PROPERTY EXPO DELHI
T&C APPLY
INVEST IN NORTH GOA EXT. WITH EXCLUSIVE EXPO BENEFITS
9609-700-700

सूचना

आम सूचना

सार्वजनिक सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29A के अंतर्गत, भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के समक्ष निम्नलिखित नाम से एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल के पंजीकरण हेतु आवेदन किया गया है।
सर्वेजना हितैषी पार्टी (सहिपा) पताः 11वां एवेन्यू, गौर सिटी, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, उत्तर प्रदेश 201306 उपरोक्त उल्लिखित राजनीतिक दल के पंजीकरण के सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो, तो वह इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 30 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में सचिव, भारत निर्वाचन आयोग, निर्वाचन सदन, अशोका रोड, नई दिल्ली 110001 को प्रस्तुत कर सकता है।
डॉ. अजमेर सिंह राणा
प्रस्तावित अध्यक्ष

व्यक्तिगत

मेरी हाईस्कूल वर्ष 2001, अनुक्रमांक 0205203 की सनद व मार्कशीट खो गई है। नरेंद्र कुमार सागर पुत्र श्री राम सिंह गांव बगठारी, तहसील डिबाई (बुलंदशहर)

मैं धवन पुत्र जयविनदर सिंह एवं लक्ष्य पुत्र जयविनदर सिंह दोनों मेरा ही नाम हैं आगे से भविष्य मुझे लक्ष्य पुत्र जयविनदर सिंह के नाम से जाना जाए मौ. न्यू पाठक बिमला होल के सामने जहांगीराबाद बु.शहर

मेरे आधारकार्ड में मेरा नाम सपना अंकित है जबकि मेरी संतानो के सभी शैक्षिक प्रमाणपत्रों में मेरा नाम सपना सिंघल है। सपना व सपना सिंघल व सरिता गुप्ता मेरे ही नाम है। सपना पत्नी दिनेश सिंघल निवासी म.न. 202 देवीपुरा प्रथम बुलंदशहर

मेरे आधारकार्ड मे मेरा नाम राजकुमार अंकित है जबकि मेरी संतानों के सभी शैक्षिक प्रमाणपत्रों में मेरा नाम राजकुमार सिंघल है। उपरोक्त दोनो नाम मेरे ही है। राजकुमार पुत्र सीताराम निवासी म.न. 202 देवीपुरा प्रथम बुलंदशहर।

मेरे पुत्र कृष्णा के जन्म प्रमाणपत्र में मेरा नाम रविकान्त व पत्नी का राखी गलत दर्ज है। सही नाम मेरा रवि कान्त व पत्नी का राखी उपाध्याय है रवि कान्त, गोविन्दपुरी, मोदीनगर

मैं, बुद्धे पासवान पुत्र श्री उदय पासवान, निवासी गॉंव कच्छवि मधुबनी लखनुर बिहार-847410, एतद् द्वारा सूचित करता हूँ कि मेरा सही नाम बुद्धे पासवान है त्रुटिवश मेरा नाम बैंक में सुनील कुमार हो गया है जबकि बुद्धे पासवान व् सुनील कुमार एक ही व्यक्ति के नाम है। अब से सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी रिकॉर्ड में मुझे बुद्धे पासवान के नाम से जाना जाएगा। बुद्धे पासवान पुत्र श्री उदय पासवान

In my son Bhavya Sirohi's school record, the father's name Dharmendra Sirohi and mother's name Renu Sirohi are incorrectly recorded, while the father's correct name is Dharmendra Singh and mother's name is Renu. The correct names should be entered in the school record. Dharmendra Singh son of Vikram Singh, resident of I-66, Yamunapuram, Bulandshahr.

जयभगवान शर्मा पुत्र स्व0 श्री कालीदास निवासी-68, न्यू आर्य नगर गाजियाबाद यह कि मेरे द्वारा अमर उजाला समाचार पत्र दिनांक 10 अक्टूबर 2014 में प्रकाशन कराये गये समाचार का मैं खन्डन करता हूं और घोषणा करता हूं कि मेरी समस्त चल- अचल सम्पत्ति के वारिस मेरे दोनों पुत्र संजय शर्मा व सन्दीप शर्मा पुत्रगण जयभगवान शर्मा ही रहेंगे

मेरे पुत्र आशीष कुमार यादव व पुत्री निशिता यादव के शैक्षणिक अभिलेख में मेरा नाम Nirbhan Singh Yadav दर्ज है, जबकि मेरे अभिलेखों में Nirbhan Singh अंकित है। उपरोक्त दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं और इनमें किसी प्रकार का अंतर नहीं है। भविष्य में मुझे दोनों नामों से जाना जाएगा। निरभान सिंह पुत्र शिव शंकर, निवासी 11/17 आलोक नगर एनटीपीसी टाउनशिप दिबियापुर, औरैया उत्तर प्रदेश

I, Jeevan Lal S/o Late Ved Prakash, R/o H.No. 151, Gali No- 14, Loni Road, Gulab Vatika, Loni Ghaziabad, UP- 201102, declare that Jeevan Lal & Jeevan Gupta are one & same person. Hereafter I will be known as Jeevan Lal for all future purposes.

मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण-पत्र में भूलवश उसका नाम केशव शर्मा व माता का नाम मनीषा दर्ज है जबकि उनके सही नाम केशव शर्मा और मनिषा शर्मा है। जितेंद्र कुमार शर्मा पुत्र बाबूलाल शर्मा, निवासी सी-15 मोदीपोन कॉलोनी, मोदीनगर गाजियाबाद

मेरी यूपी बोर्ड हाईस्कूल वर्ष 2021 अनुक्रमांक 210344792 व इण्टरमीडिएट वर्ष 2024 अनुक्रमांक 2245229215 की मार्कशीट, सनद एवं अन्य जरूरी कागजात गुरुद्वारा रोड पर थाना सूरजपुर जनपद गौतमबुद्ध नगर, यूपी में गुम हो (वास्तव में खो) गए हैं। अरुण कुमार पुत्र गिरीश कुमार निवासी- प्रेमपुरी नईबस्ती (मोहननगर), नरौरा (बुलन्दशहर)

हमने अपने पुत्र राजकुमार व उसकी पत्नी काजल को उनकी गलत कारगुजारिया के कारण अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखलकर सम्बन्ध विच्छेद कर लिये हैं। इनके किसी भी कृत्य/लेनदेन के लिये ये स्वयं जिम्मेदार होगे। राजाराम पुत्र हरदेव सिंह निवासी उमराला खुर्जा, बुलंदशहर

मैं छतर सिंह पुत्र स्व. समय सिंह निवासी ग्राम भईपुरा अपने पुत्र रोहित व उसकी पत्नी कल्पना को गलत चाल चलन की वजह से अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर रहा हूं। आज से मेरे परिवार का इन लोगों से कोई वास्ता नहीं होगा।

मैंने अपना नाम Rishab से बदलकर Rishabh Gupta कर लिया है। भविष्य में मुझे अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाएं। ऋषभ गुप्ता पुत्र ललित कुमार गुप्ता, निवासी 121, मोहल्ला शीतल गंज, पोस्ट व थाना कोतवाली नगर, बुलंदशहर

मेरा नाम आधारकार्ड में तेसनू (Tesnu), जन्मतिथि 05-06-2012 है। जो गलत है। अन्य कागजातों में नाम तेजस (Tejas), जन्मतिथि 30-06-2012 हैं। जो सही हैं। तेजस पुत्र मुकेश कुमार, खेरली हाफिजपुर, गुरूकुल, सिकन्द्राबाद, गौतमबुद्धनगर

मेरी यूपीबोर्ड हाईस्कूल वर्ष 2022 अनुक्रमांक 1220350191 व इंटरमीडिएट वर्ष 2024 अनुक्रमांक 2245306328 के प्रमाणपत्र सह अंकपत्र कहीं खो गए है। मीनाक्षी राठी पुत्री पवन कुमार राठी, निवासी गांव अखत्यारपुर, पोस्ट गुठावली कलां, जिला बुलंदशहर

Objectionable ads? Complain to ASCI 7710012345 www.ascionline.in

I, SANGITA W/o PRAMOD KUMAR MALIK R/o Air Force Station, Dadri, G.B.Nagar (U.P.), I have change my name from SANGITA to SANGITA MALIK (DOB- 01.01.1971) for all future purposes

हमने अपने पुत्र अमित कुमार व पुत्रवधू रेखा को उनके अभद्र आचरण के कारण अपनी चल-अचल संपत्ति से दिनांक 18-09-2018 को बेदखली व सम्बन्ध विच्छेद का प्रकाशन कराया था। लेकिन अब हम उक्त बेदखली कार्रवाई का दिनांक 07-04-2026 के शपथपत्र द्वारा खंडन कर रहे हैं जयकुमार गौड़ पुत्र नरेश कुमार गौड़ निवासी कहरौला खुर्जा, बुलंदशहर

मेरा हाईस्कूल परीक्षा वर्ष 2020 अनुक्रमांक 0332442 का अंकपत्र- सह प्रमाण पत्र वास्तव मे खो गया है। निशा पुत्री खेमचंद नि0ग्राम चांदपुरपूठी कोतवाली स्याना बुलंदशहर

I, Bhupender Yadav Alias Bhupender Singh S/o Rampal Singh R/o VPO Chandu Budhera Gurugram Haryana inform that I have changed my name from Bhupender Singh to Bhupender Yadav for all purposes.

मैंने अपने पुत्र का नाम Arman Saifi से बदलकर Arman रख लिया है। अब उसे इसी नाम से जाना जाए। पप्पू पुत्र हनीशुद्दीन निवासी आर्यनगर मुरादनगर, गाजियाबाद

I Tushar Dutt S/o Krishna Dutt Gautam Resident of House no.-5 Khasra No-77 Shri Krishna Vatika Sudamapuri Vijay Nagar Ghaziabad City Ghaziabad Uttar Pradesh, 201009 have changed my name from Tushar Dutt to Tushar Dutt Gautam. Henceforth I would be known by the name of Tushar Dutt Gautam for all future purposes.

बेटे आयुष त्यागी के प्रमाणपत्रों में मेरा नाम पंकज त्यागी दर्ज हो गया जबकि मेरे प्रमाणपत्रों में मेरा नाम पंकज कुमार दर्ज है यह दोनों मेरे ही नाम हैं। पंकज कुमार पुत्र श्री आनन्द प्रकाश त्यागी बृज विहार कॉलोनी गली नं.-26, मुरादनगर, मोदीनगर, गाजियाबाद।

I, Umesh Kumar Sharma S/o Kundan Lal Sharma, R/o Sarvodaya Nagar Pilkhuwa Dehat, Tehsil Dhaulana, District Hapur, I hereby declare that my name Umesh Sharma is wrongly written in my Son School Record and Certificate But my actual and Current name is Umesh Kumar Sharma for all future Purposes.

मैं अपने पुत्र रोहित कुमार व पुत्रवधू बीना को उनके गलत आचरण के चलते अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखलकर उनसे अपने सभी सम्बन्ध खत्म करती हूं। विमलेश पत्नी स्व0 अमरपाल निवासी म.नं.-177, गली नं.-2, बी-ब्लॉक, संगम विहार, लोनी, गाजियाबाद।

मैं श्रीमती रमा वत्स पत्नी मयंक शर्मा उम्र 46 वर्ष निवासी जी ब्लॉक, जी- 543, गोविन्दपुरम गाजियाबाद पिन कोड 201013 मेरे कुछ दस्तावेजों में मेरा नाम रमा शर्मा अंकित हो गया है। जबकि मेरा सही नाम रमा वत्स है। रमा वत्स व रमा शर्मा एक ही महिला के नाम है। भविष्य में मुझे रमा वत्स के नाम से जाना व् पहचाना जाये।

मेरे पुत्री के जन्म प्रमाण-पत्र में भूलवश उसका नाम प्रियांशी व माता का नाम मनीषा दर्ज है जबकि उनके सही नाम प्रियांशी शर्मा और मनिषा शर्मा है। जितेंद्र कुमार शर्मा पुत्र बाबूलाल शर्मा, निवासी सी-15 मोदीपोन कॉलोनी, मोदीनगर गाजियाबाद

Public Notice
Kind attention M/s Ginni Filaments Ltd., 110 Km Stone, Delhi Mathura Road, Mathura-Uttar Pradesh (Also D-196, Sector-63, Noida, Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh-201307, Email:- secretarial@ginnifilaments.com) had supplied defective PPE Kits vide PO purchase orders PO No.: 01/Proc-PPE/SL/09-21 & No. 02-A(P)/Proc-PPE/SL/01-22 respectively, which you have been repeatedly asked to collect via notices, but you have failed to collect these and also not paid the godown charges where these kits are housed, these 1,93,000 nos. kits (aprox.) will be auctioned by Uttarakhand Harikabira Bahu Udeshya Sahakari Samiti Ltd (UKHBUSSL) on as is where is basis if the kits are not collected within 10 days of this public notice, Plot No.837, Khasra No.00032, Langha Road, Industrial Area, Dehradun, Uttarakhand - 248197, Email:- ukhbussl@gmail.com
Sd/- President,
Uttarakhand Harikabira Bahu Udeshya Sahakari Samiti Ltd.

वैधानिक सूचना

पाठकों को सलाह दी जाती है किसी विज्ञापन पर किसी भी प्रतिक्रिया से पहले विज्ञापन में प्रकाशित किसी उत्पाद या सेवा के बारे में अपनी पूरी तरह जॉच पडताल कर लें। यह समाचार पत्र उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता या विज्ञापन दाता आदि के विवरण के बारे में विज्ञापन दाता द्वारा किए गए दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता। समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन **जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य** किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठको को सावधान किया जाता है कि कोई भी प्रतिक्रिया करने से पहले विज्ञापन के बारे में पूर्ण जांच पड़ताल कर लें तब आगे बढ़ें। समाचार पत्र उपरोक्त किसी भी विज्ञापन के बारे में किसी पाठक के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।

उत्तर पश्चिम रेलवे

ई–ऑक्शन सूचना

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य) / उत्तर पश्चिम रेलवे, बीकानेर भारत के राष्ट्रपति की ओर से बीकानेर मण्डल पर एटीएम, पे एण्ड यूज, पार्किंग, विज्ञापन, एम.एस.एस. ठकों के लिए ई–ऑक्शन प्रारम्भ किये गये हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है:–

केटलॉग संख्या	कार्य का नाम व स्थान	ई–ऑक्शन का दिनांक व समय
EA-PNU-4-26	सिरसा, सूरतगढ़, चरखीदादरी, मण्डीडबवाली, लालगढ़ (सूरतगढ़ साईड), कोसली, रतनगढ़, लालगढ़ (बीकानेर साइड) रेलवे स्टेशनों पर पे एण्ड यूज टॉयलेट की साफ–सफाई हेतु।	दिनांक 13.04.2026 समय 11:00 बजे ई–ऑक्शन होगा।
EA-Parkin-01-26	गोगामेड़ी, श्रीकरणपुर रेलवे स्टेशन पर साईकल, स्कूटर, मोटर साईकल, कार पार्किंग स्टैण्ड।	दिनांक 13.04.2026 समय 15:00 बजे ई–ऑक्शन होगा।
EA-ADV-04	Advertisement -out of Home at: -हिसार। Advertisement -Train Exterior (Below window):- Train No.14727-28(SGNR-YKJ) & 14737-38 (BNW-TKJ), Train No.54701 02(LGH-ABS) 04771-72 (APH-BTI), 04783-84(SSA-BTI) & 14721-22 (JU-BTI), Train No. 12485-86 (SGNR-NED) & 12439-40(SGNR-NED),Train No. 14707-08 (HMH-DDR), Train No. 04705/06 HMH-JP TOD SPL, 04703/04 HMH-SGNR PASSENGER, 14735/36 SGNR-UMB EXP. 54753/54 BTI-SGNR PASSENGER, 54755/56 BTI-SGNR PASSENGER, 54765/66 DUI-BTI PASSENGER,Train No. 14701-02 (SGNR-BDTS), Train No.04777-78(HMH-SDLP), 04773-74 (SGNR-SOG), 04775-76(SDLP-HMH), 04779-80(SGNR SOG) & 54759-60/ 54761-62(HMH-SOG) & 54763-64(SGNR-SDLP)Train No. 22471/72 LGH-DEE Exp with Link 20473/74 DEE-UDZ EXP,Train No. 22497-98 (SGNR-TPJ), Train No. 12489-90 (SGNR-DDR).	दिनांक 17.04.2026 समय 15:00 बजे ई–ऑक्शन होगा।
EA MSS PS 01	श्रीगंगानगर, भिवानी, हनुमानगढ़ रेलवे स्टेशनों के पार्सल कार्यालय में सुविधा काउंटर स्थापित करके दोपहिया वाहनों और पार्सल / सामान पैकेजों के लिए पैकिंग सेवाओं का प्रावधान करना।	दिनांक 17.04.2026 समय 15:00 बजे ई–ऑक्शन होगा।

अन्य सूचना एवं नियम व शर्तों के लिए IREPS की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर लॉगिन करें।

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें 505-AJ/26

Medical Helpline

गुप्त रोगी मिलें
नामर्दी, शीघ्रपतन, शुक्राणुओं की कमी
डा.शेरा
वाई.ए.एम.सी चौक, फरीदाबाद
Call & Book Appointment 9410000016

इंदिरा IVF रवि वुमन्स हॉस्पिटल
अब सेक्टर–35 नोएडा में
नि:शुल्क
नि:संतानता परामर्श
सप्ताह के 7 दिन खुला
8826975080, 8585808073
ए–1 गोल्फ कोर्स रोड सेक्टर 35 (मोरना बस स्टैण्ड के पास)
RAVI HOSPITAL
Email : noida@ravihospital.org
आगरा । अलीगढ़ । फिरोजाबाद । नोएडा

संयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं। परिश्रम करने से भूख तेज होती है और संयम अतिभोग से रोकता है।

– रूसो

जोखिम में बचपन

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि जिन नौनिहालों को हम देश का भविष्य मानते हैं, उनमें से बहुत सारे बच्चे आज बहुस्तरीय जोखिम के बीच से गुजर रहे हैं। बच्चों के खिलाफ होने वाले अपराधों के अनेक रूप के अलावा बाल तस्करी का संजाल आज इस कदर जटिल होता जा रहा है कि इससे निपटना सरकारों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। हालांकि इस अपराध को काबू में करना और बच्चों को इस खतरे से बचाना सरकार की अनिवार्य जिम्मेदारी और सबसे ऊपर की प्राथमिकता में दर्ज होना चाहिए। मगर हालत यह है कि देश के सुप्रीम कोर्ट को इस बारे में केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश देना पड़ रहा है कि वे बच्चों के खिलाफ इस अपराध को गंभीरता से लें। गौरतलब है कि बुधवार को एक याचिका पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने देश में बाल तस्करी के बढ़ते मामलों पर गहरी चिंता जताई और कहा कि संगठित गिरोह देशभर में सक्रिय हैं और अगर राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों ने तुरंत प्रभावी कदम नहीं उठाए, तो स्थिति बेकाबू हो सकती है।

हैरानी की बात यह है कि बाल तस्करी के फैलते जाल पर शीर्ष अदालत के सख्त रुख के बावजूद कई राज्यों ने अब तक न जरूरी रपट तैयार की है और न ही समितियां बनाई हैं। समस्या की गंभीरता को देखते हुए स्वाभाविक ही सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों के लापरवाह रवैये पर नाराजगी जताई। दरअसल, करीब एक वर्ष पहले अदालत ने अपने एक फैसले में संगठित तस्करी के जाल को तोड़ने के लिए कई संस्थागत सुधारों के निर्देश दिए थे। इनमें तस्करी के मामलों में छह महीने के भीतर हर रोज सुनवाई करना, मानव तस्करी रोधी इकाइयों को मजबूत करना और जांच प्रक्रिया में सुधार करना शामिल था। अदालत ने राज्यों को यह निर्देश दिया था कि वे तस्करी के संभावित संवेदनशील स्थानों की पहचान और निगरानी के लिए राज्यस्तरीय समितियां बनाएं और लापता बच्चों के मामलों को तस्करी मान कर जांच शुरू करें। मगर इस मुद्दे पर राज्य सरकारों के रुख का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि कई राज्यों ने अभी तक तय प्रारूप में रपट तक दाखिल नहीं की है। सरकारी तंत्र में इस इच्छाशक्ति के अभाव और उदासीनता की वजह क्या यह है कि जो बच्चे तस्करी का शिकार हो जाते हैं, उनमें ज्यादातर समाज के गरीब और कमजोर तबके से आते हैं?

यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि देश में बाल तस्करी का संकट पिछले कुछ वर्षों के दौरान कितना गहरा गया है। खासतौर पर कोविड महामारी के बाद बच्चों के लापता होने के मामलों में काफी तेजी दर्ज की गई। बच्चों के खिलाफ अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश की स्थिति ज्यादा गंभीर है। सही है कि लापता होने वाले तमाम बच्चों में से कइयों को पुलिस खोज लेती है, लेकिन उनमें से बहुतों की कोई खबर नहीं मिलती। सवाल है कि जिन बच्चों को नहीं खोजा जा पाता, वे कहां जाते हैं और उनके साथ क्या होता है। यह समझना मुश्किल नहीं है कि देश भर में जो बच्चे गायब हो जाते हैं, उन्हें बाल मजदूरी से लेकर यौन शोषण और अपराध की दुनिया के अंतहीन दलदल में झोंक दिया जाता है। एक परिवार अपने बच्चे के लापता होने के बाद किस दंश और दुख से गुजरता है, यह शायद बताने की जरूरत नहीं है। मगर कोई भी समाज और सत्ता बच्चों की तस्करी के मुद्दे को लेकर अगर गंभीर नहीं है, तो यह एक तरह से अपने ही भविष्य की त्रासदी को नजरअंदाज करना है।

हिंसा का मानस

बिहार के अररिया जिले में गुरुवार को मामूली कहासुनी के बाद सत्तू विक्रेता द्वारा चाकू से हमला कर एक वाहन चालक की हत्या कर देने और इसके उपरांत आक्रोशित भीड़ द्वारा आरोपी को पीट-पीटकर मार डालने की घटना ने न केवल कानून-व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर हिंसक होती प्रवृत्ति को भी फिर से उजागर किया है। आखिर क्या वजह है कि किसी मामूली बात पर व्यक्ति को जान से मार देने वालों के हाथ जरा भी नहीं कांपते और न ही उनके चेहरे पर कानून का कोई खौफ नजर आता है! अगर कोई अपराध करता है, तो उसे सजा देने के लिए कानून और न्यायिक प्रक्रिया मौजूद है, भीड़ को यह अधिकार किसने दिया है कि वह सरेआम किसी को पीट-पीटकर मार डाले। इसे अराजकता नहीं तो और क्या कहा जाएगा? इस तरह की घटनाओं से पता चलता है कि हमारे सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण किस स्तर पर पहुंच गया है।

देश भर में इस तरह की खबरें अक्सर आती रहती हैं कि किसी ने मामूली बात पर दूसरे व्यक्ति की हत्या कर दी। ऐसी घटनाओं पर गंभीरता से गौर किया जाए, तो यह बात निकलकर सामने आती है कि जिस विवाद पर किसी बड़े अपराध को अंजाम दिया गया, उसे धैर्यपूर्वक बातचीत से आसानी से सुलझाया जा सकता था। पुलिस के मुताबिक, अररिया की घटना के पीछे भी विवाद सिर्फ इतना था कि एक व्यक्ति ने अपना वाहन सत्तू बेचने वाले के ठेले के सामने खड़ा कर दिया था। इसी बात को लेकर दोनों के बीच कहासुनी हुई और सत्तू विक्रेता ने वाहन चालक की हत्या कर उसका सिर काटकर अलग कर दिया। सवाल है कि घटना के दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने पहले बीच-बचाव क्यों नहीं किया और जब हत्या कर दी गई, तो वही भीड़ हिंसक कैसे हो गई? इसकी एक वजह सुरक्षा एजंसियों का लापरवाह रवैया भी है, जिस कारण समाज के एक वर्ग में कानून का कोई भय नहीं है। इस बात पर गौर किए जाने की जरूरत है कि किसी व्यक्ति के भीतर हिंसा और नफरत का भाव इतना गहरा होने का कारण क्या है और उसके स्रोत क्या हैं।

भारत के दिव्य पथ प्रदर्शक

आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती है। उनका जीवन नैतिक साहस, आत्म चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है।

नरेंद्र मोदी

आज ग्यारह अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक, और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उनके दो सौंवे जयंती वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है।

महान समाज सुधारक महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्मचिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। महात्मा फुले को केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ, लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वे कहते भी थे- 'हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।' साफ है कि बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही।

महात्मा फुले के जीवन में शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं। उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बताया।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी बहुत प्रेरित करता है। पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए शोध और नवाचार को बहुत प्राथमिकता दी है। एक ऐसी प्रणाली बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और नवाचार के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत अपने युवाओं को देश की प्रगति में आधार स्तंभ बना रहा है।

अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में

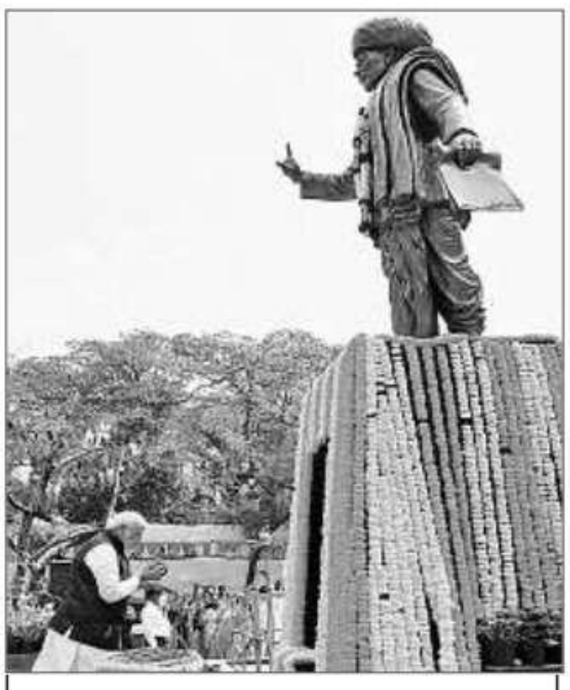

म हात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ, लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वे कहते भी थे- 'हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।'

लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए।

महात्मा फुले ने कहा था, 'जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिलत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिलत नाही'। यानी जब तक समाज में सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना। यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज में मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है।

उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लगातार लोगों के बीच रह कर काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा, लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी। एक गंभीर पक्षाघात के बाद भी उन्होंने अपना काम और संघर्ष जारी रखा। उनका शरीर कमजोर हुआ, लेकिन समाज के प्रति उनका समर्पण कभी नहीं डगमगाया। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं।

महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वे स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। वर्ष 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वे स्वयं भी बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया।

भारतभूमि बार-बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। सदियों से हमारे देश में समाज सुधार की आवाज उन्हीं लोगों से उठी है, जिन्होंने पीड़ा को भाग्य नहीं माना, बल्कि उसे खत्म करने के प्रयासों में जुटे रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे।

मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके दो सौवें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपना कर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा ओर यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़ कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले दो सौ साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं।)

मासूम संवेदनाएं

लवी मिश्रा

जब भी हम छोटे बच्चों को देखते हैं तो कहते हैं कि जीवन के सबसे खूबसूरत पल बचपन के होते हैं। कोई चिंता नहीं होती। जब जी चाहा खाया, जब जी चाहा सोए और अपने मन की चीज चाहने की जिद की। सामान्य परिस्थितियों में वह चाहत अक्सर पूरी भी हो जाती है। पर जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारा अल्हड़पन धीरे-धीरे गायब होने लगता है। जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो उसकी इच्छाएं मात्र प्राकृतिक आवश्यकताओं तक सीमित होती हैं। इसके बाद धीरे-धीरे उसकी मनोरंजन की आवश्यकता प्रकट होती है, पर यह अनिवार्य नहीं कि उसे किसी खास तरह के खिलौनों की आवश्यकता हो। उसके लिए मिट्टी भी खिलौना हो सकती है। वह जो कुछ अपने आसपास देखता है, उसे ही जिज्ञासावश छूता है, महसूस करता है और अपना मनोरंजन करता है।

बालपन की जो सबसे आकर्षक प्रवृत्ति है बच्चों की बेफिक्री, उनका मस्तानापन। ये बेफिक्री जीवन में हमेशा ही एक बार फिर से प्रत्येक व्यक्ति के भीतर बच्चा बन जाने की इच्छा बनाए रखने के लिए मजबूर कर देती है। शायद इसीलिए सुदर्शन फाकिर ने लिखा है कि 'ये दौलत भी ले लो... ये शोहरत भी ले लो, भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी... मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन..!' दरअसल, बचपन ऐसा होता है कि उसे फिर से पाने के लिए एक बार सब कुछ लुटा देने को जी चाहता है।

एक बच्चे की सबसे अद्भुत शक्ति होती है उसके भीतर बसने वाला असीम विश्वास। ऐसा विश्वास जो उसे कभी उदास नहीं होने देता। अगर वह एक पल रोता है, तो दूसरे ही पल फिर हंसकर अपने खेल में लग जाता है। बच्चा या तो हंसता है या रोता है, उदास नहीं होता। उसे मानो कोई चिंता नहीं होती कुछ खोने की। यों भी, वह क्या खोएगा? उसके पास जिस समय जो होता है, उसे ही वह अपना सर्वस्व मान लेता है।

हम कभी ध्यान से किसी छोटे बच्चे को खेलते हुए देखें, तो पाएंगे कि अगर वह किसी एक खिलौने से खेल रहा है और उसे कोई दूसरा खिलौना मिल जाता है कहीं से, तो वह पहले वाला खिलौना छोड़कर दूसरे से खेलने में लग जाता है। वह यह बिल्कुल नहीं सोचता कि पहले वाले खिलौने को जाकर कहीं छिपा दूं या ताले में बंद कर दूं और उसके बाद दूसरे से खेलूं। वह सहज ही पहले को छोड़ता है और दूसरे से अपनी जिज्ञासा शांत करने में लग जाता है। यानी वह पूरी तरह से वर्तमान में जीता है। न तो वह पहले वाले खिलौने को याद करता है और न ही यह सोचता है कि अब उसे अगला कौन-सा खिलौना मिलने वाला है। जब उसे किसी चीज की जरूरत होती है, तो सब कुछ छोड़कर रोना शुरू कर देता है। उसके पूरा होते ही रोना भूलकर फिर खेलने लगता है। उसे इस बात का भी दुख नहीं होता कि उसे रोना पड़ा। उसके पास अहंकार नहीं होता, जिसे रोने से या किसी से गुहार लगाने में चोट महसूस हो।

इसके विपरीत, अगर हम अपनी बात करें तो हमारी स्थिति बिल्कुल इसके उलट है। हम अपने दिन का ज्यादातर हिस्सा फिक्र करने और उदास रहने में बिता देते हैं। हम या तो अतीत के दुखों में डूबे रहते हैं या भविष्य की चिंता में। सूरज की रोशनी हम पर उतना प्रकाश नहीं डाल पाती, जितना बीत चुकी रात या आने वाली रात का अंधेरा हमें खुद में डुबोए रखता है। इस चिंता के पीछे वास्तव में हमारा अपना अहंकार होता है, जो हमें सब कुछ का नियंता मानने और अपने नियंत्रण में रखने को प्रेरित करता है। हम न केवल अपने जीवन को नियंत्रित करना चाहते हैं, बल्कि उससे भी आगे बढ़कर अपने परिवार के लोगों, दोस्तों, पड़ोसियों पर भी अपना नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं। गौर से विश्लेषण करने पर ये पता चलेगा कि जीवन में रहने वाला अधिकतर तनाव हमें अपनी जीवनरूपी गाड़ी को नियंत्रित करने से नहीं मिलता, बल्कि सबकी गाड़ी के रिमोट कंट्रोल को हासिल करने की कोशिश में लगे रहने से मिलता है।

हम मुट्ठी बांधकर आते हैं इस संसार में और हाथ पसारकर चले जाते हैं। वास्तव में प्रकृति , जीवन की शुरुआत और अंत के बीच एक यात्रा की मंजिल शुरू से ही तय कर देती है। मतलब हम बंधकर आते हैं और हमें मुक्त होकर जाना है।

जीवन वास्तव में बंधन से मुक्ति की यात्रा है। जिस तरह एक छोटा बच्चा अपने माता-पिता पर अपने आप से ज्यादा विश्वास करता है और किसी भी तरह की चिंता से मुक्त रहता है, ठीक वैसे ही मनुष्य को भी अपने विवेक पर विश्वास रखते हुए कर्म करना चाहिए। प्रकृति हमें उन्हीं संसाधनों से विराजती है, जिसकी हम पात्रता रखते हैं। इसलिए हमारे सारे कर्म और हमारी सारी ऊर्जा अपनी पात्रता को बढ़ाने और बनाए रखने में लगनी चाहिए। जिस तरह एक ही माता-पिता की हर संतान अपने जीवन में अलग-अलग मंजिलें तय करती हैं, ठीक उसी तरह हर मनुष्य को प्रकृति ने जीवन दिया है और उसे आकार देने वाले संसाधन भी। सबकी अपनी यात्रा है और जीवन के स्थूल लक्ष्य भी भिन्न हैं। मगर प्रकारांतर से मंजिल सबकी एक है। हमें सब पाना है, खेलना है, सीखना है और उसे किसी और के लिए छोड़ते जाना है। समेटने में अपनी ऊर्जा नहीं गंवानी चाहिए, क्योंकि तब बहुत से खिलौने अछूते रह जाएंगे और हम तमाम नई सीखों से वंचित रह जाएंगे।

दुनिया मेरे आगे

ह म या तो अतीत के दुखों में डूबे रहते हैं या भविष्य की चिंता में। सूरज की रोशनी हम पर उतना प्रकाश नहीं डाल पाती, जितना रात का अंधेरा हमें खुद में डुबोए रखता है। इस चिंता के पीछे वास्तव में हमारा अपना अहंकार होता है, जो हमें सब कुछ का नियंता मानने और अपने नियंत्रण में रखने को प्रेरित करता है।

निष्पक्षता का तकाजा

पिछले कुछ वर्षों से देश की विपक्षी पार्टियां यह आरोप लगाती रही हैं कि निर्वाचन आयोग निष्पक्ष नहीं है और सरकार के दबाव में काम करता है। कई बड़े नेता इस आरोप को दोहराते रहे हैं और इसे चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश कर चुके हैं। अब यह बहस इतनी बढ़ चुकी है कि चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर कई तरफ से सवाल उठने लगे हैं। इसी बीच, पश्चिम बंगाल चुनाव से ठीक पहले चुनाव आयोग ने सोशल मीडिया मंच पर तृणमूल कांग्रेस का नाम लेकर एक सख्त संदेश जारी किया। इसमें कहा गया कि इस बार चुनाव भय, हिंसा, धमकी, प्रलोभन और गड़बड़ी से मुक्त होंगे। यह पहली बार है जब चुनाव आयोग ने किसी एक पार्टी का नाम लेकर इस तरह की टिप्पणी की है। एक स्वतंत्र संस्था से ऐसी अपेक्षा नहीं की जाती। उसे पूरी तरह निष्पक्ष रह कर काम करना चाहिए। ऐसे में चुनाव आयोग को आत्ममंथन करने की जरूरत है। इस तरह के बयान उसकी साख को कमजोर करते हैं, जिसका सीधा असर लोकतंत्र की जड़ों पर पड़ सकता है। आयोग का काम राजनीतिक टिप्पणी करना नहीं, बल्कि निष्पक्षता से चुनाव कराना है।

– मोहम्मद नैयर आजम, सीतामढ़ी

राहत की राह

ईरान और इजराइल-अमेरिका के बीच युद्ध से भारी तबाही हुई है। अरबों रुपए का नुकसान हुआ। बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो गई और बहुत सारे घायल हुए। इतनी तबाही के बाद राहत की बात यह है कि अमेरिका ने युद्धविराम पर सहमति जताई। सवाल है कि इस युद्ध का क्या नतीजा निकला? दुनिया भर में ऊर्जा संकट पैदा हुआ। ईरान, इजराइल और अमेरिका को करोड़ों का नुकसान हुआ है। ईरान को अधिक नुकसान उठाना पड़ा है। उसे उबरने में समय लगेगा। हालांकि पूरी दुनिया ने युद्धविराम का स्वागत किया है और शांति की अपील की है। मगर सवाल है कि कुछ बड़े देश बीच-बचाव करते और संवाद से समाधान निकालते, तो शायद इतनी तबाही न मचती। इस युद्ध के कारण कई देश प्रभावित हुए हैं। आयात से लेकर रोजगार तक पर असर पड़ा। कई देशों में ऊर्जा का संकट पैदा हो गया। हालांकि युद्धविराम विश्व में शांति का संदेश देगा। प्रभावित देशों की जनता राहत की सांस लेगी।

– योगेश जोशी, बड़वाह

नया अध्याय

बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद विदेश मंत्री खलीलुर रहमान की भारत यात्रा का मुख्य उद्देश्य दोनों देशों के संबंधों को फिर से मजबूत करना और द्विपक्षीय सहयोग भी बढ़ाना है। रहमान ने भारतीय विदेश मंत्री के साथ बैठकें कीं। रक्षा और ऊर्जा सहयोग पर भी चर्चा हुई। साथ ही पिछले दिनों भारत और बांग्लादेश के बीच उत्पन्न हुए गतिरोध जैसे सीमा विवाद जल, संसाधनों के बंटवारे और अन्य विवादित मुद्दों को दूर करने का प्रयास किया। उम्मीद की जानी चाहिए कि धार्मिक उन्माद बांग्लादेश से पूरी तरह समाप्त होगा और अल्पसंख्यक समुदाय को अपनी सभ्यता-संस्कृति को बनाए रखने के साथ धार्मिक आजादी तथा प्रगति के समान अवसर मिलेंगे। रहमान की यात्रा से भारत-बांग्लादेश के बीच परस्पर विश्वास बढ़ेगा और सहयोग के नए आयाम खुलेंगे। भविष्य में दोनों देश प्रगति के रास्ते पर एक साथ बढ़ सकेंगे। इससे पूरे क्षेत्र की स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

– वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

तबाही का हासिल

'संवाद के बजाय' (संपादकीय, 3 अप्रैल) विचारोत्तेजक है। एक ओर मानव सभ्यता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में प्रगति कर रही है, वहीं दूसरी ओर यही मानव अपनी सीमाओं से निकल कर अहंकार और प्रभुत्व की भूख में निर्दोष लोगों की जिंदगियां निगल रहा है। ऐसे युद्ध में हार हमेशा आम नागरिकों की होती है। युद्ध का सबसे क्रूर सत्य यह है कि इसमें अकेला सैनिक नहीं, पहले इंसान मरता है। बच्चे, महिलाएं, बूढ़े और वे सभी लोग जो किसी भी निर्णय प्रक्रिया में शामिल नहीं होते, वे मरते हैं और बुरी तरह प्रभावित होते हैं। अरबों की संपत्ति के साथ पीढ़ियों का भविष्य कुछ ही दिनों में राख हो जाता है। यह केवल महाविनाश नहीं, पूरी मानवता की सामूहिक हत्या है। आज आवश्यकता मिसाइलों की नहीं, विवेक और संवाद की है। संवाद से ही रास्ते निकलते हैं।

– इशरत अली कादरी, भोपाल

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया के बाद चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल को लेकर आंकड़ा देते हुए कहा कि राज्य में मतदाता सूची से बाहर किए जाने के बाद विचाराधीन 60, 06, 675 नामों में से 27,16,393 नाम हटा दिए हैं। सबसे ज्यादा मतदाता नादिया जिले से हटाए गए हैं। हटाए गए 27,16,393 नामों में केवल दो मामलों में सुनवाई हुई और सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद फरक्का से कांग्रेस उम्मीवार मोताब शेख और पूर्व विधायक मोत्तकिल आलम का नाम सूची में जोड़ा गया।

केरल में चुनाव आयोग के पत्र पर भाजपा की मुहर का मुद्दा गर्म ही था कि चुनाव आयोग अपने 'एक्स' के खाते से तृणमूल कांग्रेस को 'दो टूक' सुना जाता है। बंगाल में पक्ष-विपक्ष का राजनीतिक संघर्ष चाहे कितना भी विषाक्त हो, आयोग की जिम्मेदारी बनती है कि वह देश की जनता के प्रति निष्पक्ष दिखे। संविधान में चुनाव आयोग की जिम्मेदारी जनता व जनतंत्र को लेकर तय की गई है। लेकिन पिछले लंबे समय से चुनाव आयोग हर मंच, हर संवाद व हर गतिविधि से सत्ताधारी दल के सहयोगी के रूप में नजर आने लगता है। पिछले चुनावों में देखा गया था कि चुनाव आयोग पर विपक्ष का कोई आरोप लगते ही सत्ताधारी दल के नेता चुनाव आयोग को पाक-साफ बताने के लिए प्रेस कांफ्रेंस करने आ जाते थे। बंगाल में मतदान की तारीखें तय हैं और 27 लाख लोग इस बार वोट देने से वंचित होंगे। भारी अनियमितताओं के बीच देश के नागरिकों को साबित करना पड़ रहा है कि वे योग्य मतदाता हैं। चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर लगातार उठ रहे सवालों पर अपने सवाल उठाता बेबाक बोल।

बेबाक बोल

'दो टूक'

मुकेश भारद्वाज

चुनाव आयोग की तृणमूल कांग्रेस को दो टूक
पश्चिम बंगाल में इस बार चुनावः
भय रहित, हिंसा रहित, प्रलोभन रहित, छापा रहित, बूथ एवं सोर्स जामिंग रहित होकर ही रहेंगे।

'एक्स' पर यह पोस्ट चुनाव आयोग की है। चुनाव आयोग भारत की एक संवैधानिक संस्था है। इसका बुनियादी काम भारत में निष्पक्ष चुनाव करवाना है। इस पोस्ट की भाषा देखिए। क्या इसमें कहीं से भी निष्पक्षता दिख रही है? ऐसा लग रहा है कि बंगाल विधानसभा चुनाव में मुख्य विपक्षी दल ने सत्ताधारी दल को लक्षित करते हुए यह पोस्ट लिखी है। इस पोस्ट के साथ मुख्य चुनाव आयुक्त की अपने दो अन्य सहयोगियों के साथ हंसती हुई तस्वीर भी है। जैसे बंगाल में सार्वजनिक जगहों पर भाजपा के नेता अपनी तस्वीर के साथ तृणमूल कांग्रेस को चुनौती देते हुए पोस्टर लगा रहे हैं, चुनाव आयोग की यह पोस्ट उन पोस्टरों से अलग नहीं दिख रही है। अभी कुछ दिनों पहले केरल में चुनाव आयोग का एक पत्र भाजपा की मुहर के साथ प्रसारित हुआ तो उसे चुनाव आयोग ने गलती बताया था। इस गलती के लिए चुनाव आयोग के एक अधिकारी को निलंबित भी किया गया था।

केरल में अगर चुनाव आयोग के पत्र पर भाजपा की मुहर गलती थी तो 'एक्स' पर चुनाव आयोग की इस पोस्ट को कैसे देखा जाए? सभी जानते हैं कि बंगाल में भाजपा मुख्य विपक्षी पार्टी है। बंगाल में भाजपा तृणमूल पर ऐसे ही आरोप, ऐसी ही भाषा में लगाती है जो चुनाव आयोग की पोस्ट में है। किसी को भी पहली नजर में गलतफहमी हो सकती है कि बंगाल भाजपा की किसी पोस्ट को चुनाव आयोग ने गलती से नकल कर अपने खाते पर चिपका दिया है। हालांकि यह 'दो टूक' शब्द तो चुनाव आयोग का दस्तखतशुदा तकिया कलाम हो चुका है।

वहीं, बंगाल के सत्तारूढ़ दल के नेता चुनाव आयोग पर कोई और 'दो टूक' बोलने का आरोप लगा रहे हैं। डेरेक ओ ब्रायन का आरोप है कि चुनाव संबंधी बैठक में मुख्य चुनाव आयुक्त ने तृणमूल कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल की बातें नहीं सुनीं और सात मिनट की बातचीत के बाद उन्हें कहा-'गेट लास्ट'। वैसे यह 'गेट लास्ट' जैसा दो टूक चुनाव आयोग विभिन्न भावार्थों के साथ बार-बार कह रहा है। बिहार में भी पहले उसने आधार जैसे दस्तावेज को खारिज करते हुए वहां के मतदाताओं से कहा था कि दफा हो जाओ। बिहार में जब तक विपक्ष अदालत नहीं पहुंचा था, तब तक मतदाताओं के प्रति आयोग की भाषा दफा हो जाओ वाली ही थी। उत्तर प्रदेश और बंगाल से जब बूथ स्तरीय अफसरों की खुदकुशी की खबरें आने लगीं तो इस संवेदनशील मुद्दे पर चुनाव आयोग ने 'दो टूक' कहने की भी कोशिश नहीं की, सीधे अपने मुंह और कान बंद कर लिए।

बूथ स्तरीय अफसरों की पीड़ा जनसंचार माध्यमों में न जाने कितनी बार और कितनी तरह से दर्ज की गई। बूथ स्तरीय अफसरों के लिए सबसे बड़ी समस्या समय की कमी थी। लोकतंत्र के इतने बड़े अभियान को आनन-फानन में निपटाने की क्या मजबूरी हो सकती है? जबकि बाद में आपको तारीखें बढ़ानी ही पड़ी थीं। लेकिन विशेष गहन पुनरीक्षण की शुरुआत में समय-सीमा के तनाव को लेकर बूथ स्तरीय अफसरों को जितनी परेशानियां हुईं उसका जिम्मेदार कौन होगा।

जनता की छोड़िए, विपक्ष के नेताओं की छोड़िए, आरोप है कि बंगाल के संदर्भ में तो आइएएस अधिकारी तक को मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ बागी तेवर अपनाने पड़ गए। मीडिया में आई रपटों के मुताबिक उत्तर प्रदेश सरकार में प्रमुख सचिव रैंक के अधिकारी अनुराग यादव बतौर चुनाव पर्यवेक्षक आयोग की बैठक में शामिल हुए थे। आरोप है कि मुख्य चुनाव आयुक्त की भाषा पर आइएस अधिकारी ने कहा-आप हमारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं कर सकते। नतीजतन अनुराग यादव को पर्यवेक्षक के पद से हटा दिया गया।

बिहार में जब एसआइआर की प्रक्रिया शुरू की जा रही थी तब आरोप लगाए गए थे कि अभी तो यह झांकी है, बंगाल बाकी है। यानी बंगाल चुनाव में आयोग मतदाता सूची को लेकर और कठोर होगा। उस समय के लगे यह आरोप सही साबित हो रहे हैं, जब मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के बाद पश्चिम बंगाल में लगभग 91 लाख मतदाताओं के नाम हटा दिए गए हैं। ये हटाए गए मतदाता राज्य के कुल मतदाताओं के लगभग 12 फीसद हैं।

राजनीतिक रूप से संवेदनशील राज्य के मतदताओं पर इस तरह से अव्यावहारिक सख्ती कर चुनाव आयोग कौन सा 'दो टूक' संदेश देना चाहता है? कुछ वर्षों पहले तक चुनावों में बूथ लूट और हिंसा की चिंता होती थी। लेकिन अब हर तरफ विलोपित मतदाताओं की चिंता है। भारत में चुनाव हमेशा से लोकतंत्र का उत्सव रहा है। गरीब-अमीर-स्त्री-पुरुष-उम्रदराज-दिव्यांग सभी नीली स्याही के साथ एक नागरिक के रूप में समानुभूति का अहसास करते हैं। मतदान के दिन देश में किसी भी तरह का भेदभाव मिटता सा दिखता है। कुछ समय के लिए ही सही, उम्मीद बंधती है कि इस देश के भाग्यविधाता हम भारत के नागरिक ही हैं।

लोकतंत्र के उत्सव की तारीख तय है, और बंगाल के 27 लाख लोग इसमें भागीदारी नहीं कर पाएंगे। इसकी वजह यह है कि नई मतदाता सूची बनाने की प्रक्रिया समय से पूरी नहीं हो पाई और लाखों लोगों की पात्रता अधर में लटकी है। यह बात किसी से छुपी नहीं है कि देश का आम नागरिक कैसे विभिन्न तरह के भ्रष्टाचार से जूझते हुए देश का नागरिक बने रहने की जिम्मेदारी निभाता है। अभी तो हाल यह है कि अस्सी करोड़ जनसंख्या अपने जीवनयापन के लिए सरकार से मुफ्त राशन पर निर्भर है। पिछले दो दशकों में रोजी-रोटी की समस्या ने इतना विकराल रूप धारण किया है कि हर तरफ पलायन की स्थिति है।

चाहे देश के अंदर एक राज्य से दूसरे राज्य में पलायन हो, या बाहर के देशों में पलायन। चाहे कोविड महामारी का दौर हो या एलपीजी सिलेंडर की कमी, आर्थिक रूप से मजबूत राज्यों के रेलवे स्टेशनों पर उत्तर-प्रदेश और बिहार लौटने वाले प्रवासियों की भीड़ देखिए। जिस देश की जनता की हालत यह है कि सिलेंडर की कमी से उसे अपने गांव लौटना पड़ रहा है, वहां संवैधानिक संस्था उसकी मुश्किलों को दरकिनार करते हुए उससे 'दो टूक' संवाद करेगी तो लोकतंत्र के प्रति आस्था कैसे बचेगी। कुपोषण से इकहरा हुआ शरीर, बदन पर मामूली कपड़े के बाद भी मतदाता के रूप में जब वो अपनी ऊंगली पर नीला निशान दिशान दिखाता है तो लोकतंत्र पोषित और पल्लवित होता है। बुनियादी सुविधाओं से भी महरूम जनता से आप शून्य गलती वाले दस्तावेजों की दरकार रखते हैं।

संविधान उम्मीद करता है कि उसकी संवैधानिक संस्थाओं का देश के नागरिकों के साथ भरोसे का रिश्ता हो। आम आदमी को पूरा भरोसा हो कि इस संस्था के अधिकारी हमारे अभिभावक की तरह काम करेंगे। चुनाव आयोग पर लंबे समय से विपक्ष को लेकर सौतेला व्यवहार करने के आरोप लग रहे हैं। आयोग से अपील है, कृपया अपनी 'दो टूक' छोड़ कर जनता को पूरा समय देकर संवेदनशीलता से संवाद करे।

राघव की आस

राघव चड्ढा का आम आदमी पार्टी में तो अब कोई भविष्य दिख नहीं रहा। लिहाजा कुछ तो सोच ही रहे होंगे। वैसे फिलहाल उन्हें ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है। राज्यसभा में उनका कार्यकाल अभी दो साल बचा है। संसद के पिछले बजट सत्र के दौरान उनकी भाजपा से निकटता साफ नजर आ रही थी। इसलिए तय है कि वे अपना सियासी भविष्य भाजपा में ही तलाशना चाहेंगे।

भाजपा उनका इस्तेमाल अरविंद केजरीवाल के खिलाफ करेगी, इसमें कोई संदेह नहीं। पर अंजाम उनका स्वाति मालीवाल जैसा ही होना है। स्वाति मालीवाल की तरह उनका अपना कोई जनाधार है नहीं। वे तो केजरीवाल की बदौलत पार्टी में अहमियत पाते गए। राघव चड्ढा तो यही चाहेंगे कि 2028 में भाजपा उन्हें राज्यसभा भेज दे। पर सवाल यह है कि भाजपा उन पर इस तरह की दरियादिली क्यों दिखाएगी? हां, 2029 में उन्हें दिल्ली या पंजाब से लोकसभा टिकट देने पर जरूर विचार कर सकती है। पंजाब में तो खैर वे जाना चाहेंगे भी नहीं। भाजपा इतनी दरियादिली जरूर कर सकती है कि उनकी पार्टी की मनाही के बावजूद राज्यसभा में उन्हें बोलने का अवसर दिला दे। वैसे भी राघव चड्ढा के संसद में दिए भाषण, जिस तरह सोशल मीडिया पर वायरल हो जाते थे, उससे यह भी संकेत था कि केंद्रीय सत्ता उनके बोले पर मेहरबान है, और वे जो भी बोल रहे हैं, उससे सत्ता पक्ष को कोई परेशानी नहीं है।

खाने पर निशाना

इस बार पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में खान-पान का मुद्दा भी मुखर रहा। सियासत से ज्यादा फोकस सभी दलों का खान-पान, संस्कृति, पहनावा और भाषा पर नजर आया। खान-पान का मुद्दा तो पश्चिम बंगाल से केरल तक एक समान दिखा। बंगाल में ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा जीत गई तो यहां के लोगों को मांस-मछली नहीं खाने देगी। जवाब में शुभेंदु अधिकारी समेत दूसरे भाजपा नेता मांस-मछली की दुकानों पर जाकर लोगों को समझाने लगे कि ममता अफवाह फैला रही हैं। हाथों में मछली की टोकरियां भी थाम ली। यहां तक कि चैत्र नवरात्र में भी भाजपा के कई नेता हाथ में मछली लिए प्रचार करते दिखे। मछली का मुद्दा केरल में भी था। एक चुनावी सभा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी को मछली भेंट की। विपक्ष ने भाजपा को खान-पान के अपने विमर्श में उलझा दिया और कुल मिलाकर भाजपा कदम पीछे करती ही दिखी।

राजपाट

तंबाकू-युक्त माननीय

देश की संसद तंबाकू मुक्त जगह है। आम जनता जब मुख्यद्वार से संसद परिसर तक आती है, तो बाहर जमा कराए गए बड़ी संख्या में ऐसे तंबाकू उत्पाद आसानी से देखे जा सकते हैं। लेकिन संसद परिसर के अंदर तक ये उत्पाद पहुंच रहे हैं और एक-दूसरे को माननीय गुपचुप तरीके से खाते-खिलाते भी नजर आ रहे हैं। ई-सिगरेट के बाद ताजा तस्वीर हाल के दिनों में सदन के अंदर नजर आई है। जब एक सुरक्षाकर्मी से इस मामले में बात की गई तो उसने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि माननीय अपने साथ जो बैग लेकर आते हैं, उसकी भवन के अंदर आने तक कोई जांच नहीं होती, इसलिए यह संभव है कि कोई भी माननीय आसानी ये तंबाकू उत्पाद सदन में लेकर आ सकता है।

आंबेडकर-आभा

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने ऐलान किया है कि प्रदेश में भीमराव आंबेडकर की प्रतिमाओं पर छतरियां लगाई जाएंगी। प्रतिमा अगर किसी पार्क या दूसरे सार्वजनिक स्थान पर होगी तो सरकार उस जगह की चारदीवारी भी करवाएगी। हर कोई समझ रहा है कि योगी की नजर अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में दलित वोट बैंक पर लगी है। दो दशक पहले तक आंबेडकर केवल बसपा के महापुरुष थे। लेकिन कांशीराम के निधन के बाद दलित वोटों में बिखराव शुरू हुआ तो दूसरे दलों का आंबेडकर मोह भी उमड़ने लगा। अरविंद केजरीवाल ने तो मुख्यमंत्री बनते ही सरकारी दफ्तरों में आंबेडकर की तस्वीर लगवा दी थी। बहरहाल, योगी ने आजम खान के एक पुराने बयान को बहाना बनाकर सपा पर हमला भी बोल दिया और कहा कि उनका 'पीडीए' प्रेम दिखावा है। आजम खान ने कहा था कि आंबेडकर की प्रतिमा लगाकर भू माफिया जमीन कब्जाता है। योगी पर भी दलित चिंतक ही पलटवार कर रहे हैं कि उनके राज में आंबेडकर की प्रतिमाएं तोड़ी जा रही हैं और दलितों पर अत्याचार बढ़े हैं। उधर सपा ने भी ऐलान किया है कि वह जगह-जगह 14 अप्रैल को आंबेडकर जयंती मनाएगी। योगी पर पलटवार करते हुए अखिलेश यादव ने तो संसद में दिए अमित शाह के एक बयान की याद दिला दी। अमित शाह ने दिसंबर 2023 में संसद में आंबेडकर के नाम लेने को फैशन करार दिया था तो भाजपा उस पर बुरी तरह से घिर गई थी।

प्रधान के फैसलों ने किया परेशान

धर्मेंद्र प्रधान का कद भाजपा और केंद्र सरकार दोनों में ही तेजी से बढ़ा है। तभी तो उनके भाजपा अध्यक्ष चुने जाने की अटकलों ने भी जोर मारा था। पर प्रधान के हाल के दो फैसलों से उनकी पार्टी के लिए मुश्किलें ही पैदा हुईं। पिछले कई महीनों से तो वे यूजीसी की नई नियमावली को लेकर विवादों में घिरे हैं। भाजपा का सबसे कट्टर समर्थक अगड़ा वर्ग प्रधान के मंत्रालय की बनाई इस नियमावली के कारण खासा नाराज है। सुप्रीम कोर्ट ने उस पर रोक न लगाई होती तो भाजपा को देशभर में इस समय विरोध-प्रदर्शन और आंदोलनों का सामना करना पड़ रहा होता। यह विवाद अभी थमा भी नहीं था कि केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा फार्मूले की बात उठा दी। इससे चुनाव वाले पांच राज्यों में विपक्ष ने इसे भाजपा के खिलाफ मुद्दा बनाया। वैसे भी ये सारे राज्य भाषायी अस्मिता को लेकर कुछ ज्यादा ही संवेदनशील हैं। विपक्ष ने विमर्श बनाने की कोशिश की कि भाजपा गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी थोपना चाहती है। प्रधान ने सफाई भी दी कि किसी भी राज्य पर हिंदी थोपी नहीं जाएगी, लेकिन अभी तो किसी राज्य में भाजपा को इससे फायदा होने वाला नहीं।

संकलन : मृणाल वल्लरी

बेबाक कलम

चार अप्रैल के अंक में मुकेश भारद्वाज का 'शरारती साहित्य (कार)' पढ़कर बहुत संतोष हुआ। किसी ने तो बेबाकी के साथ लिखने की कोशिश की। ऐसा लिखने का साहस वही कर सकता है जिसे 'कछु ना चाहिए'। कटु सत्य है कि यही मानसिकता नजर आ रही है, 'मेरा पति सुंदर मैं सुंदरी, बाकी दुनिया बंदर बंदरी', या 'मेरा लिखा यथार्थ, तुम्हारा लिखा शरारत'। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत लेखिका की आपने खूब खबर ली है। उनके पति शराब तो पीते थे, लेकिन वह कहती हैं कि 'मेरे पति उस तरह के शराबी नहीं थे'। मतलब शराबी भी तरह-तरह के होते हैं! इन दिनों साहित्य की दुनिया में जो कुछ चल रहा है, उसे लेखक ने एक तरह से उधेड़ कर रख दिया है। जिन्हें अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है, वे स्त्री-शोषण को देखकर भी चुप रह जाती हैं, इसी प्रत्याशा में कि कल को उन्हें भी अकादेमी सम्मान मिल सकता है, और अंततः मिल ही गया।

-गिरीश पंकज।

पुरस्कार का प्रारब्ध

यथार्थ की धारा से कल्पना की रूपांबरा तक हिंदी साहित्य की यात्रा के पड़ाव निराले हैं। प्रसंगित संदर्भ के अकादमी आईने में पुरुषवादी और सामंतवादी संस्कारों का जिस रूप में स्याह प्रतिबिंब परिलक्षित हो रहा है, वह पुरस्कार के प्रारब्ध पर सवालिया निशान खड़ा कर रहा है। साहित्यकार यदि लाल, भगवा या गुलाबी रंग में रंग जाएंगे तो भावी पीढ़ी के नवोदित साहित्यकार शायद अपने ज्ञान कुंज में वैसे 'रंगरेज' की भूमिका में आ नहीं सकेंगे जो देहवाद, दरबारवाद या पितृसत्ता के चढ़े रंग को छुड़ा सकेंगे। पुरस्कार प्रदान करने की अलौकिक शक्ति भले किसी अकादमी को प्रदत्त हो, लेकिन असली पुरस्कार दाता तो संवेदनशील पाठक हैं, जिसने पन्नों को पलटने में अपना बौद्धिक नीर क्षीर विवेचन किया है। काश, लेखिका का ममत्व उन संघर्षरत नारी जगत के प्रतीकों के लिए होता, जिसने स्त्री सशक्तीकरण की स्थापना में दुर्भिक्ष पलों को सहते-झेलते हुए अपलक मशाल अपने हाथों में थामे रखी है। उम्मीद की जानी चाहिए कि तथाकथित साहित्य की शरारत भविष्य में टूटते तारों में रोशनी भरने की भूमिका अदा कर सकेगी। विडंबना है कि 'चंद्रकांता संतति' जैसी असंख्य साहित्यिक रचनाएं आज भी आर्त्तवानी में निहार रही हैं, अकादेमी की निष्पक्ष चिंतन तरंग की ओर, जो भेदभाव की क्षत-विक्षत देह पर लिपट जाए चंदन बनकर, और पीयूष धार से तृप्त करे कलम की सृजन शैली को।

-अशोक कुमार, पटना, बिहार।

आपके पत्र

वर्तमान की विसंगतियां

वर्तमान काल में जो सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियां हैं, वे पुराने दौर की विसंगतियों से बिल्कुल अलग हैं। साहित्यिक रचनाएं कहीं-न-कहीं समाज एवं राजनीतिक परिक्षेत्र की घटनाओं से प्रभावित होती जरूर हैं और होनी भी चाहिए। मगर साहित्य का काम सुधारात्मक होना चाहिए, जिससे लोक व राजनीतिक जीवन के क्षरण को रोका जा सके। उसका स्तर इस तरह ऊंचा उठे कि साहित्य का योगदान अविस्मरणीय रहे। लेकिन लोभ, लालच के फेर में साहित्य जगत में राजनीति की भांति बयानबाजी से सुधार की दिशा में कदम नहीं बढ़ाए जा सकते हैं। मौजूदा दौर में हर प्रकार के रिश्तों एवं संबंधों में जो विश्वास का संकट खड़ा हुआ है, इस पर साहित्य जगत को काम करने की जरूरत है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी का दौर रूढ़ियों से मुक्ति का दौर था। साहित्य की विभिन्न विधाओं ने काफी हद तक उसे तोड़ कर प्रगतिशीलता लाने में मदद की है। लेकिन विश्वास का संकट आधुनिकता, प्रगतिशीलता को गलत अर्थों में लेने के कारण उत्पन्न हुआ है। लिहाजा स्वार्थ से परे हटकर साहित्य जगत काम करे।

-मुकेश कुमार मनन, पटना।

अदब की दीवार

अदबी जमात की नायाब मुसन्निफ की इनामी तड़प की तार्किक तस्वीर उभारता मजमून है 'शरारती साहित्य (कार)'। 'बेबाक बोल' की हर कड़ी को संजीदगी से पढ़ना और रद्द-ए-अमल के शौक ने ही मुझे कुछ कहने का हौसला दिया है, वरना जमात-ए-अदीब की शरारतों पर जुबान हिले, मेरी इतनी कुव्वत कहां? बेशक 'चंद्रकांता' से 'जीते जी...' तक को पढ़ने और नुक्ताचीनी करने का हक हर हिंदुस्तानी का है। ये अलग बात है कि अदब की दुनिया के नामचीन लोगों का एहतराम करते इदारों के ख्यालात अलग हैं। लिहाजा अलमारी में दबी किताबों से निकाली गई एक किताब को काबिल-ए-इनाम बताना हैरान नहीं करता। हैरानी का पैमाना तब छलक उठता है, जब इनाम पाने वाले की जुबान अदब की दीवार तोड़ जाती है। आम तौर से अदब की छांव में शाइस्ता और सुकून के बेशुमार पौधे लहलहाते हैं। जब जज्बातों के तूफान से अंगारों की बरसात हो तो अदब के फूलों का मुरझाना लाजिम है। जब शरारत का इस्तेमाल शरारत के लिए होगा तो इलजाम शरारत के ही लगेंगे न!

-एमके मिश्रा, रांची, झारखंड।

'पार्षद पति'

महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा जैसी असंख्य लेखिकाओं ने साहित्य के माध्यम से नारी की पीड़ा को उजागर किया, नारी के अस्तित्व की लड़ाई लड़ी और नारी को सशक्त बनाया। साहित्य समाज का आईना होता है और ऐसी लेखिकाओं की कालजयी रचनाएं आज भी पितृसत्तात्मक समाज को आईना दिखा रही हैं। साहित्य के जरिए नारी सशक्तीकरण की यह मुहिम किसी साहित्यकार के प्रमाणपत्र की मोहताज नहीं है। यह प्रकरण सिखाता है कि मात्र नारी होने से आप या आपका साहित्य नारीवादी नहीं हो जाता। यह उस छद्म महिला आरक्षण की तरह है, जिसमें महिला पार्षद की जगह 'पार्षद पति' राज करते हैं। प्रतिगामी सोच वाली लेखिका को पुरस्कार मिलना चयन प्रक्रिया पर सवाल उठाता है।

-बृजेश माथुर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

सरोकारी लेख

'बेबाक बोल' में जिस स्पष्टवादिता के साथ साहित्य के सरोकार का साथ दिया गया, उसके लिए मुकेश भारद्वाज को धन्यवाद। उम्मीद है कि आप अपनी कलम की यह निष्पक्ष धार बरकरार रखेंगे। बेबाक बोल हर गलत पर सवाल उठाता है।

-अंकुर सिंह, गाजियाबाद।

विशेष पन्ना कैसा लगा

इस विशेष पन्ने पर आपके ढेरों पत्र हमें लगातार मिलते हैं। हर बार मुमकिन नहीं कि सारे पत्रों का हम इस्तेमाल कर पाएं। पर यह तो तय है कि आपके पत्रों से आपकी पसंद और विषयों के चुनाव में हमें मदद मिलती है। इस बार का यह विशेष पन्ना आपको कैसा लगा? आप अपनी राय भेज सकते हैं। हमारी ई-मेल आइडी है :
vishesh.jansatta@expressindia.com